अध्याय 16

अन्य स्वास्थ्य संस्थान

16.1 अखिल भारतीय भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास संस्थान (एआईआईपीएमआर), मुंबई

प्रस्तावना

संयुक्त राष्ट्र संगठन के तकनीकी विशेषज्ञता और जनशक्ति समर्थन के साथ पायलट प्रोजेक्ट के रूप में वर्ष 1955 में स्थापित अखिल भारतीय भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास संस्थान की स्थापना की गई, जो वर्ष 1959 से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आया।

भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास के क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का यह सर्वोच्च संस्थान गहन तथा स्थायी लोकोमोटर विकारों से ग्रस्त रोगियों को व्यापक पुनर्वास सेवाएं प्रदान कराने हेतु अपनी वचनबद्धता हेतु सुप्रसिद्ध है।

इसके साथ संस्थान द्वारा भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास व संबद्ध पुनर्वास क्षेत्रों में अधिकतम स्नातकोत्तर स्तरीय विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। यह संस्थान विकलांगता पुनर्वास से संबंधित अनुसंधान कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल है और इसे अनुसंधान संस्थान के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा मान्यता प्रदान की गई है।

उद्देश्य

प्रत्येक लोकोमोटर विकार ग्रस्त रोगी को समाज में उसके लिए समान अधिकार तथा अधिकारों की सुरक्षाओं एवं पूर्ण भागदारी का एहसास कराना।

सुविधाएँ

यह संस्थान भारत में सर्वश्रेष्ठ सुसज्जित पुनर्वास केंद्रों में से एक है। यह उन विभागों के साथ विकलांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) के लिए व्यापक पुनर्वास सेवाएं प्रदान करता है, जिनमें शारीरिक चिकित्सा और पुनर्वास, रेडियोलॉजी, पैथोलॉजी, एनेस्थिसियोलॉजी, फिजियोथेरेपी, व्यावसायिक चिकित्सा, प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक, स्पीच थेरेपी, चिकित्सा सामाजिक कार्य, व्यावसायिक मार्गदर्शन, ई–लाईब्रेरी वाला, शैक्षणिक अनुभाग, व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रशासनिक और हिंदी विभाग शामिल हैं।

16.1.2 वार्षिक आँकड़ें (जनवरी, 2018–मार्च, 2019)

1.	पीडब्ल्यूडी की संख्या (मूल्यांकन और हस्तक्षेप)	ओपीडी	फि.थै.	ओ.थै.	रेडियोलाजी	पैथोलाजी	भाषण
		44289	22448	14881	एक्स–रे किए गए मरीजों की संख्या – 6764 कुल एक्स–रे की संख्या – 7441 किए एक यूएस की संख्या – 1700	प्रतिदिन परीक्षण की औसतन संख्या–84 किए गए परीक्षणों की संख्या – 28292	2300
2.	जारी किए गए प्रमाण–पत्रों की संख्या	अयोग्य प्रमाण–पत्र		ड्राइविंग प्रमाण–पत्र		रेलवे प्रमाण–पत्र	अन्य प्रमाण–पत्र
		521		889		1062	158
3.	पूरी की गई सर्जरियों की संख्या (मुख्य एवं छोटी)	मुख्य		छोटी		छोटी ओटी प्रक्रिया	
		687		3023		1488	

4.	वितरित किए गए ऐड एवं उपकरणों की संख्या	ऑथोसेस		प्रोसथेसेस	हैंड स्पिलिंट्स	
		3168		832	600	
5.	क्लिनिक	पी एवं ओ क्लिनिक	सीपी क्लिनिक	डायबिटिक फूट क्लिनिक	केस कांफ्रेंस	ओबेसिटि क्लिनिक
		695	436	38	35	**75**
6.	वीटीडब्ल्यू विभाग	प्रशिक्षण और रोजगार के लिए सहायता प्राप्त पीडब्ल्यूडी की संख्या		स्थिर ऐड और बैठने के उपकरणों का निर्माण		
		28		63		
7.	एमएसडब्ल्यू विभाग	वित्तीय सहायता और एंबुलेंस ऐड दी गई पीडब्ल्यूडी की संख्या		सहकर्मी परामर्श और अन्य प्रशिक्षण कार्यकलाप आयोजित किए गए		
		170		1627		

16.1.3 क्षमता का संवर्धन

क. प्रशासन

शासनादेश के अनुसार ई–गवर्नेंस गतिविधियाँ

- स्वास्थ्य सूचना पोर्टल कियोस्क की स्थापना
- ई –कार्यालय का आंशिक कार्यान्वयन

ख. भौतिक चिकित्सा और पुनर्वास विभाग

नए उपकरण और संबंधित सेवाएँ / क्लिनिक को आरंभ किया जाना

- रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन मशीन।
- सी–आर्म संगत टेबल।
- शारीरिक संरचना विश्लेषक
- 7 बिस्तर और मुहैया कराकर वार्ड का विस्तार।

ग. फिजियोथैरेपी विभाग

विभाग में शुरु की गई नई सेवाएं:

- कार्यात्मक विद्युत उत्तेजना का उपयोग करके स्ट्रोक वाले व्यक्तियों का शारीरिक पुनर्वास।
- जरा–चिकित्सा पुनर्वास के लिए सेमी–रिकंबेंट इलिप्टिकल साइकल।
- ईएमजी बायो–फीडबैक यूनिट के साथ एडवांस कॉम्बिनेशन थैरेपी की स्थापना।

घ. प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक विभाग

रोगी परिचर्या सेवाओं और उपकरणों के निर्माण में निम्नलिखित उपकरणों को शामिल करके सुधार किया गया:

- सॉकेट राउटर मशीनों के लिए हैड और सामान की खरीद।
- एकीकृत पिरामिड के साथ कपलिंग प्रकार के सॉकेट एडेप्टर सहित ट्रांस–टिबियल प्रोसथेसिस किट, टोरिसन तथा टेलीस्कोपिक पाइलोन।
- ट्रांस – रेडियल मायोइलेक्ट्रिक प्रोस्थेसिस।

ङ. व्यावसायिक चिकित्सा विभाग

- ड्राइविंग सिम्युलेटर का उपयोग कर ड्राइविंग के आकलन में सुधार। ड्राइविंग सिम्युलेटर में सड़क परीक्षण के फायदे हैं। यह उन विकलांग ड्राइवरों का आकलन करता है, जो सड़क परिवहन प्राधिकरण द्वारा संदर्भित होते है।
- प्रेशर मैपिंग सिस्टम – यह सिस्टम दबाव के क्षेत्रों को समझने में रोगियों को सक्षम बनाता है, क्योंकि सिस्टम द्वारा दी गई एक दृश्य प्रतिक्रिया है।
- त्वचा के स्वास्थ्य में सुधार, मूत्राशय को खाली करने, लोच को कम करने, अनुबंध में शामिल होने और हड्डियों के खनिज घनत्व में सुधार के लिए व्हीलचेयर को खड़ा करना। यह पर्यावरण के उपयोग की सुविधा प्रदान करता है और सार्वजनिक शौचालय के उपयोग के रूप में फ़ंक्शन में सुधार करता है, किराने की खरीदारी, खाना पकाने, रसोई और रेफ्रिजरेटर में वस्तुओं तक पहुंचने सहित भोजन की तैयारी तक पहुंच को बढ़ावा देता है।

च. स्पीच थैरेपी विभाग

➢ ईईजी के साथ आवाज के नैदानिक मूल्यांकन के लिए कम्प्यूटरीकृत प्रणाली की स्थापना।

छ. सेवा कालीन

क्षमता निर्माण गतिविधियों के एक हिस्से के रूप में, संस्थान के कर्मचारियों को विभिन्न प्रशासनिक और शैक्षणिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर भेजे जाने की स्थिति निम्ननुसार है:

चिकित्सा और परा-चिकित्सा के लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण	हिंदी प्रशिक्षण	प्रशासनिक प्रशिक्षण
01	01	08

16.1.4 अनुसंधान और विकास

- **व्यावसायिक चिकित्सा विभाग**

क) आमतौर पर मोटर मुक्त दृश्य अवधारणात्मक परीक्षण – 4 पर भारतीय बच्चों के विकास का विश्लेषण करने वाला एक वर्णनात्मक और तुलनात्मक अध्ययन।

ख) लिखावट घटकों की तुलना करने के लिए और विभिन्न स्कूलों के टोमेडिसिन से बच्चों में देखी गई सामान्य त्रुटियों की पहचान करने के लिए एक अध्ययन

ग) लंबी अवधि के मैनुअल व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं में कंधे के कामकाज और दर्द पर घर आधारित व्यावसायिक चिकित्सा की प्रभावशीलता।

घ) विकास में कमी वाले बच्चों में आमतौर पर विकासशील बच्चों की लिखावट टूल (ईसीटीएच) के साथ बच्चों की लिखावट के प्रदर्शन की तुलना।

ङ) स्कूल जाने वाले सेरेब्रल पाल्सी बच्चों में प्रशिक्षण दृष्टिकोण बनाम कार्यात्मक दृष्टिकोण के हस्तांतरण का उपयोग करके दृश्य अवधारणात्मक प्रशिक्षण के प्रभाव की तुलना करना।

च) 5–12 वर्ष की आयु के भारतीय बच्चों में बचपन के मोटापे के प्रबंधन में व्यावसायिक चिकित्सा हस्तक्षेप की प्रभावशीलता का पता लगाना।

छ) सेरेब्रल पाल्सी वाले बच्चों में मैनुअल इंटेंसिव थेरेपी (एचएएएमआईटी) और पारंपरिक ऑक्यूपेशनल थेरेपी द्वारा हाथ की प्रभावशीलता को निर्धारित करने के लिए एक तुलनात्मक अध्ययन।

- शारीरिक चिकित्सा और पुनर्वास अनुसंधान

पूर्ण	चल रही
यहां पोषाहार रिकेट्स में जेनु वरुम के सुधार में लेटरल एकल बार घुटने के ऑर्थोस का प्रभाव।	रीढ़ की हड्डी में चोटिल रोगी के यौन रोगों की जांच
इंट्रा–आर्टिकुलर स्टेरॉयड बनाम यूएसजी के प्रभाव का एक तुलनात्मक अध्ययन घुटने के पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस में दर्द और कार्यात्मक सुधार पर सैफेनस नर्व ब्लॉक को निर्देशित करता है।	यूएसए की क्षमता और सुरक्षा ने ओए घुटने के रोगियों में सफेनियस नर्व ब्लाक को निर्देशित किया।
अल्ट्रासोनोग्राफी का उपयोग करके रीढ़ की हड्डी की चोट के साथ स्वतंत्र मैनुअल व्हील चेयर उपयोगकर्ताओं में मेडियन नर्व संपीड़न का अध्ययन।	आवेग सिंड्रोम में ट्रिगर प्वांइट का वितरण।
	देखभाल और जीवन की गुणवत्ता देने के मामले में देखभाल करने वालों पर स्ट्रोक पुनर्वास का प्रभाव।
	मस्तिष्क पक्षाघात के साथ और बच्चों में स्पिरोमेट्री का उपयोग करके फेफड़े के कार्य का तुलनात्मक अध्ययन।
	सामान्य नीचे के अंगों की सर्जरी के प्रभाव का एक भावी अध्ययन और उसके बाद स्पास्टिक डायस्टेरिक सेरेब्रल पाल्सी के रोगियों में शिथिलता पर व्यायाम।
	स्पस्टी सेरेब्रल पाल्सी नॉन एंबुलेटरी मरीजों में हिप सबक्लेरेशन के प्रचलन का अध्ययन और कूल्हे के फ्लेक्सोर और मांसपेशियों के योजक समूह में स्पस्टीसिटी के साथ इसका संबंध।

- **फिजियाथैरेपी विभाग**

क्र.सं.	अनुसंधान क्षेत्र	अध्ययनों की संख्या
1.	वयस्कों और बुजुर्गों में अवलोकन और पारंपरिक अध्ययन	2 अध्ययन
2.	स्वायत्त समारोह, इलेक्ट्रोफिजियोलॉजिकल मूल्यांकन, ट्रंक मांसपेशियों की ताकत, प्रसार और ट्रंक संतुलन, संतुलन प्रदर्शन और चाल, गतिविधि सीमा और टाइप–II डायबिटिक मेलिट्स में भागीदारी प्रतिबंध का अवलोकन अध्ययन	6 अध्ययन
3.	सेरेब्रल पाल्सी वाले बच्चों में अवलोकन और पारंपरिक अध्ययन	7 अध्ययन
4.	मस्कुलोस्केलेटल स्थितियों में अवलोकन और पारंपरिक अध्ययन	6 अध्ययन
5.	स्ट्रोक पुनर्वास में अवलोकन और पारंपरिक अध्ययन	10 अध्ययन
6.	रीढ़ की हड्डी की चोट वाले व्यक्तियों के पुनर्वास का अवलोकन और पारंपरिक अध्ययन।	2 अध्ययन

- **प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक विभाग**

क्र.सं.	परियोजना का नाम
1.	मल्टी–फंक्शनल घुटने का ऑर्थोसिस
2.	डबल एक्शन स्प्रिंग लोडेड टखने के जोड़
3.	अंडरग्राउंड रोटेशन–प्लास्टी सर्जरी के मरीजों के लिए स्पोर्ट्स प्रोस्थेसिस
4.	ट्रांस–रेडियल ऑडियो कंट्रोल प्रोस्थेसिस
5.	अग्रसारण घुमाव सहायता के साथ प्रकोष्ठ रोटेशन ऑर्थोसिस
6.	किशोर एडजस्टेबल घुटने का ऑर्थोसिस
7.	संशोधित पेटेलर टेंडन बेयरिंग (पीटीबी) ऑर्थोसिस
8.	डायनामिक पाइलोन फुट असेंबली
9.	ऑर्थो–प्रोस्थेसिस गैट असिस्टेंस के साथ
10.	सीटीईवी वाले बच्चे के लिए क्रॉलिंग ब्रेस
11.	संपीड़न रिलीज और स्थिर सॉकेट और उसी के लिए कास्टिंग उपकरण
12.	बच्चों के लिए कुल सिटिंग संशोधित ऑर्थोसिस
13.	डायबिटिक फुट अल्सर के लिए ऑफलॉडिंग क्रॉ ऑर्थोसिस
14.	फ्लैक्सिबल स्कोलियोसिस ब्रेस
15.	ऊंचाई समायोज्य केएएफओ
16.	फुलप्लान्टेर फ्लेक्सियन में पैर के साथ किए गए रोटेशनप्लास्टी प्रोस्थेसिस के बीच तुलनात्मक विश्लेषण और पूर्ण प्लांटर फ्लेक्शन के 10 डिग्री शॉर्ट में पैर।
17.	कोहनी के विच्छेदन के साथ रोगी के लिए उपयुक्त प्रोस्थेसिस का डिज़ाइन
18	एकल–चरण भार सक्रिय प्रोस्टेटिक घुटने संयुक्त बनाम एकल एक्सिस प्रोस्थेटिक घुटने संयुक्त का उपयोग स्विंग चरण नियंत्रण के साथ ट्रांस–फेमोरल एम्प्यूट्स में गैट का तुलनात्मक अध्ययन
19.	वजन राहत एएफओ

क्र.सं.	परियोजना का नाम
20.	ऊंचाई और दबाव समायोजन के साथ कीफोटिक ब्रेस
21.	एजीएमसी का ऑर्थोटिक प्रबंधनः एक केस स्टडी
22.	स्पाइन के लिए एक्सटेशन कंट्रोल के साथ डायनामिक ब्रेस
23.	दोहरी एक्सिस हिप संयुक्तं
24.	बाहर लॉकिंग और अनुलॉकिंग कोहनी जोड़
25.	एडजस्टेबल क्रेनियल प्रोटेक्शन हेलमेट
26.	कम लागत बाल चिकित्सा प्रोस्टेटिक घुटने ज्वांइट
27.	रनिंग और वाकिंग के लिए इंटरचेंजेबल तोरण के साथ लो कॉस्ट एनर्जी रिटर्न ट्रांस–टिबिअल प्रोस्थेसिस
28.	वॉल्यूम एडजस्टेबल ट्रांस–टिबिअल प्रोस्थेसिस
29.	न्यू रिवर्स नॉक बेंडर स्प्लिट
30.	लाइटवेट प्रोस्थेटिक एल्बो जॉइंट विथ लॉक
31.	वजन सक्रिय हाइड्रोलिक प्रोस्थेटिक हिप ज्वाइंट
32.	इडियोपैथिक स्कोलियोसिस के लिए लियोन स्कोलियोसिस ब्रेस
33.	प्रोस्थेटिक शोल्डर जॉइंट का विकास
34.	संशोधित साइम के प्रोस्थेसिस
35.	संपीड़न रिलीज और स्थिर (सीआरएस) सॉकेट के लिए कास्टिंग फ्रेम
36.	टिबिअलीहिमेलिया से रोगी पीड़ित के लिए खेल प्रोस्थेसिस
37.	वाटरप्रूफ ट्रांस–टिबिअल प्रोस्थेसिस
38.	पीक प्लांटार के दबाव को कम करने और मधुमेह के रोगियों में गैट पैरामीटर में सुधार के लिए कस्टम मोल्डेड इनसोल की प्रभावकारिता पर एक अध्ययन

- **वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रकाशन तथा प्रस्तुतीकरण**

क्र. स.	विभाग	कर्मचारी दिशा-निर्देशित अनुसंधान				
		प्रस्तुत कागजात	प्रकाशित कागजात	निबंध पूरा किया गया	भाषणों को आमंत्रित किए गए	सम्मेलन/कार्यशाला/ सेमिनार जिनमें भाग लिया
1	मेडिकल क) पीएमआर ख) रेडियोलॉजी	 08 01	 03 01	01	 -- --	का.–11, डब्ल्यू/एस–01
2	फिजियोथैरेपी विभाग	09	02	06	02	का.–05, डब्ल्यू/एस–08
3	ओक्यूपेशनल थैरेपी	--	01	03	--	का.–01, डब्ल्यू/एस–01
4	प्रोस्थेटिक एंड ऑर्थोटिक	10	--	38	--	का.–04, डब्ल्यू/एस–02

- **संस्थान में आयोजित की गईं कान्फ्रेंस सीआरई कार्यशालाएं ।**

क्र.सं.	कार्यकलाप	अवधि
(i)	मायोइलेक्ट्रिक ट्रांस–रेडियल प्रोस्थेसिस के निर्माण और फिट होने पर सीआरई	3 – 4 फरवरी, 2018
(ii)	मधुमेह फूट के ऑर्थोटिक प्रबंधन में उन्नति	17– 18 मार्च, 2018
(iii)	पुनर्वास में सर्जिकल कार्यशाला	12 –17 नवंबर, 2018
(iv)	चालक पुनर्वास पर कार्यशाला	10 मार्च, 2018 और 29 सितंबर, 2018
(v)	न्यूरो–डेवलपमेंटल काइन्सियोलॉजी पर कार्यशाला	14 अक्टूबर, 2018
(vi)	पुनर्वास और यूरोडायनामिक अध्ययन में सुधारात्मक सर्जरी	17 जनवरी, 2019

16.1.5 सूचना का अधिकार अधिनियम का कार्यान्वयन। (आरटीआई)

संस्थान आवेदकों द्वारा मांगी गई जानकारी का जवाब दे रहा है। नामित केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी द्वारा (सीपीआईओ) समिति सदस्यों की सहायता से सूचना प्रदान की जाती है।

(क) प्राप्त हुए आरटीआई आवेदन– 23

(ख) आरटीआई आवेदन जिनका उत्तर दिया गया – 21

(ग) खारिज आरटीआई आवेदन – 01

(घ) लंबित आरटीआई आवेदन – 01

16.1.6 संस्थान में विकलांग व्यक्तियों का डेटा

	कर्मचारियों की संख्या	पीडब्ल्यूडी कर्मचारियों की संख्या	पीडब्ल्यूडी की प्रतिशतता
ग्रुप 'क'	50	02	4%
ग्रुप 'ख'	59	00	0%
ग्रुप 'ग'	166	08	4.82%
कुल	**275**	**10**	**3.64%**

वर्ष 2018–19 के दौरान किसी दिव्यांग व्यकित की नियुक्ति नहीं हुई

16.1.7 लिंग मुद्दे

भर्ती और शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के लिए चयन समिति में महिला सदस्य शामिल हैं। संस्थान द्वारा महिला कर्मचारियों को स्वीकृत सभी विशेष सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। एक वरिष्ठ महिला अधिकारी की अध्यक्षता में एक यौन उत्पीड़न समिति का गठन किया जाता है।

16.1.8 आगंतुक

- डॉ. बी.डी. अथानी, डीजीएचएस, नई दिल्ली ने दिनांक 24.02.2018 को दौरा किया।
- श्री अश्विनी कुमार चौबे, माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्यमंत्री ने दिनांक 05.07.2018 को दौरा किया।
- डॉ. एस. वेंकटेश, डीजीएचएस, ने दिनांक 06.07.2018 को दौरा किया

16.1.9 स्टाफ और छात्रों की अन्य गतिविधियाँ

हिंदी विभाग

- कर्मचारियों और छात्रों द्वारा सितंबर, 2018 में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।
- "सामर्थ्य" संस्थान का 7 वां इन–हाउस प्रकाशन हिंदी में 1 नवंबर, 2018 को जारी किया गया था।
- हिंदी शिक्षण योजना के तहत 20 छात्रों के बैच ने अलग–अलग परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

अन्य गतिविधियां

कर्मचारियों और छात्रों द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, सतर्कता जागरूकता सप्ताह, सांप्रदायिक सद्भाव सप्ताह, एकता दिवस, संविधान दिवस, विश्व भौतिक चिकित्सा दिवस, विश्व व्यावसायिक चिकित्सा दिवस, विश्व आत्मकेंद्रित दिवस और अंतर्राष्ट्रीय विकलांग व्यक्तिय के दिवस मनाए गए।

प्रोस्थेटिक और ऑर्थोटिक विभाग

पेनोरामा हेल्मेट

पेनोरामा स्पोर्ट्स प्रोस्थेसिस

पेनोरामा पेडियाट्रिक नी ज्वाइंट

पेनोरामा पेडियाट्रिक नी ज्वाइंट

फिजियोथैरेपी विभाग

अर्ध–लेटा हुआ अण्डाकार चक्रवाचक विद्युत उत्तेजना

16.2 अखिल भारतीय वाक् तथा श्रवण संस्थान (एआईआईएसएच), मैसूर

परिचय

अखिल भारतीय वाक् तथा श्रवण संस्थान (एआईआईएसएच) देश का एक प्रमुख उच्च शिक्षण संस्थान है, जो संचार और इसके विकारों से संबंधित है। इसे वर्ष 1965 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक स्वायत्त संगठन के रूप में प्रारंभ किया गया था। वर्तमान में, इस संस्थान द्वारा संप्रेषण विकारों से ग्रस्त व्यक्तियों क्लिनिकल सेवाएं प्रदान कराने तथा संप्रेषण की चुनौतियों के समाधान हेतु क्लिनिकल अनुसंधान तथा श्रवण तथा वाक् क्षेत्र में विभिन्न डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर, स्नातकोत्तर डिप्लोमा, डॉक्टरेट और पोस्टडॉक्टोरल कार्यक्रम आयोजित करता है।

संस्थान द्वारा 1 जनवरी 2018 से 31 मार्च, 2019 तक की गई प्रमुख गतिविधियाँ नीचे दी गई हैं:

सीखना और सिखाना

संस्थान ने अवधि के दौरान पोस्टडॉक्टरल से प्रमाणपत्र तक 16 दीर्घकालिक शैक्षणिक कार्यक्रमों की पेशकश की। बैचलर ऑफ स्पीच–लैंग्वेज पैथोलॉजी में प्रवेश, एम.एससी (ऑडियोलॉजी) और एम.एससी (स्पीच–लैंग्वेज पैथोलॉजी) कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर की प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से आयोजित किए गए थे। दीर्घकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अलावा, संस्थान ने 261 अल्पकालिक प्रशिक्षण अभिविन्यास कार्यक्रम और 35 कार्यशालाएं/सेमीनार आयोजित किए। इसके अलावा, जर्नल क्लब और नैदानिक सम्मेलन प्रस्तुतियों और छात्र संवर्धन और ज्ञान के विस्तार (सीक–ज्ञान) कार्यक्रम छात्रों के लिए आयोजित किए गए थे। इसके अलावा, प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा विभिन्न विषयों पर अतिथि व्याख्यान और विभागीय सहकर्मी मूल्यांकन जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। संस्थान के प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने संस्थान के अंदर और बाहर दोनों जगहों पर अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्रों पर कुल 134 आमंत्रित वार्ताएं कीं।

मौजूदा इंटरनेट ब्राउज़िंग केंद्र का विस्तार और उन्नत सुविधाओं के साथ उन्नत किया गया, जो इस अवधि के दौरान पूरे संस्थान के लिए एक सामान्य कंप्यूटर केंद्र के रूप में काम करता रहा।

अनुसंधान

संस्थान ने संचार और संबंधित विकारों पर विशेष जोर देकर संचार, विकारों के नियंत्रण और रोकथाम, मूल्यांकन और उपचार के मुद्दों के साथ–साथ वाक और श्रवण हानि के लिए नई तकनीकों के परीक्षण और शोधन पर विशेष रूप से प्रासंगिक अनुसंधान देकर अनुसंधान को बढ़ावा दिया। संचार और इसके विकारों के बारे में 98 वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं इस अवधि के दौरान संस्थान के विभिन्न विभागों में प्रगति कर रही थीं। कुल मिलाकर, 128 वैज्ञानिक पत्र विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए, 225 वैज्ञानिक प्रस्तुतियाँ अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों में की गई और 27 पुस्तकें/ पुस्तक अध्याय अवधि के दौरान संस्थान के शैक्षणिक समुदाय द्वारा लिखे गए।

क्लिनिकल परिचर्या

संचार विकारों के लिए नैदानिक मूल्यांकन देश और विदेश में ग्राहकों के लिए पेश किया गया था और इस अवधि के दौरान कुल 26865 व्यक्तियों ने सुविधा का लाभ उठाया। संचार, विकारों के लिए भाषण, भाषा और श्रवण विकार, मनोवैज्ञानिक और इसे ओटोहिनोलेरिनलॉजिकल विकारों के साथ पहचाने गए व्यक्तियों के लिए पुनर्वास सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान की गई।

क्लिनिकल सेवाएं	क्लाइंट की संख्या	थैरेपी सेशन/सर्जरी
वाक् तथा भाषा का मूल्यांकन	8457	29242
श्रवण जांच / श्रवण परीक्षण	20402- जांच की गई	15537- किए गए प्रशिक्षण
श्रवण उपकरण	8296- जांच की गई	829- श्रवण उपकरण बांटे गए

सार्वजनिक शिक्षा और आउटरीच सेवाएँ

संस्थान ने रिपोर्टिंग अवधि के दौरान संचार विकारों की प्रारंभिक पहचान और रोकथाम के लिए विभिन्न सार्वजनिक शिक्षा और आउटरीच गतिविधियों को पूरा किया। इनमें से प्रमुख नीचे दिए गए हैं:

क. किंग्स जॉर्ज मेडिकल अस्पताल, लखनऊ, जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज और अस्पताल भागलपुर और गुलबर्गा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, कलबुर्गी में 3 नवजात स्क्रीन केंद्र और 1 आउटरीच सेवा केंद्र खोलना।

ख. विभिन्न स्थानों पर 28 संचार विकार जांच शिविरों का आयोजन जिसमें 2000 व्यक्तियों का मूल्यांकन कियागया और चिकित्सीय सेवाएं प्रदान की गईं।

ग. औद्योगिक स्क्रीनिंग कार्यक्रम के एक भाग के रूप में श्रवण विकारों के लिए 304 कर्मचारियों का नैदानिक मूल्यांकन।

घ. मैसूर के 19 अस्पतालों /टीकाकरण केंद्रों, कर्नाटक के सात आउटरीच सेवा केंद्र और देश के विभिन्न हिस्सों में संस्थान के आठ नवजात स्क्रीनिंग केंद्र में 91177 बच्चों की नवजात और बाल चिकित्सा जांच।

ङ. कर्नाटक के सात एआईआईएसएच आउटरीच सेवा केंद्रों पर 2127 ग्राहकों के लिए वाक एवं श्रवण नैदानिक और चिकित्सीय सेवाएं।

च. विकलांगता के विभिन्न मुद्दों पर 148 सार्वजनिक व्याख्यान सार्वजनिक रूप से लाभान्वित 6171 व्यक्तियों के बीच जागरूकता पैदा की गई।

छ. संचार विकारों के लिए 86 स्कूलों के 5763 छात्रों की स्क्रीनिंग।

ज. संचार विकारों के लिए 185 बुजुर्गों की स्क्रीनिंग।

झ. 1897 सत्रों में 303 ग्राहकों के लिए टेली–डायग्नोस्टिक और पुनर्वास।

ञ. प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों, दोनों में मैनुअल संचार विकारों पर जन शिक्षा संबंधी ब्रोशर और पैम्फलेट की तैयारी और वितरण।

अन्य गतिविधियाँ और आयोजन

इस अवधि के दौरान अन्य गतिविधियों और कार्यक्रमों में 1 से 15 अप्रैल 2018 तक स्वच्छ भारत पखवाड़े, 27 अप्रैल 2018 को प्री–स्कूल ग्रेजुएशन डे, मई 2018 में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए एक महीने के समर कैंप का आयोजन शामिल है। 53 वां संस्थान वार्षिक दिवस 9 अगस्त 2018 को, वाणी, वाक और श्रवण विकार (डब्ल्यूएसपीडी–2018) के लिए भाषण प्रसंस्करण पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला, 8 और 9 सितंबर 2018 को अंतर वाक 2018 का एक उपग्रह कार्यक्रम, 15 सितंबर से 2 अक्तूबर, 2018 तक स्वच्छता ही सेवा कार्यकलाप, 26 से 30 नवंबर 2018 तक निःशुल्क श्रवण उपकरण मरम्मत शिविर, 17 दिसंबर 2018 को स्नातक दिवस, 26 दिसंबर 2018 को अंतर्राष्ट्रीय विकलांग व्यक्तिय दिवस, 4 से 6 मार्च 2019 तक विश्व श्रवण दिवस समारोह और 16 और 17 मार्च 2019 को वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम–एएचएसएच आवाज आयोजित किए गए।

16.3 अखिल भारतीय स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान (एआईआईएच और पीएच), कोलकाता

एआईआईएच एवं पीएच, कोलकाता की स्थापना 30 दिसंबर 1932 को की गई, जो जन स्वास्थ्य और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र मे अपने प्रकार का एक अग्रणी संस्थान है। एआईआईएच एवं पीएच के शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान का इसकी प्रयोगशालाओं जैसे शहरी स्वास्थ्य इकाई और प्रशिक्षण केंद्र, चेतला और ग्रामीण स्वास्थ्य इकाई और प्रशिक्षण केंद्र, सिंगूर के लिए अच्छा सहयोग है। संस्थान द्वारा हाल ही में अपनी 87वां स्थापना दिवस मनाया गया।

संस्थान द्वारा संचालित नियमित पाठ्यक्रम इस प्रकार हैं:

- **एमसीआई मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रमः** एमडी (सामुदायिक चिकित्सा), सार्वजनिक स्वास्थ्य में डिप्लोमा (डीपीएच), एमपीएच (महामारी विज्ञान)
- **गैर–एमसीआई पाठ्यक्रमः** अप्लाइड न्यूट्रिशन में एम.एससी, मास्टर इन वेटरनरी पब्लिक हेल्थ (एमवीपीएच), हेल्थ प्रमोशन एंड एजुकेशन में डिप्लोमा, डाइटेटिक्स (डिप–डाइट) में डिप्लोमा, हेल्थ स्टैटिस्टिक्स में डिप्लोमा (डीपीएच), पोस्ट ग्रेजुएट पब्लिक हेल्थ मैनेजमेंट में डिप्लोमा (पीजीडीपीएचएम)।

  नियमित पाठ्यक्रमों के अलावा, संस्थान सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में क्षमता विकास के लिए नियमित रूप से विभिन्न लघु पाठ्यक्रम / प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है। इस वर्ष नौ कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की पहल के भाग के रूप में, संस्थान द्वारा निम्नलिखित कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए गए हैं: मधुमेह शिक्षक; अवधिः 2 महीने, आहार सहायक; अवधिः 5 महीने, जनरल ड्यूटी असिस्टेंट; अवधिः 6 महीने, होम हेल्थ एड; अवधिः 5 महीने, सेनेटरी इंस्पेक्टरः अवधिः 10 महीने।

वर्ष के दौरान, 108 प्रशिक्षुओं को विभिन्न कौशल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत प्रशिक्षित किया गया है। इस वर्ष, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने के लिए 52 कार्यशालाएं / सेमिनार / जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में 155 शोध / लघु अध्ययन किए गए और वर्ष के दौरान विभिन्न पत्रिकाओं में 49 लेखों / पत्रों ने योगदान दिया। वर्ष के दौरान केरल, एमपी, उड़ीसा आदि में ईएमआर कर्तव्यों में 16 विशेषज्ञों ने भाग लिया।

नई पहल

- **नए पाठ्यक्रमों की शुरूआत**: तीन नए पाठ्यक्रम, अर्थात एमएससी–सार्वजनिक स्वास्थ्य (व्यावसायिक स्वास्थ्य), एम.एससी–पब्लिक हेल्थ (स्वास्थ्य संवर्धन) और एम.एससी–पब्लिक हेल्थ (मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य) में सत्र 2019–21 से शुरू होने जा रहा है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने इन पाठ्यक्रमों की शुरुआत के लिए अनुमति दी है और डब्ल्यूबीयूएचएस के साथ संबद्धता प्राप्त करने की प्रक्रिया चल रही है।
- **परिवार डेटा का डिजिटलीकरण**: आरएचयू और टीसी, सिंगूर में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को डिजिटलीकरण करने के लिए, आरएचयू और टीसी, सिंगूर के तहत सभी 64 गाँवों के परिवार के रिकॉर्ड को डिजिटल बनाने के लिए एक विशेष अभियान शुरू किया गया है, जो सेवा / निगरानी को सुविधाजनक बनाने के लिए पूरा किया गया है।
- **एईबीएएस का प्रारंभन**: आधार आधारित बायोमेट्रिक उपस्थिति प्रणाली को संस्थान में चालू किया गया है।
- **ई–ऑफिस**: एआईआईएच और पीएच, कोलकाता में ई–ऑफिस का कार्यान्वयन प्रगति पर है।
- **सौर ऊर्जा**: हमारे मुख्य परिसर, बीएन परिसर तथा यू.एच.यू. एंड टीसी, चेतला और मुख्य परिसर के छात्रावास में छत पर सोलर प्रोजेक्ट्स की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं तथा उपकरण प्राप्त हो गए है। उपकरण लगाने की प्रक्रिया प्रगति पर है।

अन्य उपलब्धियां

- 2018–19 के दौरान सार्वजनिक स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने के लिए संस्थान ने 26 जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया है।
- संस्थान ने सार्वजनिक स्वास्थ्य के विभिन्न मुद्दों पर महत्वपूर्ण निकायों को तकनीकी सहायता प्रदान की।
- संस्थान डब्ल्यूएचओ द्वारा टीकाकरण के कार्यक्रम की शुरूआत के बाद से पीले बुखार–स्थानिक क्षेत्रों के यात्रियों के लिए पीले बुखार के लिए टीकाकरण के एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। केंद्र में प्रति वर्ष औसतन 600 से 700 यात्रियों को टीका लगाया जाता है। हाल ही में भारत सरकार द्वारा निर्देशित ओपीवी को भी टीकाकरण योजना के तहत शामिल किया गया है।
- संस्थान अंतर्राष्ट्रीय दिशा–निर्देशों के अनुसार पेयजल क्षमता परीक्षण केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है।

16.4 केन्द्रीय कुष्ठ शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (सीएलटी और आरआई), चेंगलपट्टु, तमिलनाडु

वर्ष 1924 में स्थापित लेडी वेलिंगटन कुष्ठ सैनेटोरियम को भारत सरकार के एक शासी निकाय के तहत केंद्रीय कुष्ठ शिक्षण और अनुसंधान संस्थान (सीएलटी और आरआई), चेंगलपट्टु की स्थापना वर्ष 1955 में की गई। बाद में 1974 में, सीएलटी तथा आरटी को स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का एक अधीनस्थ कार्यालय बनाया गया, जिसका उद्देश्य कुष्ठ रोगियों के लिए नैदानिक सेवाएं, उपचार और रेफरल सेवाएं प्रदान कराना, कुष्ठ रोग नियंत्रण एवं उन्मूलन के लिए विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान सहित प्रशिक्षित जनशक्ति तैयार करना है।

संस्थान सीएचएस के जन स्वास्थ्य विशेषज्ञ उप–संवर्ग से संबंधित निदेशक के नेतृत्व में है। इसमें क्लिनिकल सेवाओं,

सर्जरी और फिजियोथेरेपी, पशु सदन के साथ अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशाला और महामारी विज्ञान और सांख्यिकी प्रभाग के लिए अलग–अलग विभाग हैं। संस्थान में इनडोर और आउटडोर दोनों तरह के रोगियों के लिए 124 बेड का अस्पताल है।

संस्थान के उद्देश्य हैं:

(क) कुष्ठ रोग और इसके प्रसार व जटिलताओं से संबंधित बुनियादी समस्याओं में अनुसंधान करने हेतु।

(ख) एनएलईपी को लागू करने के लिए आवश्यक जनशक्ति को प्रशिक्षित करना।

(ग) कुष्ठ रोग, जटिलता प्रबंधन और पुनर्निर्माण सर्जरी के निदान और उपचार के लिए विशेष सेवाएं प्रदान करना।

(घ) एनएलईपी की निगरानी और मूल्यांकन करना।

(ङ) देश में कुष्ठ रोग को बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करना।

2. एपीडेमियोलॉजी और सांख्यिकी प्रभाग

इस प्रभाग में तकनीकी, प्रशिक्षण, सांख्यिकीय और कंप्यूटर अनुभाग शामिल हैं। डिवीजन चिकित्सा और पैरामेडिकल स्वास्थ्य पेशेवरों को कुष्ठ / एनएलईपी में प्रशिक्षण प्रदान करने, एनएलईपी के संचालन अनुसंधान, निगरानी और मूल्यांकन, निगरानी गतिविधियों और कार्यक्रम और संस्थान के लिए आवश्यक सॉफ्टवेयर विकास का प्रशिक्षण देने में शामिल है।

2.1 प्रशिक्षण

संस्थान एनएलईपी से संबंधित प्रशिक्षण गतिविधियों को करने के लिए उत्कृष्ट बुनियादी ढाँचा है। संस्थान राज्य /जिला कुष्ठ अधिकारियों, चिकित्सा अधिकारियों, स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा छात्रों और अन्य पैरामेडिकल स्टाफ के प्रशिक्षण में सक्रिय रूप से शामिल है। जनवरी, 2018 से मार्च, 2019 तक प्रशिक्षण गतिविधियां:–

क्र.सं.	प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का नाम	बैच	प्रतिभागी
1.	राज्य/जिला कुष्ठ अधिकारी के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण/जिला कुष्ठ परामर्शदाता (5 दिन)	4	51
2.	चिकित्सा अधिकारियों के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण (3 दिन)	2	9
3.	कुष्ठ रे–कंस्ट्रक्टिव सर्जरी (5 दिन) में सर्जनों का प्रशिक्षण	1	5
4.	त्वचा विज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएट्स के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण (2 सप्ताह)	5	27
5.	सामुदायिक चिकित्सा में पोस्ट ग्रेजुएट्स के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण (3 दिन)	6	78
6.	गैर–चिकित्सा पर्यवेक्षक के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण (2 माह)	2	51
7.	स्वास्थ्य पर्यवेक्षक के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण (5 दिन)	1	19
8.	प्रयोगशाला तकनीशियनों के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण (5 दिन)	1	21
9.	अनिवार्य रोटरी आवासीय इंटर्नशिप (सीआरआरआई) प्रशिक्षण (5 दिन)	90	298
10.	एनिमल हाउस हैंडलिंग तकनीक (3 दिन)	1	3
11.	एक दिन का ओरिएंटेशन विजिट – सीएलटीआरआई/एनएलईपी		
	एमबीबीएस विद्यार्थी	11	563
	पैरा–मेडिकल विद्यार्थी	18	699

2.2 निगरानी और मूल्यांकन (एम एंड ई)

क. रूटीन एम एंड ई

सीएलटीआरआई आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्यों और पुद्दुचेरी और लक्षद्वीप में एनएलईपी गतिविधियों की निगरानी और मूल्यांकन में शामिल है। तमिलनाडु के सभी 32 जिलों में एम एंड ई गतिविधियां पूरी हो चुकी हैं। जिला और राज्य स्तर के कार्यक्रम अधिकारियों को फीडबैक दिया गयाा और रिपोर्ट केंद्रीय कुष्ठ प्रभाग के साथ साझा की गई। एम एंड ई के लिए जिन जिलों के दौरे किए गए उनकी संख्या निम्नानुसार है:

क्र.सं.	जिला/राज्य	समय-सीमा/ अवधि
1.	तिरुवेल्लूर, तमिलनाडु	26.02.2018 – 28.02.2018
2.	उडुप्पी, कर्नाटक	03.04.2018 - 06.04.2018
3.	श्रीकाकुलम, आंध्र प्रदेश	19.06.2018 - 22.06.2018
4.	रामनाथापुरम, तमिलनाडु	26.06.2018 - 29.06.2018
5.	सेलम, तमिलनाडु	30.07.2018 - 02.08.2018
6.	नेल्लोर, आंध्र प्रदेश	10.12.2018 - 14.12.2018

ख. कुष्ठ रोग जांच अभियान (एलसीडीसी) गतिविधियों की निगरानी

➢ सीएलटीआरआई के अधिकारियों ने विभिन्न राज्यों में एलसीडीसी की निगरानी के लिए लेवल I/II मॉनिटर के रूप में भाग लिया और रिपोर्ट सेंट्रल लेप्रोस्कॉपी डिवीजन को प्रस्तुत की। 2018–19 के दौरान महाराष्ट्र, चंडीगढ़, हरियाणा, कर्नाटक और दिल्ली राज्यों में एलसीडीसी गतिविधि पर नजर रखी गई।

ग. संयुक्त निगरानी मिशन (जेएमएम)

➢ संयुक्त निगरानी जांच और सलाहकार समूह (जेएमआईएजी) ने 21 से 25 जनवरी, 2019 तक तमिलनाडु में एनएलईपी गतिविधियों का मूल्यांकन किया।

2.3 क्षेत्र/आउटरीच गतिविधियाँ

सीएलटीआरआई रूटीन फील्ड वर्क, फील्ड ट्रायल और फील्ड ट्रेनिंग गतिविधियों और मेडिकल/स्किन/आरसीएस कैंप जैसी विशेष गतिविधियों को पूरा करने में सहयोगी हैं।

(क) तिरुकलुकुंद्रम, कांचीपुरम जिले और आसपास के शहरी और आदिवासी क्षेत्रों में बेसलाइन मूल्यांकन और गहन मामले का पता लगाने के सर्वेक्षण

(ख) हाउस होल्ड एंड नेबरहुड कॉन्टेक्ट सर्वे

(ग) हॉट स्पॉट सर्वेक्षण

(घ) केस होल्डिंग गतिविधियां/डिफॉल्टरों पर अनुवर्ती कार्रवाई

(ङ) ग्रेड 2 विकृति जांच

(च) आरसीएस के लिए पात्र व्यक्तियों की पहचान करना और सर्जरी के लिए जुटाना

(छ) फील्ड प्रशिक्षण गतिविधियाँ

(ज) विल्लुपुरम जिला, तमिलनाडु में मॉडल जिला परियोजना गतिविधियाँ

(झ) वकालत, संचार और सामाजिक लामबंदी

2.4 सीएमई / कार्यशालाओं का आयोजन ।

संस्थान ने कुष्ठ रोग और हाल ही में हुई उन्नति के विभिन्न विषयों से संबंधित सीएमई / कार्यशालाएं आयोजित कीं। इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने वाले अन्य हितधारकों को संकाय का समर्थन भी प्रदान किया गया।

(क) सीएमई कार्यक्रम – 4 (वर्ष के दौरान विभिन्न मेडिकल कॉलेजों में)।

(ख) "निकुष्ठ" पर कार्यशाला – मई 2018 के दौरान धर्मपुरी और कृष्णागिरि जिले के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और डेटा एंट्री ऑपरेटरों के लिए एनएलईपी के लिए ऑनलाइन रिपोर्टिंग प्रणाली।

2.5 डेटा प्रबंधन:

(क) तिरुकजुकुंड्रम क्षेत्र में घरेलू और पड़ोसी संपर्क सर्वेक्षण

(ख) तिरुकजुकुंड्रम क्षेत्र का बेसलाइन सर्वे

(ग) सीएलटीआरआई को डेटा भेजने वाले जिलों की मासिक प्रगति रिपोर्ट का विश्लेषण किया गया और फीडबैक रिपोर्टिंग सिस्टम विकसित किए गए।

3. नैदानिक प्रभाग

क्लिनिकल प्रभाग में बाहिरंग–रोगी विभाग, 124 बेड क्षमता वाले 8 अंतरंग–रोगी वार्ड, नर्सिंग अनुभाग और केंद्रीय रसोई सुविधाओं का प्रावधान शामिल है। संस्थान चैबीस घंटे स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं को प्रभावित रोगियों को निदान, उपचार और जटिलता प्रबंधन के रूप में प्रदान करता है।

बहिर्रोगी सेवाएं

क्र.सं.	ब्यौरे	कुल
1.	उपचारित मरीजों की कुल संख्या	9576
2.	नए कुष्ठ रोगी (पीबी 6 +एमबी 23)	29
3.	पुराने कुष्ठ रोगी	7872
4.	सरकारी कुष्ठ केंद्र/ब्लॉक	1230
5.	अन्य मामले / गैर–कुष्ठ मामले	709

अंतर्रोगी सेवांए

क्र.सं.	ब्यौरे	कुल
1.	प्रवेश	1035
2.	छुट्टी	1071
3.	मृत्यु	4

4. सर्जिकल डिवीजन

सर्जिकल डिवीजन में माइक्रो–सेल्युलर रबर (एमसीआर) शीट निर्माण इकाई के साथ वार्ड और ऑपरेशन थियेटर, एक्स–रे यूनिट, फिजियोथेरेपी और कृत्रिम अंग और फुटवियर सेक्शन शामिल हैं।

प्रदान की जाने वाली सेवाएं इस प्रकार हैं:

(क) अल्सर और अन्य जटिलता प्रबंधन

(ख) पुनर्निर्माण सर्जरी (आरसीएस)

(ग) व्यापक फिजियोथेरेपी सेवाएं

(घ) विकलांगता निवारण और चिकित्सा पुनर्वास (आर.सी.एच) गतिविधियाँ

(ङ) प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहायता

(च) राज्यों अनुरोध के अनुसार शिविर आधारित आरसीएस सर्जरी

सर्जरी और फिजियोथेरेपी सेवाओं का निष्पादन नीचे दिया गया है:

सर्जरी निष्पादन

क्र.सं.	विवरण	कुल
1.	छोटी सर्जरी	328
2.	बड़ी सर्जरी आरसीएस सहित	85

फिजियोथेरेपी सेवाएं

क्र.सं.	विवरण	कुल
1.	नए मामलों का मूल्यांकन	419
2.	अनुवर्ती मूल्यांकन	480
3.	प्री–ओप मूल्यांकन	27
4.	पोस्ट–ओप मूल्यांकन	45

4.1 माइक्रो–सेलुलर रबर (एमसीआर) और फुटवियर इकाई:

इस संस्थान में एमसीआर शीटों के निर्माण के लिए एक छोटी उत्पादन इकाई है, जो कुष्ठ प्रभावित रोगियों के लिए सुरक्षात्मक जूते प्रदान कराती है। एमसीआर उत्पादन का गुणवत्ता आश्वासन शुरू किया गया है। विभिन्न राज्य कुष्ठ सोसायटियों और गैर–सरकारी संगठनों को एमसीआर प्रदान करते हैं। संस्थान में कृत्रिम अंग और समर्पित फुटवियर इकाई द्वारा कुष्ठ प्रभावित रोगियों के लिए अनिवार्य वस्तुओं में पर्याप्त सुधार करने पर विभिन्न प्रकार के एमसीआर फुटवियर और ऑर्थोसिस का उत्पादन किया जाता है और मुफ्त दिए जाते हैं। वार्षिक उत्पादन और आपूर्ति निम्न प्रकार से है:

क्र.सं.	ब्यौरे	कुल
1.	एमसीआर शीट उत्पादन	1351
2.	सीएलटीआरआई फूटवियर सेक्शन द्वार प्रयुक्त	900
3.	अन्य सरकारी केंद्रों और एनजीओ को सप्लाई	451
4.	कुल एमसीआर फूट वियर (जोड़े में)	1150
5.	ऑर्थोसिस और प्रोसथेसिस उत्पादों की संख्या	5

5. प्रयोगशाला विभाग

सीएलटीआरआई में प्रयोगशाला विभाग में आधुनिक उपकरण बनाए गए हैं, जिसमें पीसीआर प्रवर्धन सहित आणविक जीव विज्ञान स्तर तक की मूलभूत सुविधाएं शामिल हैं। कुष्ठ रोग से संबंधित अनुसंधान गतिविधियों सहित अन्य नियमित जांच की जाती है तथा कुष्ठ रोग के अंतरंग / बहिरंग विभागों से नमूनों की जांच की जाती है। इन सुविधा केन्द्रों का उपयोग विभिन्न संस्थागत परियोजनाओं के साथ–साथ सहयोगात्मक और स्नातकोत्तर अनुसंधान परियोजनाओं में भी किया जा रहा हैं।

प्रयोगशाला प्रभाग द्वारा स्किन स्मीअर के लिए गुणवत्ता आश्वासन का आयोजन किया जाता है । यह प्रभाग एम्स, नई दिल्ली एवं सीएमसी वैल्लोर द्वारा क्रमशः हेमाटोलॉजी सैटोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी–बायोकैमिस्ट्री के लिए आयोजित किए जाने वाले बाहरी गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम में भी भाग लेता है। परिणाम सभी बायोकेमिकल पैरामीटरों में 90 प्रतिशत से अधिक की विशुद्धता दर्शाते हैं।

पशुओं पर किए जाने वाले प्रयोगों पर नियंत्रण और पर्यवेक्षण के प्रयोजन के लिए समिति (सीपीसीएसईए) के मानकों की अनुपालना करने वाले पशु गृह सुविधा केन्द्र भी उपलब्ध है; एम. लेप्रे के औषध व्यवहार्यता एवं सुग्राहिता परीक्षणों के लिए माउस फुट टीका; दिसम्बर, 2018 में पशु आचार नीति समिति का गठन किया गया था। हाल ही में पशु गृह की मरम्मत की गई थी तथा सीपीसीएसईए के सदस्य द्वारा इसका निरीक्षण किया गया था और टीका लगाने की फिर से शुरूआत की गई थी।

6. अनुसंधान क्रियाकलाप

क. संस्थागत नीति आचार समिति

आईसीएमईआर दिशानिर्देशों के अनुसार अक्तूबर, 2018 में आईईसी का पुनर्गठन किया गया था। समिति की पहली बैठक का आयोजन दिनांक 26.11.2018 को किया गया था तथा उसमें तीन अनुसंधान प्रस्तावों पर चर्चा की गई थी। आईईसी सदस्यों को इस संबंध में 12.12.2018 को आईसीएच–जीसीपी प्रशिक्षण दिया गया। समिति की दूसरी बैठक का आयोजन 29.01.2019 को किया गया जिसमें प्रस्तुत 6 प्रस्तावों में से दो प्रस्तावों को अनुमोदित किया गया था।

ख. वर्तमान में चल रहे अनुसंधान अध्ययन/ प्रोटोकॉल विकास।

(I) अंतरंग अनुसंधानः

(क) तमिलनाडु में नए और पुनः उपचार के मामलों में औषधि प्रतिरोधी कुष्ठ रोग की निगरानी का व्यवहार्यता अध्ययन।

(ख) तमिलनाडु के विभिन्न जिलों में कुष्ठ रोग के लिए स्लिट स्किन स्मिअर माइक्रोसकोपी का मूल्यांकन।

(ग) कुष्ठ रोग प्रभावित मामलों में ग्रेड–II विकलांगता के विकास का अनुमान लगाने वाला मॉडल।

(घ) तृतीयक परिचर्या कुष्ठ रोग अस्पताल में जाने वाले रोगियों का पूर्वव्यापी अध्ययन।

(ङ) खुली गोलियां उपलब्ध कराकर कुष्ठ रोगियों के बीच स्टेरॉइड्स की प्रति खरीद को रोकना– कार्यान्वयन अध्ययन।

(च) रियल टाइम पीसीआर का उपयोग करते हुए एम.लेप्रे व्यवहार्यता का मॉलिकुलर निर्धारण।

(छ) एम.लेप्रे में औषधि प्रतिरोधक क्षमता के लिए हाई रिज़ोल्यूशून मेल्ट कर्व विश्लेषण।

(ज) सीएलटीआरआई में प्लास्टर अल्सर से एटोबिक माइक्रोबायोटा और उनके प्रतिरोधी निर्धारकों की पद्धति।

(झ) कुष्ठ रोग फुट अल्सरों और विकलांगताओं के उपचार में प्रचालित फुटवियर और मॉड्यूलर फुटवियर का तुलनात्मक विश्लेषण।

(ञ) पिछले 2 वर्षों में सीएलटीआरआई में जारी किए गए विकलांगता प्रमाण पत्रों का विश्लेषण।

(ट) सीएलटीआरआई में घुटने से नीचे अंग विच्छेदन नमूनों में न्यूरोपेथिक एंकल के नमूनों संबंधी अध्ययन।

(ठ) सीएलटीआरआई में कुष्ठ रोग के लिए किए गए घुटने से नीचे अंगविच्छेदन मामलों में जीवन की गुणवत्ता का विश्लेषण।

(ड) कुष्ठरोग के लिए बोझ और जोखिम कारकों का मूल्यांकन करने के लिए जीआईएस मैपिंग।

(ढ) तमिलनाडु के वल्लीपुरम जिले में मॉडल जिला परियोजना कार्यकलाप।

(ii) सहयोगात्मक अध्ययन (प्रस्तावित):

(क) एम. लेप्रे का महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज, पुदुच्चेरी में इन विट्रो कल्टीवेशन।

(ख) महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज, पुदुच्चेरी में चूहों में एम. लेप्रे के साथ लगाए गए टीके पर तुलसी इशेशियल ऑयल एम. लेप्रे का प्रभाव।

(ग) तमिलनाडु के विभिन्न जिलों में एम. लेप्रोमाटोसिस के लिए मॉलिक्यूलर अनुसंधान।

(घ) डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन के सहयोग से कुष्ठरोग में पोषण पहलू और कार्यकलाप।

(ङ) राष्ट्रीय महामारी विज्ञान संस्थान (एनआईई), चैन्ने के साथ जिलों के लिए मॉनिटरिंग और मूल्यांकन टूल।

(च) बच्चों में दिव्यांगता की व्याप्तता– राष्ट्रीय महामारी विज्ञान संस्थान (एनआईई)

7. प्रशासन

वर्ष 2018–19 की अवधि के दौरान प्रशासन अनुभाग की उपलब्धियां:

(क) रेलवायर नेटवर्क के माध्यम से हाई स्पीड इंटरनेट कनेक्शन स्थापित किया गया है।

(ख) उचित पंजीकरण के पश्चात जीईएम अधिप्राप्ति प्रारम्भ की गई।

(ग) 6 वर्ष के अंतराल के पश्चात दिसम्बर, 2018 में कार्यालय परिषद की बैठक का आयोजन किया गया।

(घ) एमएसीपी के लिए पिछले 3 वर्षों से लम्बित 24 अधिकारियों के बैकलॉग का निपटारा किया गया।

(ङ) सिविल कार्य: 7 डॉक्टरों के क्वाटरों का उन्नयन किया गया, स्टॉफ कैंटीन, मरीज रसोई और वार्डों में मरीज शौचालयों की मरम्मत कराई गई, दिव्यांग व्यक्तियों के लिए अवरोध मुक्त पहुँच (पीडब्ल्यूडी), कर्ब स्टोन लगाना, पुराने क्वाटरों में फिर से स्टॉर्म वाटर ड्रेन्स सिस्टम लगाना, चिल्ड्रन पार्क का विकास, ओपन बैल की सुरक्षित कवरिंग।

(च) 2 अवमानना मामलों सहित लम्बित पड़े चार न्यायालय मामलों का निपटारा किया गया।

(छ) कुष्ठरोग उपचारित मरीजों के हेल्परों के लिए जेब खर्च में वृद्धि की गई।

(ज) अनुसूचित जनजाति (दिव्यांगजन) के लिए आरक्षित प्रयोगशाला सहायक के रिक्त पद को भरा गया।

(झ) बायोमैट्रिक उपस्थिति प्रणाली स्थापित की गई।

(ञ) 7वें केन्द्रीय वेतन आयोग के अनुसार भर्ती नियमों के मसौदे पर कार्रवाई की जा रही है।

(ट) सीएलटीआरआई में भर्ती प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए, विशेष रूप से रिक्त पदों को भरने के लिए भर्ती सैल की स्थापना की गई है।

(ठ) आरटीआई अधिनियम, 2005 के तहत मांगी गई सूचना का समय से निपटान किया गया।

(ड) सामान्य वित्तीय नियमावली के मानकों के अनुसार संविदात्मक स्टॉफ की नियुक्ति की गई।

(ढ) ऑपरेशन थियेटर के लिए नई ऑपरेटिंग लाइट।

(ण) एनएलईपी में चार प्रशिक्षण मॉड्यूलों का मुद्रण किया जा रहा है।

8. बजटीय आबंटन (2018–19)

योजनागत कार्यों के लिए 19.18 करोड़ रु. तथा पूंजीगत कार्यों के लिए 30 लाख रु. का बजट आबंटित किया गया।

9. अन्य गतिविधियां:

30 जनवरी से 13 फरवरी, 2019 तक बड़े पैमाने पर कुष्ठ रोग–रोधी दिवस और पखवाड़े का आयोजन किया गया। कुष्ठ रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए पखवाड़े के दौरान अनेकों परिवर्तनकारी कार्यकलापों का आयोजन किया गया।

(क) आम जनता में जागरूकता का सृजन करने के लिए चेंगलपुट्टू रेलवे स्टेशन पर सूचना, शिक्षा सम्प्रेषण (आईईसी) स्टाल लगाए गए।

(ख) स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए ड्राइंग/पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था शून्य भेदभाव और शून्य दिव्यांगता।

(ग) हाई स्कूल के छात्रों की सहायता से ग्रामीण क्षेत्र में जागरूकता रैली का आयोजन किया गया।

(घ) मेडिकल कॉलेज के स्नातक छात्रों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

(ङ) शून्य भेदभाव विषय के साथ लघु फिल्म प्रतियोगिता।

(च) सीएलटीआरआई में कुष्ठ रोग से प्रभावित व्यक्तियों के लिए खेलकूद क्रियाकलापों का आयोजन किया गया।

16.5 क्षेत्रीय कुष्ठ रोग प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आरएलटी एंड आरआई), रायपुर, छत्तीसगढ़

वर्ष 1979 में स्थापित किया गया क्षेत्रीय कुष्ठ रोग प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आरएलटीआरआई), रायपुर स्थापित किए गए उन 3 आरएलटीआरआई में से एक है जिनका उद्देश्य कुष्ठ रोग मामलों में विशेष परिचर्या उपलब्ध कराना, कुष्ठ रोग के क्षेत्र में अनुसंधान करना और समूचे देश में (मुख्य रूप से केन्द्रीय क्षेत्र से) तैनात किए गए वर्टिकल कुष्ठ रोग स्टॉफ को प्रशिक्षण देकर विशेष कार्मिक शक्ति का विकास करना है। वर्ष 2005 में सामान्य स्वास्थ्य प्रणाली में कुष्ठ रोग सेवाओं के एकीकरण के पश्चात् संस्थान कुष्ठ रोग के प्रबंधन में कठिन जटिल मामलों को सहायता और विशेष गुणवत्ता युक्त सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए रेफरल संस्थान की भूमिका में आ गया है। संस्थान ने विभिन्न स्वास्थ्य अधिकारियों अर्थात् क्षेत्रीय निवेशकों, राज्य कुष्ठरोग अधिकारियों, जिला कुष्ठ रोग अधिकारियों, ब्लॉक चिकित्सा अधिकारियों, परा–चिकित्सा कार्मिकों, प्रयोगशाला स्टॉफ, फिज़ियोथेरेपिस्ट और विभिन्न राज्यों के सामान्य स्वास्थ्य परिचर्या प्रणाली से अन्य श्रेणियों के स्टॉफ को प्रशिक्षण देना जारी रखा। संस्थान कुष्ठ रोग के क्षेत्र में ऑपरेशनल और आवश्यकता आधारित अनुसंधान कार्य भी करता है। एनएलईपी का सामान्य स्वास्थ्य परिचर्या प्रणाली में एकीकरण हो जाने के पश्चात् संस्थान द्वारा कुष्ठ रोग का राष्ट्र–वार मूल्यांकन किया गया है। संस्थान एमएलईसी, स्पर्श और एलसीडीसी आदि जैसे विशेष कुष्ठ रोग मामला पहचान अभियानों में सक्रिय रूप से शामिल रहा है। यह कुष्ठ रोग मुक्त राष्ट्र के लक्ष्यके प्रति प्रतिबद्ध है और नए मामलों में प्रति 10 लाख <1 ग्रेड–II दिव्यांगता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए कार्य कर रहा है।

संस्थान में ओपीडी, 50 बिस्तरों वाले अंतरंग वार्डों,एक प्रयोगशाला सहित एक अस्पताल है जहां स्किन स्मियर जांच द्वारा एम.लेप्रे की माइक्रोस्कोपी पुष्टि की जाती है और कुष्ठ रोग से संबंधित विकारों के लिए रिकन्सटूक्टिव सर्जरी करने के लिए एक ऑपरेशन थियेटर है जो 2 वर्ष से अधिक समय से बंद है तथा अब उसका पुनर्निर्माण/मरम्मत का काम किया जा रहा है। वर्तमान में संस्थान राज्य के विभिन्न जिलों में कैम्प मोड में आरसीएस शल्य चिकित्साएं कर रहा है। पीएएल को डीपीएमआर सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

संस्थान को छत्तीसगढ़ राज्य के लिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में नामित किया गया है और इसे राज्य में विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की मॉनीटरिंग करने की जिम्मेदारी दी गई है। अतः वर्तमान में संस्थान के पास आरएलटीआरआई, रायपुर की मौजूदा कार्मिक शक्ति के साथ आरएलटीआरआई और आरओएचएफ–डब्ल्यू (छत्तीसगढ़) की दोहरी जिम्मेदारी है। यह स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के केन्द्रीय कुष्ठ रोग प्रभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन है।

आरएलटीआरआई क्रियाकलाप

ओपीडी सेवाएं:	उपलब्धि
पहचान किए गए कुष्ठ रोग के नए मामले	620
पहचान किए गए नए मामलों में एमबी मामलों की संख्या	396
पहचान किए गए मामलों में पीबी मामलों की संख्या	224
पुराने मामलों की संख्या जिन्हें उपचार उपलब्ध कराया गया	3019
सामान्य रोगी	2733
ओपीडी में आए कुल रोगी	6362
आईपीडी सेवाएं:	**उपलब्धि**
आरसीएम और फिज़ियोथेरेपी के लिए दाखिल मरीजों की संख्या	134
अल्सर से पीड़ित दाखिल मरीजों की संख्या	79
ईएनएल रिएक्शन वाले दाखिल मरीजों की संख्या	138
वार्डों में दाखिल मरीजों की कुल संख्या	355
प्रयोगशाला सेवाएं:	**उपलब्धि**
की गई माइक्रोबायोलोजिकल जॉचों की संख्या	1982
की गई क्लिनिक पैथोलोजिकल जॉचों की संख्या	137
जैव–रसायनिक जॉचों की संख्या	338
मलेरिया स्लाइडों की क्रॉस जांच	455
की गई कुल जॉचों की संख्या	**2912**

आरसीएस सेवाएं:	उपलब्धि
की गई शल्य क्रियों की संख्या	11 कैम्पों में 111 (6 जिले)
टिप्पणी–पुनर्निर्माण/मरम्मत के लिए ऑपरेशन थियेटर के बंद होने के कारण संस्थान में कोई भी शल्य क्रिया नहीं की गई	
फिज़ियोथेरेपी सेवाएं:	**उपलब्धि**
मरीजों की संख्या जिन्हें वैक्सबाथ थेरेपी दी गई	54
मरीजों की संख्या जिन्हें ऑयल मसाज, हाइड्रो–ऑयलिंग थेरेपी दी गई	222
मरीजों की संख्या जिन्हें एक्टिव और पैसिव एक्सरसाइज दी गई	619
मरीजों की संख्या जिन्हें इलैक्ट्रिक वाइब्रेटर मसाज दी गई	53
आईआर	1
मरीजों की कुल संख्या जिनकी फिज़ियोथेरेपी की गई	**896**
स्पिलिंट दिया गया	251
एमसीआर चप्पल दी गई	49

आरसीएस सेवाएं:	उपलब्धि
फुट ड्रॉप बेल्ट	12
दिए गए कुल उपकरण	**312**
फील्ड क्रियाकलाप:	**उपलब्धि**
एनएलईपी क्रियाकलापों का सहयोगात्मक पर्यवेक्षण	16 जिले
कुष्ठ रोग मामला पहचान अभियान (एलसीडीसी)	3 राज्य 11 जिले

प्रशिक्षण का आयोजन:

क्र.सं.	कुष्ठ रोग से संबंधित प्रशिक्षण का नाम	प्रशिक्षण की अवधि	प्रशिक्षित बैचों की संख्या	प्रशिक्षित प्रतिभागियों की संख्या
1	राष्ट्रीय स्तर का डीएलओ प्रशिक्षण	5 दिन	**2**	**12**
2	राष्ट्रीय स्तर का बीएमओ/एमओ/एएमओ प्रशिक्षण	3 दिन	**10**	**118**
3	राष्ट्रीय स्तर का पीएमडब्यू प्रशिक्षण	5 दिन	**1**	**20**
4	छात्रों (एमबीबीएस, आयुष) को दिया गया प्रशिक्षण	1 दिन	**5**	**121**
5	एमएसडब्ल्यू के छात्रों को दिया गया प्रशिक्षण	1 दिन	**1**	**14**
6	एमएससी, बीएससी माइक्रोबायोलॉजी का प्रशिक्षण	1 दिन	**1**	**13**
7	एमबीबीएस प्रशिक्षु	1 दिन	**35**	**138**
8	नर्सिंग छात्रों को दिया गया प्रशिक्षण	1 दिन	**2**	**80**
		कुल	**57 बैच**	**516 प्रतिभागी**

वर्ष (2018–19) के दौरान संस्थान द्वारा की गई नवीनतम पहलें

1. छत्तीसगढ़ के आठ जिलों की तकनीकी निगरानी।
2. ईसीएचओ के सहयोग से चिकित्सा अधिकारियों का ऑनलाइन प्रशिक्षण।
3. आधार आधारित बायोमैट्रिक प्रणाली प्रारंभ करना।
4. स्वच्छ भारत अभियान: ठोस अपशिष्ट और गीले अपशिष्ट को अलग करना।
5. इंडेन्टिंग प्रक्रिया का व्यवस्थापन।
6. खरीददारी में जीईएम का कार्यान्वयन।
7. सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) और जीएसटी की कटौती।
8. केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी और सतर्कता अधिकारी की नियुक्ति।

प्रस्तावित वार्षिक कार्य योजना (2019–20)

1. स्वास्थ्य स्टॉफ की सभी श्रेणियों का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण।
2. कैम्प मोड में आरसीएस करके आरसीएस बैकलॉग को समाप्त करना।
3. प्रशिक्षण हॉल की सुविधाओं का उन्नयन।
4. ऑपरेशन थियेटर का पुनर्निर्माण/मरम्मत।
5. आरएलटीआई कैम्पस में ईको–गार्डन का विकास।
6. ई–पुस्तकालय की स्थापना।

आरओएचएफडब्ल्यू, रायपुर का निष्पादन (वर्ष 2018–19)

विवरण		सं.
एनएचएम, आईपीएचएस, एनएलईपी निगरानी इत्यादि के लिए संस्थानों का दौरा किया गया	जिला अस्पताल और राज्यजिला अस्पताल/शहरी/कुष्ठ रोग केन्द्र	14
	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	52
	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	33
	उप स्वास्थ्य केन्द	37
	एनजीओ/प्राइवेट अस्पाताल	0
एनएचएम और रोग नियंत्रण कार्यक्रमों की समीक्षा करने के लिए दौरा किए गए जिलों की संख्या	एनआरएचएम	4
	एनवीबीडीसीपी	12
	आरएनटीसीपी	3
	एनएलईपी	18
	आईडीएसपी	1
	एनआईडीडीसीपी	1
	तम्बाकू नियंत्रण	1
	वृद्धजन कार्यक्रम (एनपीएचसीई)	1
	कैंसर, मधुमेह, सीवीडी और अभिघात (एनएसपीसीडीएस)	1
	बर्न चोटों की रोकथाम	1
किए गए अन्यी प्रशिक्षण कार्यक्रम	प्रशिक्षण (एनएलईपी) (आंतरिक)	48
	प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण	454
	जिला क्रॉस चैक्डल की रक्तं स्लाइडें (मलेरिया)	3115
	कमियां पाई गई रक्तर स्लाइडें	45
	प्रयोगशालाएं जिनमें स्थापित मानकों की पुष्टि नहीं हुई	1
सीसी उपभोक्ता	सीसी मेथड कॉन्टेमक्टिड को कार्यान्वित कर रहे ईसी	38
	नकली/अस्वीकृत पाए गए ईसी	14
बच्चों के टीकाकरण, एएनसी, पीएनसी और जेएसवाई के पश्चात् पूर्वव्यापी प्रभाव से >1 वर्ष की आयु समूह के बच्चों का कोहर्ट।	टीकाकरण के लिए संपर्क किए गए बच्चे	62
	पूर्णतः टीकाकृत बच्चे	62
	एएनसी जांच के सत्यापन के लिए माताओं से संपर्क किया गया	62
	माताओं में 3 एएनसी जांचें पाई गई और 100 गोलियां आईएफए दी गई	62
	जटिलताओं वाली एएनसी माताएं	18
	पीएनसी जांचों के लिए एचडब्ल्यू द्वारा माताओं से संपर्क किया गया	62
	माताओ द्वारा अस्पताल में प्रसव कराया गया	62
	माताओं ने 3 पीएनसी जांच के लिए विज़िट किया	38
	पीएनसी अवधि के दौरान माताओं को कोई जटिलता आई	0
	माताओं से संपर्क किया गया या जेएसवाई का सत्यापन	62
	माताएं जिन्हें जेएसवाई का मौद्रिक लाभ मिला	60
	माताएं जिन्होंने अपनी जेब से पैसा खर्च किया/भुगतान किया	0
	महामारी रिपोर्ट की गई	1

विशेष क्रियाकलापः

क) छत्तीसगढ़ राज्य के जिलों का एमडीए पश्चात मूल्यांकनः

नौ जिलों का सर्वेक्षण किया गया था, जिनमें से निम्नतम कवरेज रायपुर जिले (धारशिवा ब्लॉक में 10 प्रतिशत से कम कवरेज की सूचना दी गई थी) में था। रायगढ़ जिले का 90 प्रतिशत से अधिक का खपत कवरेज है। सभी शहरी बस्तियों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में निम्न कवरेज था।

जिला और ब्लॉक–वार वास्तविक तथा सूचित कवरेज को दर्शाने वाली तालिका (अप्रैल, 2018)

जिले का नाम	कवर किए गए मकान	कुल आबादी जिसका सर्वेक्षण किया गया	एली आबादी	एमडीए खपत की गई गोलियां	मूल्यांकन सर्वेक्षण कवरेज	डीएमओ द्वारा सूचित कवरेज
महासमुंद	120	648	593	335	56.5	89.1%
रायपुर	120	529	511	190	37.1	>90%
रायगढ़	240	1294	1213	1039	85.6	89.7%
बलोदा बाजार	120	676	624	270	43.3	90%
जशपुर	120	626	569	404	71	87%
जॉजगीर चम्पार	120	719	656	472	71.9	91%
दुर्ग	120	689	666	362	54.4	89%
बेमेतारा	120	638	610	295	48.4	85%
बलोद	120	605	544	233	42.8	81%

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्तरपर परिवार नियोजन सेवाओं का मूल्यांकन

स्वास्थ्य सुविधा केन्द्रों की संख्या जिनका सर्वेक्षण किया गया	प्रसवों की संख्या	आईयूसीडी	पीपीआई यूसीडी	ओसीपी	ईसीपी	कंडोम
6	2509	93	320	140	29	1952*

** सत्यापन के लिए न तो कोई लाभार्थी सूची और न ही प्राथमिक रजिस्टर उपलब्ध था।*

प्रस्तावित वार्षिक कार्य योजना (वर्ष 2019–20)

निम्नलिखित जिलों का सर्वेक्षण किया जाएगाः

श्रेणी	जिला	महीना
जनजातीय	कोंडागॉव	मई 2019
जनजातीय	कोरबा	जून 2019
जनजातीय	सूरजपुर	अगस्त 2019
गैर–जनजातीय	बिलासपुर	अक्तूबर 2019
गैर–जनजातीय	महासमुंद	दिसम्बर 2019
गैर–जनजातीय	गरियाबंद	जनवरी 2020

16.6 क्षेत्रीय कुष्ठरोग प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आरएलटी एंड आरआई), आस्का, ओडिशा

इस संस्थान की स्थापना वर्ष 1977 में की गई थी। इस समय इस संस्थान में स्वीकृत 67 पदों में से 30 (श्रेणी–क–3, श्रेणी–ग–15) और श्रेणी–ग (एमटीएस–12 कर्मचारी तैनात हैं। इसमें एक 50 बिस्तरों का अस्पताल है और इसकी औसत बिस्तर अधिभोग लगभग 37.27 प्रतिशत है। कुष्ठ रोगियों को संस्थान में बहिरंग और अंतरंग दोनों ही प्रकार की सेवाएं उपलब्ध कराई जाती है। यह संस्थान कुष्ठ रोग के मामलों, प्रतिक्रिया और अल्सरों के संदिग्ध, जटिल और असाध्य मामलों के निदान में आने वाली दिक्कतों के प्रबंधन के लिए एक रेफरल केन्द्र के रूप में भी कार्य करता है। बार–बार होने वाले असाध्य ईएनएल प्रतिक्रिया मामलों में थैलिडोमाइड भी दी जाती है। जरूरतमंद रोगियों को फिजियोथेरेपी उपचार और एमसीआर चप्पल उपलब्ध कराई जाती हैं। अंगविच्छेदन और अन्य विभिन्न शल्य चिकित्सीय प्रकियाएं नियमित रूप से की जाती हैं तथा पूर्व में आरसीएस (रि–कंस्ट्रक्टिव सर्जरी) कैम्प भी लगाए जा चुके हैं। यह संस्थान कुष्ठरोग के उन्मूलन के पावन कार्य के लिए एक नोडल प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र के तौर पर भी कार्य करता है।

इस संस्थान द्वारा निष्पादित किए गए कार्यकलाप का सांराश (1 अप्रैल, 2018 से 31 मार्च, 2019 तक)

- ओपीडी उपस्थिति –1773 (कुष्ठ रोगी– 1289, गैर कुष्ठ रोगी–484)
- अंतरंग कुल दाखिले : 222
- प्रबंधित किए गए प्रतिक्रिया के मामले (ओपीडी)– प्रतिक्रिया के 341 मामलों में टाइप–I के –266 और टाइप–II– 75 जिनमें से 2 रोगियों को थैलिडोमाइड दी गई।
- बड़ी शल्य चिकित्साएं–33 और लघु शल्य चिकित्साएं – 162
- डीपीएमआर–एमसीआर चप्पलें–122
- प्रयोगशाला परीक्षणः 294
- प्रशिक्षणः इस संस्थान के संकायने ओडिशा राज्य के डॉक्टरों और परा–चिकित्सा स्टाफ को एनएलईपी में मॉड्यूलर प्रशिक्षण देने के लिए संसाधन व्यक्ति के रूप में भाग लिया था और राज्य की एनएलईपी समीक्षा और आयोजना बैठक में भी भाग लिया था। तीन बैचों में तीन दिन में कुल 70 मेडिकल ऑफिसरों (एमबीबीएस) को, दो बैचों में तीन दिन में 59 बीएनएलडब्ल्यू और विभिन्न बैचों में एलसीडीसी में ओडिशा के विभिन्न जिलों के 403 मेडिकल ऑफिसरों को प्रशिक्षित किया गया था। संस्थान के निदेशक ने एलसीडीसी के लिए केन्द्रीय मॉनीटर स्तर II के रूप में भाग लिया। बीएससी/एमएससी नर्सिंग छात्रों/एमडी छात्रों के लिए 9 बैचों में आरएलटीआरआई, आस्का में एनएलईपी पर एक दिवसीय ओरिएंटेशन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें कुल 213 छात्रों को प्रशिक्षित किया गया।

16.7 क्षेत्रीय कुष्ठरोग प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान (आरएलटी एंड आरआई), गौरीपुर, पश्चिम बंगाल

क्षेत्रीय कुष्ठरोग प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान, गौरीपुर, बांकुरा, संक्षिप्त में आरएलटीआरआई, गौरीपुर, 50 बिस्तरों वाले कुष्ठरोग अस्पताल की स्थापना भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ 1984 में की गई थीः–

1) कुष्ठरोग के उन्मूलन के लिए भारतके विभिन्न राज्यों में, विशेषकर भारत के पूर्वोत्तर के राज्यों में एनएलईपी के सर्वोत्तम कार्यान्वयन हेतु चिकित्सा अधिकारियों सहित विभिन्न श्रेणियों के प्रशिक्षित प्रर्याप्त कार्य बल का सृजन करना और
2) रोग के बारे में बेहतर समझ के लिए कुष्ठरोग के बारे में ऑपरेशनल अनुसंधान करना।

यह संस्थान गौरीपुर नाम के गांव में स्थित है, जो पश्चिम बंगाल राज्य के जिला नगर बांकुरा से (12 किमी.), कोलकाता शहर से (245 किमी.), दुर्गापुर रेलवे स्टेशन से (56 किमी), खड़गपुर जंक्शन से (130 किमी.) की दूरी पर है तथा आसन सोल और पुरूलिया से सड़क एवं रेल मार्ग द्वारा पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है। पड़ोसी राज्य झारखंड के विभिन्न नगर/शहर अर्थात् रांची (217 किमी.), धनबाद (117 किमी), गोमोह, वोजुडीह (84 किमी.) आदि भी इस क्षेत्र के साथ रेल और सड़क मार्ग द्वारा जुड़े हुए हैं।

एनएलईपी प्रबंधन के बदलते हुए परिदृश्य में, वर्तमान में, संस्थान वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारियों (डीएलओ और बीएमओ) के लिए एनएलईपी प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में 'प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण' लघु अवधि के पाठ्यक्रम का आयोजन करता रहा है। पूरे वर्ष चलने वाले एनएलईपी के चिकित्सा

अधिकारियों के 3 दिवसीय अवधि के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और कुष्ठरोग (एनएलईपी) के संबंध में 5 दिवसीय अवधि के पीएमडब्ल्यू प्रशिक्षण पाठ्यक्रम से उनमें एनएलईपी के बेहतर कार्यान्वयन के प्रति अपेक्षित कुशलता विकसित होती है। यह संस्थान ऊपर उल्लिखित नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अलावा एमएससी/बीएससी/जीएनएम नर्सिंग छात्रोंके साथ–साथ विभिन्न सरकारी/गैर–सरकारी संस्थानों/संगठनों के आयुष छात्रों के लिए कुष्ठरोग (एनएलईपी) के बारेमें अनुरोध पर एक दिवसीय ओरिएंटेशन प्रशिक्षणका भी आयोजन करता है। संस्थान कुष्ठरोग से पीड़ित लोगों के लिए सप्ताह में तीन बार मुख्य रूप से रेफरल मामलों के लिए नियमित रूप से ओपीडी सेवाएं उपलब्ध कराता है और कुष्ठ रोगियों के लिए 30 बिस्तरों के वार्ड का जो पहले 50 बिस्तरों का था संचालन करता है, क्योंकि वर्तमान में जटिल अल्सर मामलों के प्रबंधन और पुनरावर्तक प्रकृति की प्रतिक्रिया समस्यों के मामलों के लिए तृतीयक परिचर्या केन्द्र के रूप में एक वार्ड उपयोग की स्थिति में नहीं है। इसके अलावा, कठिन मामलों के निदान के लिए और अयोग्य/जटिल कुष्ठरोगियों को गुणवत्तापूर्ण परिचर्या उपलब्ध कराने के लिए, संस्थान में एक प्रयोगशाला, एक एक्स–रे इकाई तथा एक फिजियोथेरेपी इकाई है। आरएलटीआरआई, गौरीपुर की ओपीडी में उपस्थित हुए कुष्ठरोग के रोगियों में से पहचान किए गए कुष्ठरोग के नए रोगियों (19 में से 11) में 57 प्रतिशत से अधिक कुष्ठरोग के मरीज ऐसे पाए गए जो एससी/एसटी श्रेणी से संबंध रखते थे। आसाधारण रूप से, यह पहचान किए गए नए मामलों में से 10.52 प्रतिशत मामले ऐसे थे जिनमें जी 2 डी (19 में से 2) पाया गया जो राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है। अंततः संस्थान इसकी अवस्थिति और संसाधनों पर विचार करते हुए कुष्ठरोग के मूल्यांकन के प्रति नैदानिक और महामारी विज्ञानीय अध्ययनों के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में कार्य कर सकता है।

इस संबंध में, संस्थान अर्थात् आरएलटीआरआई गौरीपुर, बांकुरा की वर्ष 2018–19 की निष्पादन रिपोर्ट नीचे दी गई है:–

1. आई.पी.डी. :– एडमिशन–72, डिस्चार्ज–167, बिस्तर अधियोग दर–48 प्रतिशत, बिस्तर–अधिभोग दर–5.56
2. ओ.पी.डी:– पहचान किए गए नए मामले–19, अन्य मामले–01, आने वाले कुष्ठ रोगी–1460, दी गई एमडीटी–137 ब्लिस्टर्स पैक्स, आने वाले रेफरल रोगी–406,आने वाले आम मरीज–563 बनाया गया आरएफटी–12 और पुनरावर्तन–0
3. प्रयोगशाला इकाई:– किया गया स्लिट स्किन स्मीयर–551 (स्मीयर के लिए अन्य अस्पतालों से रेफर किए गए मामलों सहित) किया गया जैव रसायन विज्ञान–540, क्लिनिकल पैथोलॉजी–305
4. फिजियो इकाई:– प्लास्टर–10, एक्ससाईज़–4042, मांसपेशी उत्तेजन–257, इंफ्रारेड–132, वैक्स थेरेपी–839
5. प्रशिक्षण में भाग लिया:– संस्थान की प्रशिक्षण अनुसूची के अनुसार प्रशिक्षण दिया गया और एमडी (सीएम)/एमपीएच (पीजीटी) के 15 छात्रों को दो दिन का एनएलईपी प्रशिक्षण दिया गया। एनएलईपी के संबंध में 96 प्रतिभागियों को पीएमडब्ल्यू प्रशिक्षण (5 दिवसीय) दिया गया। एआईआईएच एंड पीएच, कोलकाता के 46 डीएचपी एंड ई छात्रों को दो बैचों में (23+23) एनएलईपी प्रशिक्षण (3 दिवसीय) दिया गया। वर्ष के दौरान बीएसएमसीएच, बांकुरा (सरकारी संस्थान) के एमएससी नर्सिंग के 10 छात्रों को तथा जीएनएम नर्सिंग के 69 छात्रों को दो बैचों (34+35) में कुष्ठरोग (एनएलईपी) के संबंध में एक दिन का ओरिएंटेशन प्रशिक्षण दिया गया।यहां यह नोट किया जाए कि संबंधित राज्य सरकारों से प्रायोजित प्रतिभागियों की कमी के कारण, वर्ष 2018–19 में अनुसूचित टीओटी कार्यक्रम और चिकित्सा अधिकारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित नहीं किए जा सके।

16.8 वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट (वीपीसीआई), नई दिल्ली

वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट (वीपीसीआई) वक्ष रोगों और संबंद्ध विज्ञानों के अध्ययन के लिए समर्पित एक अनूठा अनुसंधान संस्थान है। वीपीसीआई को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित किया जाता है। यह अध्यादेश XX(2) के तहत दिल्ली विश्वविद्यालय का एक अनुरक्षित संस्थान है तथा इसका संचालन कार्यकारी परिषद, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा गठित शासी निकाय द्वारा किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2018–19 के दौरान, भारत सरकार द्वारा वीपीसीआई को सहायता अनुदान और स्वच्छता कार्य योजना के लिए 61.00 करोड़ रु. की राशि जारी की गई थी।

यह संस्थान भारत में वक्ष रोगों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों (क्षयरोग और वक्ष रोगों) में डिप्लोमा (डीटीसीडी) एमडी, फुफ्फुसीय चिकित्सा में डीएम, जैव रसायन विज्ञान, सूक्ष्म जीवविज्ञान, फार्माकॉलॉजी, फिजियोलॉजी में एमडी और पल्मोनरी चिकित्सा, सूक्ष्म जीव विज्ञान, फार्माकोलॉजी, फिजियोलॉजी आदि में पीएचडी) का आयोजन करता है। संस्थान अपने छात्रों और आमजनों में चिकित्सा शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने के लिए सम्मेलनों/विचार गोष्ठियों/सीएमई तथा पब्लिक लैक्चर का लगातार आयोजन करता है।

संस्थान नई नैदानिक प्रौद्योगिकी विकसित करने और वक्ष चिकित्सा से संबंधित वैज्ञानिक ज्ञान का देश के अन्य संस्थानों में प्रचार–प्रसार करने और मरीजों को विशेष नैदानिक और जांच सेवाएं उपलब्ध कराने हेतु फुफ्फुसीय चिकित्सा एवं संबद्ध विषयों में वक्ष चिकित्सा के बेसिक और नैदानिक पहलुओं पर लगातार अनुसंधान करता है। संस्थान की ओर से किए जाने वाले अनुसंधान की व्यापक रूप से प्रशंसा की जाती है।

वक्ष रोगों और संबद्ध विज्ञानों के क्षेत्र में वैज्ञानिक ज्ञान और नवीनतम उपलब्धियों का प्रचार–प्रसार करने के उद्देश्य से, संस्थान ने नेशनल कॉलेज ऑफ चेस्ट फिजिशियंस (इंडिया) के सहयोग से अपने प्रतिष्ठित और सूचीबद्ध त्रैमासिक प्रकाशन– द इंडियन जर्नल ऑफ चेस्ट डिसिज़िज़ एंड एलाइड सांइसिस का प्रकाशन जारी रखा है।

संस्थान का क्लिनिकल विंग, द विश्वानाथन चेस्ट हॉस्पिटल (वीसीएच) नवीनतम मरीज परिचर्या सुविधाओं के साथ एक तृतीयक परिचर्या वक्ष अस्पताल है। 24 घंटे श्वसन संबंधी आपातकालीन सेवाओं के साथ 128 बिस्तरों वाला यह अस्पताल प्रत्येक वर्ष लगभग 70,000 ओपीडी मरीजों तथा 5000 आईपीडी (सामान्य और आपातकालीन वार्ड) मरीजों का उपचार करता है। संस्थान देशव्यापी इंफ्ल्यूएंजा एच1एन1 वायरस के लिए नैदानिक सुविधाएं भी उपलब्ध करा रहा है। राष्ट्रीय श्वसन एलर्जी, अस्थमा और प्रतिरक्षा विज्ञान केन्द्र (एनसीआरएएआई), एलर्जी क्लिनिक, तंबाकू सेवन समाप्ति क्लिनिक, कार्डियो–पल्मोनरी पुनर्वास क्लिनिक, स्लीप प्रयोगशाला, योगा चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र, राष्ट्रीय तंबाकू क्विट लाइन सेवा, बहु–आयामी अनुसंधान इकाई (एमआरयू) प्रभावपूर्ण वीसीएच कार्य प्रणाली में अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रहे हैं। अतः संस्थान दिल्ली के मरीजों, देश के अन्य हिस्सों और श्वसन संबंधी बीमारियों से पीड़ित पड़ोसी देशों के मरीजों के लिए महत्वपूर्ण परिचर्या प्रबंधन सहित उत्कृष्ट नैदानिक और उपचार सेवाएं उपलब्ध करा रहा है।

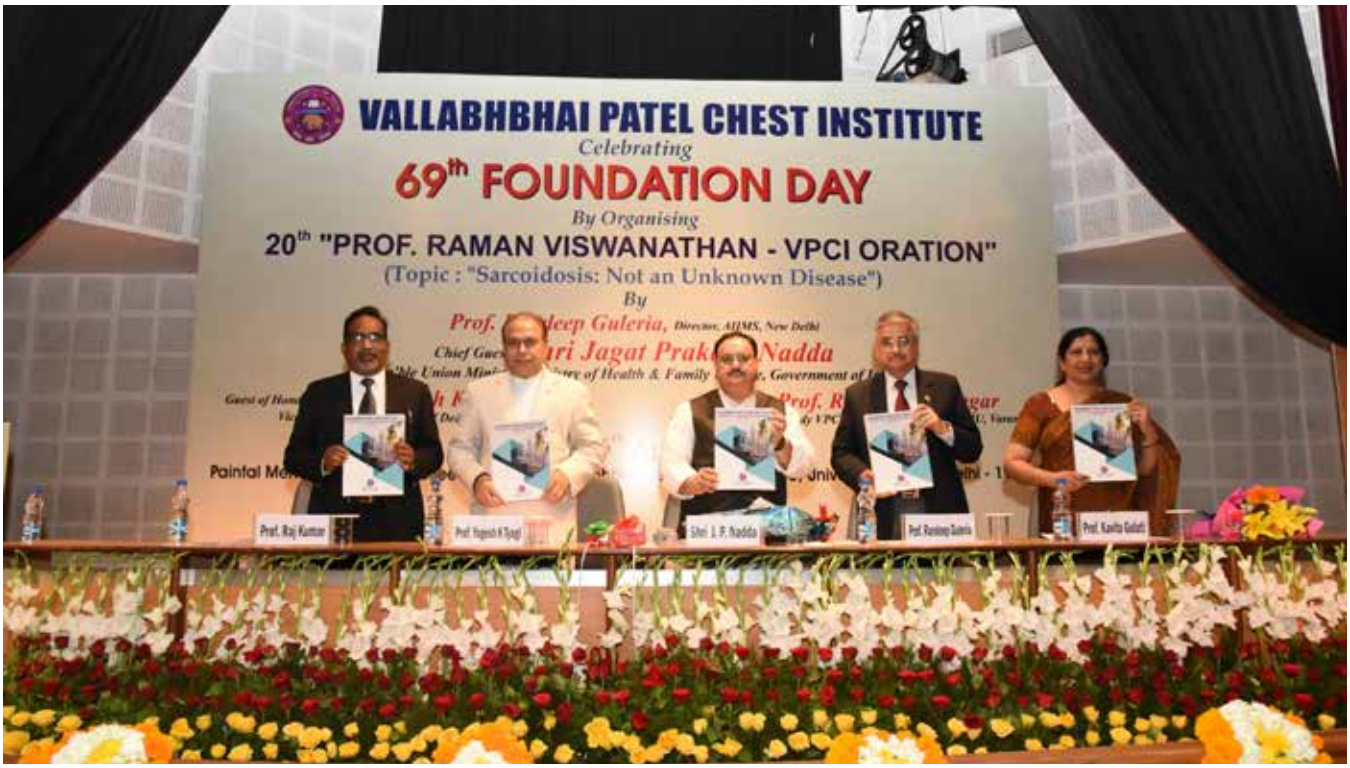

वी.पी.सी.आई का 69वां स्थापना दिवस

संस्थान गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान और रोगी परिचर्या के अनुरक्षण के लिए अनुसंधान के क्षेत्र में विभिन्न परिसंवादों/सम्मेलनों/सेमिनारों और कार्यशालाओं/सीएमई तथा अन्य कार्यक्रमों के आयोजनों को भी जारी रखे हुए है।

स्वच्छता पखवाड़ा, 69वां फाउंडेशन दिवस और 20वां प्रोफेसर रमन विश्वनाथन–वीपीसीआई व्याख्यान माला, चौथा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 14वां प्रोफेसर अवतार सिंह पेंटल स्मारक व्याख्यान माला, गुणवत्ता प्रयोगशाला सेवाओं के संबंध में कार्यशाला, श्वसन एलर्जी के संबंध में 43वीं कार्यशालाः निदान और प्रबंधन, विशेष स्वच्छता अभियान, ''स्वच्छता ही सेवा'' 15 सितम्बर से 2 अक्तूबर, 18 तक ऐसे कार्यक्रम थे जिनका आयोजन वर्ष के दौरान किया गया था।

वर्ष के दौरान संस्थान द्वारा चौथी डॉ. वी.के.विजयन व्याख्यान माला का भी आयोजन किया गया, 15 अक्तूबर, 2018 को नवीनीकृत वीसीएच–रसोई का उद्घाटन किया गया, 29 अक्तूबर से 3 नवम्बर, 2018 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया, 1 नवम्बर, 2018 को सीएमई कार्यक्रमः एनटीएम संक्रमण के फुट प्रिंट की मैपिंग की गई, 6 दिसम्बर, 2018 को ''धूम्रपान और फेफड़ा स्वास्थ्य'' विषय पर जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। 18 जून, 2018 को मुख्य अतिथि प्रोफेसर राकेश भटनागर, कुलपति बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय द्वारा मरीज पंजीकरण हॉल का उद्घाटन किया गया था जिसे बेहतर सेवाएं प्रदान करने हेतु मरीजों को समर्पित कर दिया गया था

रोगी परिचर्या

1. वीपी चेस्ट इंस्टीट्यूट के ओपीडी, आईपीडी, आपातकालीन इकाई और आईसीयू में मरीजों के लिए पैथोलॉजी विभाग में नैदानिक जॉचें की गईं।
   - रक्त जांच 37914
   - पेशाब जांच 796
   - बलगम जांच 587
   - ऊतक विकृति विज्ञान 138
2. कार्डियो पल्मोनरी पुनर्वास क्लिनिक वीपीसीआई में आने वाले रोगी
   - पर्यवेक्षित पुनर्वास सत्र 51
   - श्वसन अभ्यास की व्याख्या 380
3. कुल भर्ती (अंतरंग और बहिरंग दाखिले सहित)
   - नए रोगी बहिरंग 15700
   - पुराने रोगी बहिरंग 59802
4. वार्डों में रागियों की उपस्थिति
   - सामान्य वार्ड 2326
   - इमरजेंसी वार्ड 3892
   - आईसीयू 81
   - इमरजेंसी उपचार प्रदान किया गया 21437
5. वर्ष के दौरान वीसीएच में की गई नियमित और विशिष्ट जांचों की संख्याः
   - पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट 19295
   - आर्टिरियल ब्लड गैसें 14015
   - ब्रोंकोस्कोपी 294
   - ब्रोंकोएलवियोलर 219
   - सीटी स्केन 1584
   - अल्ट्रासाउंड जांच 0
   - एक्स–रे 19454
   - इलैक्ट्रोकार्डियोग्राम 3274
   - पोलिसोमनोग्राम 253
   - एचआईवी जांच 1155
   - क्लिनिक बायोकेमिस्ट्री 26287

16.9 राष्ट्रीय क्षयरोग और श्वसन रोग संस्थान (एनआईटीआरडी), नई दिल्ली

1952 में स्थापित किया गया टीबी सेनेटोरियम ने 1991 में एक संस्थान का दर्जा हासिल किया तथा उसके पश्चात इसे 2013 में भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय मान्यता प्रदान की गई। राष्ट्रीय क्षयरोग और श्वसन रोग संस्थान (एनआईटीआरडी) ने 65 वर्ष की अपनी यात्रा के दौरान आई प्रत्येक कठिनाई का सफलतापूर्वक सामना किया है। यह भारत सरकार और संस्थान के शासी मंडल के दृष्टिकोण, इसके प्रशासकों के योग्य मार्ग दर्शन और संकाय द्वारा किए गए कठिन परिश्रम, संस्थान के कर्मचारियों एवं छात्रों के योग्य द्वारा संभव हो सका था। परिणामस्वरूप, आज यह संस्थान अपने कार्य क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध संस्थानों में एक महत्वपूर्ण स्थिति धारण किए हुए है।

यह संस्थान एक तृतीयक परिचर्या केन्द्र है जो श्वसन रोगों विशेषकर क्षयरोग के मरीजों को उच्च गुणवत्ता की निवारक, नैदानिक, उपचारात्मक और पुनर्वासीय सेवाएं उपलब्ध कराता है। वर्ष के दौरान संस्थान में आने वाले मरीजों की कुल संख्या 2.7 लाख से अधिक है। (प्रतिदिन औसत कुल संख्या 1585 होने के कारण) यह पिछले पांच वर्षों में 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है। संस्थान द्वारा उपलब्ध कराई जा रही नवीनतम सेवाओं के मद्देनज़र इस संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। संस्थान देश की आवश्यकताओं के अनुसार नीतियां और दिशानिर्देश तैयार करने तथा क्षयरोग के साथ–साथ गैर–क्षय रोगीय श्वसन रोगों के क्षेत्र में शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान के रूप में शैक्षणिक कार्यकलाप करने के लिए संशोधित राष्ट्रीय क्षयरोग नियंत्रण कार्यक्रम में भी लगातार सहयोग दे रहा है।

संस्थान में क्षयरोग और श्वसन रोगों के निदान हेतु प्रतिदिन ओपीडी का संचालन किया जाता है। सलिप क्लिनिक, लंग कैंसर क्लिनिक, थोराएसिस सर्जरी क्लिनिक, एलर्जी क्लिनिक, तंबाकू नियंत्रण क्लिनिक, पल्मोनरी पुनर्वास क्लिनिक, लेजर थेरेपी क्लिनिक और प्री–एनाथिसिया चैक–अप क्लिनिक जैसे स्पेशियल क्लिनिकों में विभिन्न गैर–क्षय रोगीय श्वसन बीमारियों पर ध्यान दिया जाता है। संस्थान क्षयरोग और श्वसन रोगों के गंभीर रूप से बीमार मरीजों को विभिन्न वार्डों, इमरजेंसी और आईसीयू में 470 बिस्तरों के माध्यम से अंतरंग उपचार उपलब्ध कराता है। संस्थान 1999 से स्नातकोत्तर डीएनबी (श्वसन रोग) डिग्री पाठ्यक्रम का संचालन कर रहा है और अब प्रतिवर्ष 19 डीएनबी छात्रों को पाठ्यक्रम में दाखिला दे रहा है। इसके अलावा, डीएनबी (थोरासिस सर्जरी) और डीएनबी (माइक्रोबायलॉजी) पाठ्यक्रमों में प्रतिवर्ष दो–दो छात्रों को दाखिला दिया जा रहा है।

वर्ष के दौरान चल रही परियोजनाओं के अलावा 32 नई अनुसंधान परियोजनाएं (डीएनबी छात्रों के साथ–साथ संस्थान संकाय सहित) प्रारंभ की गई। इस अवधि के दौरान संस्थान के संकाय के सात वैज्ञानिक प्रकाशन प्रकाशित किए। संस्थान नियमित रूप से अपने त्रैमासिक न्यूज़ लैटर का प्रकाशन कर रहा है। अनेक वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने क्षयरोग और श्वसन रोगों के संबंध में विभिन्न तकनीकी/विशेषज्ञ समितियों में संस्थान का प्रतिनिधित्व किया है और क्षयरोग कार्यक्रम की नीतियों को राष्ट्रीय स्तर पर परिभाषित करने में अपना योगदान दिया है। प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों के समीक्षकों के रूप में, संकाय ने अपनी संपादकीय जिम्मेदारियों को भी पूरा किया है।

वर्ष 2018–19 के दौरान औसतन 363 प्रतिदिन की दर से 62,481 नए मरीज ओपीडी में आए। ओपीडी में प्रतिदिन 1585 मरीजों की औसतन उपस्थिति के साथ कुल उपस्थिति 273284 थी। क्षयरोग के 9140 मामलों की पहचान की गई तथा उन्हेंउपचार के लिए संबंधित डॉट्स केन्द्रों को रेफर कर दिया गया। कुल 81252 स्मीयर माइक्रोस्कॉपी जांचें, 12503 पल्मोनरी और 5368 एक्स्ट्रा–पल्मोनरी एमजीआईटी लिक्विड कल्चर्स, 10196 सीबी–एनएएटी जांचें, 9311–लाइनप्रोब एस्सेज़ और 2485 एमजीआईटीडीएसटी किए गए। किए गए अन्य परीक्षणों में 187720 रूधिर विज्ञान जांचें, 3,78,262 जैव रसायन विज्ञान जांचें, 5160 साइटोलॉजी जांचें, 976 हिस्टोपेथोलॉजी जांचें, 93,137 एक्स–रे, 4639 आल्ट्रासाउंड, 12124 पीएफटी, 1182 प्रक्रियाओं सहित 673 ब्रोनकोस्कोस्कोपीज़, 12777 ईसीजी और 168 स्लिप अध्ययन थे। 8014 अंतरंग दाखिले किए गए, 28924 इमरजेंसी मरीज दौरे किए गए, 597 आईसीयू दाखिले, 710 मुख्य थोरासिस सर्जरी और 1410 मरीज एलाइव ऑन एआरटी किए गए। मरीज परिचर्या के सुदृढ़ीकरण हेतु संस्थान द्वारा सीटी स्कैन मशीन, 16 सैम्पल सीबीएनएएटी मशीन, ब्रोनकोस्कोपी सिमुलेटर, सक्शन मशीन, सैनिटरी नेपकिंस वेंडिग मशीन इत्यादि सहित अनेक हार्ड एंड उपकरणों की अधिप्राप्ति की गई।

संस्थान की उपलब्धियां

नई पहलें: –

- एसईएआर में एमडीआर–क्षयरोग और एचआईवी–क्षयरोग के संबंध में सूचना का प्रचार–प्रसार करने के लिए वेब आधारित प्रौद्योगिकी के माध्यम से दिल्ली और दिल्ली के बाहर विभिन्न स्थानों पर एनआईटीआरडी में स्पोक्स के साथ एक हब के रूप में नवीनतम डिस्टेंस लर्निंग कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। ई–लर्निंग के माध्यम से एचआईवी और क्षयरोग के बीच सहयोग के सुदृढ़ीकरण के लिए संस्थान में 3–4–2018 को राष्ट्रीय पहल "ई–निश्चित" प्रारंभ किया गया था।
- सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग, एक एनआरएल आरएनटीसीपी के तहत और डब्ल्यूएचओ/जीएलआईटीबी एसएनआरएल नेटवर्क के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ने एनएबीएल प्रत्यायन हासिल किया।

आयोजित किए गए प्रशिक्षण/सीएमईः –

- दिनांक 24/4/2018 को संस्थान में राष्ट्रीय प्रशिक्षण–सह–एसटीओ की समीक्षा का आयोजन किया गया और इसमें 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- वक्ष शल्य चिकित्सा विभाग ने दिनांक 22/4/2018 को बड़ा शल्य चिकित्सा पर सीएमई का आयोजन किया और इसमें 76 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- दिनांक 15/7/2018 को संस्थान में तीसरे राष्ट्रीय बाल चिकित्सा अद्यतन 2018 का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- दिनांक 28/07/2018 को "प्रदूषण और स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव" पर सार्वजनिक व्याख्यान और पैनल विचार–विमर्श का आयोजन किया गया और इसमें लगभग 200 व्यक्तियों ने भाग लिया।
- कीटाणु–विज्ञान विभाग ने विभिन्न दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों के 14 प्रशिक्षुओं के लिए दिनांक 30/8/2018 से दिनांक 7/9/2018 तक एलपीए कल्चर और डीएसटी सहित आणविक निदानों के संबंध में प्रशिक्षण आयोजित किए।
- नर्सिंग अनुभाग ने रोगी परिचर्या की बेहतरी के लिए स्टाफ नर्सों के ज्ञान और कौशल को अद्यतन करने हेतु संस्थान में सतत नर्सिंग शिक्षा (सीएनई) प्रकोष्ठ का गठन किया है। पिछले वर्षों में, इसने 30 से भी अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

पुरस्कारः–

- संस्थान को दिनांक 19/4/2018 को कायकल्प योजना के तहत "प्रशस्ति प्रमाण पत्र और 50 लाख रु." का तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया है।

डॉ. रोहित सारिन, निदेशक को कुष्ठ रोग के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए दिनांक 28/12/2018 को माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा न्यूजएक्स स्वास्थ्य पुरस्कार, 2018 प्रदान किया गया।

संस्थान लगातार अधिक से अधिक वैश्विक सम्मान प्राप्त कर रहा है। टीबी प्रशिक्षण एवं अनुसंधान और एसईएआर देशों के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम आयोजित करने हेतु इसे डब्ल्यूएचओ के सहयोगी केन्द्र के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। संपूर्ण विश्व से चिकित्सक, तकनीशियन और स्वास्थ्य कर्मी संस्थान में प्रशिक्षण एवं पारस्परिक वार्तालापों के लिए आते है जिससे पारस्परिक सहयोग में सुविधा प्राप्त होती है।

संस्थान उच्च गुणवत्तापूर्ण रोगी परिचर्या, शिक्षण, प्रशिक्षण और नवीन अनुसंधान के माध्यम से वैश्विक उत्कृष्टता की उच्चतर ऊचाईयों तक पहुँचने के प्रयास करता है। इस प्रयास में सहयोग के लिए संस्थान के विस्तार और मॉस्टर प्लान का कार्य पहले ही प्रक्रियाधीन है।

16.10 राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान (एनटीआई) बेंगलुरु

परिचय

राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान (एनटीआई), बेंगलुरू स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक संगठन है जिसकी स्थापना वर्ष 1959 में डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ के सहयोग से की गई थी। यह दक्षिण–पूर्व एशिया में क्षय रोग के नियंत्रण के क्षेत्र में एक अग्रेषी संस्थान है जो क्षेत्र में टीबी नियंत्रण और प्रचालनात्मक अनुसंधान के लिए मानव संसाधन की जरूरतों को पूरा करता है। यह संस्थान वर्ष 1985 से प्रशिक्षण एवं अनुसंधान हेतु एक डब्ल्यूएचओ सहयोगी केन्द्र के रूप में कार्य कर रहा है। संस्थान टीबी नियंत्रण के विभिन्न घटकों पर परिचालनात्मक अनुसंधान करने में भी कार्यरत है। संस्थान की जीवाणु तत्व–संबंधी शाखा को टीबी नियंत्रण क्रियाकलाप में बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय रेफरेंस प्रयोगशाला के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यह औषधि प्रतिरोधी टीबी के कार्यान्वयन संबंधी प्रबंधन (पीएमडीटी) में सहयोग के लिए संपूर्ण देश में कल्चर और औषधि सवेंदनशीलता परीक्षणों के लिए तात्कालिक रेफरेंस प्रयोगशाला की स्थापना में भी मदद करती है।

संस्थान को आरएनटीसीपी से संबंधित परिचालनात्मक अनुसंधान के लिए एक नोडल केन्द्र के रूप में भी जाना जाता है। एक नोडल केन्द्र के रूप में मुख्य क्रियाकलाप है कार्यशालाओं का आयोजन करना, अनुसंधान कार्यसूची तैयार करना और प्रकाशनों के माध्यम से अनुसंधान आंकड़ों का प्रसार करना। संस्थान के प्रभाग/इकाईयां निम्नवत हैं:

प्रभाग	इकाई
एचआरडी और प्रलेखन प्रभाग	• शिक्षण और समन्वय इकाई
	• कंप्यूटर क्षेत्र इकाई
	• पुस्तकालय और प्रलेखन इकाई
प्रयोगशाला विभाग	• एनआरएल
	• पशु प्रयोगशाला
	• आईसीईएलटी
महामारी विज्ञान और अनुसंधान प्रभाग	• अनुसंधान इकाई
एम एंड ई डिवीजन	• आरएनटीसीपी यूनिट की निगरानी
संचार और समाजशास्त्र प्रभाग	• संचार
	• समाज शास्त्र इकाई
प्रशासन प्रभाग	• निदेशक का कार्यालय
	• स्थापना अनुभाग
	• लेखा अनुभाग
	• स्टोर
	• छात्रावास
	• परिवहन अनुभाग
	• सिविल और इलेक्ट्रिकल वर्क्स
	• कैंपस मेंटेनेंस
	• सुरक्षा
	• ईपीबीएक्स

16.10.1 एचआरडी और प्रलेखन प्रभाग

संस्थान ने मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में मार्ग दर्शन किया है। यह देश के विभिन्न हिस्सों में तैनात टीबी कार्यक्रम प्रबंधकों के लिए निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन में कार्यरत है:

- एनटीआई पर आरएनटीसीपी और टीबी–एचआईवी मॉड्यूलर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसमें एसटीडीसी, एसटीओ, डीटीओ, एमओ–टीसी और चिकित्सा कॉलेजों की संकाय ने भाग लिया।
- कार्रवाई संबंधी प्रबंधन सूचना (एमआईएफए) प्रशिक्षण।
- निवारक अनुरक्षण और दूरबीन माइक्रोस्कोप की

मामूली मरम्मत में प्रशिक्षण।

- ईपीआई केन्द्र प्रशिक्षण कार्यशाला।
- राष्ट्रीय रेफरेंस प्रयोगशालाओं के लिए प्रशिक्षण सामग्री दिशा–निर्देशों को अद्यतन करने हेतु माइक्रोबायोलॉजिस्ट के लिए कार्यशाला।
- एमटीबी के कल्चर और डीएसटीपर माइक्रोबायोलॉजिस्ट का सार्क क्षेत्रीय प्रशिक्षण।
- टीबी ऑपरेशनल रिसर्च वर्कशॉप।
- पीसीआर आधारित एलपीए प्रशिक्षण
- प्रयोगशाला कर्मियों के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (ठोस कल्चर, तरल कल्चर, एलईडी–एफएम, एलपीए, सीबीएनएएटी)
- देश भर में विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रायोजित स्नातक चिकित्सा, माइक्रोबायोलॉजी और नर्सिंग तथा फार्मेसी छात्रों के लिए एक दिन की अवधि का ओरिएंटेशन कार्यक्रम।
- हाल के वर्षों में आरएनटीसीपीके तहत बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन (ईक्यूए) को महत्व दिया गया है। देश के विभिन्न हिस्सों के प्रयोगशाला कर्मियों को ईक्यूए की प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। माइक्रोबायोलॉजिस्ट/लैब तकनीशियनों को कल्चर और डीएसटी/स्मीयर माइक्रोस्कोपी में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
- निक्षय प्रशिक्षण।

16.10.2 प्रशिक्षण गतिविधियां

क्र. सं.	प्रशिक्षण का प्रकार	अवधि	भागीदारों की संख्या	संगठन/राज्य/जिला
1.	प्रयोगशाला कार्मिक (ठोस संस्कृति, तरल संस्कृति, एलईडी–एफएम, एलपीए, सीबीएनएएटी) के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	8 – 18 जनवरी 2018	1	महाराष्ट्र
2.	प्रयोगशाला कार्मिक (ठोस संस्कृति, तरल संस्कृति, एलईडी–एफएम, एलपीए, सीबीएनएएटी) के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	5 – 17 फरवरी 2018	6	कर्नाटक, ओडिशा, तमिलनाडु और केरल
3.	बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन (ईक्यूए)	19– 23 फरवरी 2018	13	कर्नाटक, केरल, जम्मू और कश्मीर, महाराष्ट्र, मणिपुर, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश
4.	निवारक रखरखाव और द्विनेत्री माइक्रोस्कोप की मामूली मरम्मत पर प्रशिक्षण	2– 5 अप्रैल 2018	18	हरियाणा, महाराष्ट्र, मिजोरम, तमिलनाडु, त्रिपुरा और उत्तर प्रदेश
5.	भारत –2017 में पीएमडीटीके लिए दिशानिर्देशों पर प्रशिक्षकों (टीओटी) का प्रशिक्षण	17 – 19 अप्रैल 2018	65	आंध्र प्रदेश, बिहार, चंडीगढ़, दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव (यूटी), दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटक केरल, मिजोरम, मध्य प्रदेश, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, जोधपुर, सिक्किम, तमिलनाडु, मणिपुर, तेलंगाना, हरियाणा, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा
6.	निवारक रखरखाव और मामूली मरम्मत द्विनेत्री माइक्रोस्कोप	23 – 25 अप्रैल 2018	19	आंध्र प्रदेश, गोवा, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र और ओडिशा
7.	प्रयोगशाला कार्मिक (ठोस संस्कृति, तरल संस्कृति, एलईडी–एफएम, एलपीए, सीबीएनएएटी) के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	7 – 19 मई 2018	7	असम, हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाब और उत्तर प्रदेश

क्रं. सं.	प्रशिक्षण का प्रकार	अवधि	भागीदारों की संख्या	संगठन/राज्य/जिला
8.	बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन (ईक्यूए)	11 – 15 जून 2018	8	हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, त्रिपुरा और उत्तर प्रदेश
9.	इस संस्थान में लिक्विड कल्चर एमजीआईटी 960 (प्रथम पंक्ति और दूसरी पंक्ति डीएसटी) में प्रशिक्षण आयोजित किया गया	23 – 27 जुलाई 2018	9	महाराष्ट्र, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, असम, सिक्किम और बिहार
10.	परामर्श कार्यशाला (यूएसएआईडी समर्थित चुनौती टीबी परियोजना के तहत एनआरएल, डब्लूएचओ और फ़िनड के समर्थन से प्रयोगशाला निदान के लिए ई–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम विकसित करना)	19– 20 जुलाई 2018	34	नई दिल्ली, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, असम, केरल, तमिलनाडु, गुजरात और कर्नाटक
11.	भारत में PMDT के तहत डेलमनीड परिचयः रिफ्रेशर प्रशिक्षण	1 और 2 अगस्त 2018	26	कर्नाटक, केरल, लक्षद्वीप और नई दिल्ली
12.	पीसीआर बेस लाइन जांच परख द्वारा एमडीआर –टीबी की आणविक पहचान में प्रशिक्षण	27– 31अगस्त 2018	12	महाराष्ट्र, तमिलनाडु और छत्तीसगढ़
13.	बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन (ईक्यूए)	24 – 28 सितंबर 2018	7	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दमन–दियू, दादरा और नगर हवेली, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश
14.	पीजी निवासी डॉक्टरों के लिए संवेदीकरण प्रशिक्षण 2018के लिए प्रशिक्षण	18 सितंबर 2018	12	सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज (एएफएमसी), पुणे, महाराष्ट्र और हासन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एचआईएमएस), हासन, कर्नाटक
15.	अधिप्राप्ति और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और निकुशअशादी (दक्षिण क्षेत्र) पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण	10 – 12 अक्टूबर 2018	28	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, पुडुचेरी,तेलंगाना और तमिलनाडु
16.	प्रयोगशाला कार्मिक (ठोस संस्कृति, तरल संस्कृति, एलईडी–एफएम, एलपीए, सीबीएनएएटी) के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	22 अक्टूबर – 3 नवंबर 2018	9	असम, बिहार, कर्नाटक, केरल, तेलंगाना, त्रिपुरा, हैदराबाद और मध्य प्रदेश
17.	अधिप्राप्ति, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और निकुशअषाढ़ी पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण	24 – 26 अक्टूबर 2018	41	असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, कर्नाटक, ओडिशा, चंडीगढ़ और पंजाब, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल
18.	अधिप्राप्ति, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और निकुशअषाढ़ी पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण	29 – 31 अक्टूबर 2018	26	देहरादून, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, पंजाब और उत्तराखंड
19.	सार्क क्षेत्र में पहचाने गए राष्ट्रीय टीबी और एचआईवी / एड्स / प्रयोगशालाओं के प्रमुख / प्रमुख	28 – 30 नवंबर 2018	16	सार्क देशों के सदस्य (भारत, नेपाल, अफगानिस्तान, श्रीलंका, भूटान, भारत, नेपाल, बांग्लादेश, मालदीव और पाकिस्तान
20.	अधिप्राप्ति और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और निकुशअशादी (दक्षिण क्षेत्र) पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण	18 – 19 दिसंबर 2018	33	असम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा
21.	अधिप्राप्ति और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और निकुशअशादी (दक्षिण क्षेत्र) पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण	20 – 21 दिसंबर 2018	31	दमन और दीव, दादरा और नगर हवेली, गोवा, गुजरात, जम्मू और कश्मीर, लक्षद्वीप, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान

क्रं. सं.	प्रशिक्षण का प्रकार	अवधि	भागीदारों की संख्या	संगठन/राज्य/जिला
22.	एमडीआर–टीबी के खिलाफ स्ट्राइक बनाना माइकोबैक्टीरियम टीबी के लिए लिक्विड कल्चर एंड ड्रग सस्पेसेबिलिटी टेस्टिंग (LC&DST) में सर्वोत्तम प्रथाओं, समस्या निवारण और हालिया विकास पर प्रशिक्षकों (टीओटी) के टीबी प्रतिरोध परीक्षण और नैदानिक प्रणालियों के प्रशिक्षण को मजबूत करने के लिए बीडी– यूएसएआईडी भागीदारी	12 और 13 दिसंबर 2018	25	आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, पुदुचेरी, तेलंगाना, तमिलनाडु, और पश्चिम बंगाल
23.	लिक्विड कल्चर एमजीआईटी 960 (प्रथम पंक्ति और दूसरी पंक्ति डीएसटी) और एलपीए में प्रशिक्षण	7– 11 जनवरी, 19	08	कर्नाटक
24.	राष्ट्रीय प्रशिक्षण और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन पर निक्षय औषधि	17 जनवरी 2019	12	असम, हरियाणा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और तेलंगाना
25.		18 जनवरी 2019	22	महाराष्ट्र, ओडिशा, सिक्किम, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, बिहार, जम्मू–कश्मीर, लक्षद्वीप, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, मेघालय, असम और
26.	स्पुतम माइक्रोस्कोपी और ईक्यूए में प्रशिक्षण	21 – 25 जनवरी 2019	07	ओडिशा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और तिब्बती स्वैच्छिक स्वास्थ्य संघ छत्तीसगढ़
27.	भारत में टीबी नियंत्रण के लिए आरएनटीसीपी तकनीकी और परिचालन दिशानिर्देशों पर प्रशिक्षण	21 – 25 जनवरी 2019	11	छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा और उत्तराखंड तिब्बती स्वैच्छिक स्वास्थ्य संघों की।
28.	लाइन जांच परख द्वारा टीबी में पहली पंक्ति और दूसरी पंक्ति दवा प्रतिरोध का आणविक आधारित पता लगाने में प्रशिक्षण	21 – 25 जनवरी 2019	09	पंजाब, झारखंड, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, नागपुर और जम्मू और कश्मीर
29.	एनआरएल कैपेसिटी बिल्डिंग की बैठक	31 जनवरी और 1 फरवरी 2019	09	कर्नाटक, ओडिशा, तमिलनाडु, नई दिल्ली, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश
30.	प्रायोगिक और क्षेत्र परीक्षण के लिए आरएनटीसीपीमें राष्ट्रीय स्तर का मॉड्यूलर प्रशिक्षण	4 – 16 फरवरी 2019	8	दिल्ली, राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल
31.	प्रयोगशाला कार्मिक (ठोस संस्कृति, तरल संस्कृति, एलईडी– एफएम, एलपीए, सीबीएनएएटी) के लिए व्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	11 – 23 फरवरी 201′	7	अंडमान और निकोबार महाराष्ट्र, तमिलनाडु, तेलंगाना और त्रिपुरा
32.	सीडीसी जीएचएसएएनआईआरटी के लिए संवेदीकरण कार्यशाला सीटीडी द्वारा पहचानी गई प्रयोगशालाओं का अध्ययन	7 फरवरी 2019	12	एनआईआरटी, चेन्नई; आईआरएल, बैंगलोर; जेजे अस्पताल मुंबई; किम्स, हुबली; एसटीडीसी नागपुर; आईआरएल पुणे; जीटीटी सावरी; जीएमसी, औरंगाबाद; एसटीडीसी अजमेर; एसएमए जयपुर
33.	एनएबीएल मान्यता के लिए समर्थित टीबी प्रयोगशाला के संबंध में स्टेक होल्डर की बैठक	22 फरवरी 2019	38	कर्नाटक, आंध्र प्रदेश महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, ओडिशा, चेन्नई, और बैंगलोर

क्रं. सं.	प्रशिक्षण का प्रकार	अवधि	भागीदारों की संख्या	संगठन/राज्य/जिला
34.	एलपीए प्रशिक्षण पहली और दूसरी पंक्ति	04–08 मार्च, 2019	10	गुजरात, जम्मू और कश्मीर, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश
35.	6–17 वर्ष आयु वर्ग में डेलमनीड का उपयोग करने का राष्ट्रीय टीओटी	6– 08 मार्च, 2019	52	आंध्र प्रदेश, असम, छत्तीसगढ़, हरियाणा, झारखंड, मणिपुर, मेघालय मिजोरम, मेघालय, नागालैंड, राजस्थान, तेलंगाना, त्रिपुरा, तमिलनाडु, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल
36.	आगे का रास्ताः टीबी डायग्नोस्टिक नेटवर्क असेसमेंट 2017 (भारत के क्षय रोग निदान नेटवर्क के संयुक्त मूल्यांकन की रिपोर्ट की सिफारिशों के अनुरूप रोडमैप विकसित करने के लिए कार्यशाला)	06–08 मार्च, 2019	31	तमिलनाडु, दिल्ली, कर्नाटक और उत्तर प्रदेश
37.	ओआर कर्नाटक	25 – 28 मार्च 2019	32	कर्नाटक

16.10.3 प्रयोगशाला प्रभाग

एनटीआई में प्रयोगशाला को एक राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में नामित किया गया है, जो आरएनटीसीपी के तहत प्रयोगशाला नेटवर्क में थूक, स्मीयर माइक्रोस्कोपी, कल्चर और दवा संवेदनशीलता परीक्षण सेवाओं की गुणवत्ता का आकलन करती है। एनआरएल के रूप में, एनटीआई नौ राज्यों, बिहार, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान और पश्चिम बंगाल में आवंटित प्रयोगशालाओं के नेटवर्क में बलगम स्मीयर माइक्रोस्कोपी की गुणवत्ता का पर्यवेक्षण और निगरानी करता है। एनआरएल प्रयोगशाला कर्मियों को प्रशिक्षित करता है और ड्रग रेसिस्टेंट ट्यूबरकुलोसिस का पता लगाने के लिए राज्य स्तर की प्रयोगशालाओं यानी आईआरएल, मेडिकल कॉलेजों और अन्य निजी प्रयोगशालाओं को कल्चर और ड्रग सस्पेक्टेबिलिटी परीक्षण को मान्यता देने के लिए जिम्मेदार है। इन गतिविधियों के अलावा यह राज्य स्तरीय ड्रग रेजिस्टेंस सर्विलांस (डीआरएस) और डॉट्स प्लस गतिविधियों का भी समर्थन करता है। एनआरएल दो नए एनआरएल की निगरानी भी कर रहा है:

- भोपाल मेमोरियल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, भोपाल स्थित एनआरएल
- क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र भुवनेश्वर स्थित एनआरएल

राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला की गुणवत्ता का परीक्षण विश्व स्वास्थ्य संगठन सुपरा नेशनल रेफरेंस लेबोरेटरीप्रिंस लियोपोल्ड इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन एंटवर्प, बेल्जियम द्वारा किया जाता है।

क. **गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली (क्यूएएस):** आरएनटीसीपी में थूक स्मीयर माइक्रोस्कोपी के लिए क्वालिटी एश्योरेंस (क्यूए) सिस्टम में इंटरनल क्वालिटी कंट्रोल (आईक्यूसी), एक्सटर्नल क्वालिटी असेसमेंट (ईक्यूए) और बाद में लेबोरेटरी सर्विसेज की क्वालिटी इंप्रूवमेंट (क्यूआई) शामिल हैं।

ख. **बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन (ईक्यूए):** ईक्यूएएक ऑन– साइट मूल्यांकन (ओएसई) विजिट द्वारा किया जाता है। ईक्यूएके घटकों में अवसंरचना का मूल्यांकन, प्रयोगशाला कर्मचारियों का पैनल परीक्षण और जिला स्तर पर रैंडम ब्लाइंड री–चेकिंग (आरबीआरसी) से डेटा का विश्लेषण करना शामिल है। ओएसई की विजिट ने ईक्यूएके कार्यान्वयन की समीक्षा करने, विशेष रूप से एलटी / डीटीओ की अनुपलब्धता की समस्या, एसटीडीसी में स्टाफ संरचना, प्रशिक्षण, अभिकर्मकों की गुणवत्ता, संक्रामक सामग्रियों का निपटान और आरबीआरसी गतिविधियों में एसटीडीसी और एसटीसी की सुविधा प्रदान की ।

ग. **प्रयोगशालाओं का प्रत्यायनः** मान्यता प्राप्त माइकोबैक्टीरियोलॉजी प्रयोगशालाएं एमडीआर–टीबी रोगियों के कुशल निदान और अनुवर्ती कार्य हेतु एक

पूर्व–आवश्यकता हैं। इस उद्देश्य के लिए, प्रत्येक राज्य में डीआर–टीबी रोगियों की नैदानिक और अनुवर्ती जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रत्येक राज्य में आईआरएल स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे मामलों के निदान और अनुवर्ती कार्रवाई में भाग लेने के इच्छुक मेडिकल कॉलेजों और निजी क्षेत्र की प्रयोगशालाओं को शामिल करने के लिए भी प्रावधान किया गया है।

घ. जनवरी 2018–31 मार्च 2019 की अवधि के दौरान एनटीआई में संसाधित किए गए नमूने

कुल नमूने (स्पुतम + एक्सडीआर संस्कृति + पीएमडीटी + एनटीएम और ओपी) पंजीकृत हैं	7598
एक्सडीआर संदिग्ध संस्कृति के नमूने पंजीकृत	320
ओपी के लिए पंजीकृत नमूनों की कुल संख्या (एनटीएम के लिए 1)	101
एलपीए (पीएमडीटी) के लिए कर्नाटक से पंजीकृत कुल नमूनों की संख्या	6733
प्राथमिक संस्कृति ओपी + कर्नाटक के 3 जिले–पीपीएमटी के लिए लगाए गए नमूनों की कुल संख्या	6383
कुल नं लाइन जांच परख का प्रदर्शन (पहली पंक्ति)	6897
कुल नं. लाइन जांच परख का प्रदर्शन (11 वीं पंक्ति)	1148
कुल नं. दवा संवेदनशीलता परीक्षण एमजीआईटीका उपयोग करके प्रदर्शन किया	1172
पहचान परीक्षण के लिए निर्दिष्ट नमूनों की संख्या (इम्यूनो–क्रोमैटोग्राफिक टेस्ट)	830
एचपीएलसीके लिए नमूनों की कुल संख्या	31
गुणवत्ता नियंत्रण के लिए बेल्जियम की कुल संस्कृतियों की संख्या प्राप्त हुई	20
ठोस संस्कृति द्वारा दवा संवेदनशीलता परीक्षण की कुल संख्या (एलजे)	20

16.10.4 महामारी विज्ञान और अनुसंधान प्रभाग

महामारी विज्ञान और अनुसंधान प्रभाग की प्रमुख जिम्मेदारी में टीबी और महामारी विज्ञान और (ईआरडी) प्रचालन अनुसंधान अध्ययन करना और टीबी महामारी विज्ञान और प्रचालन अनुसंधान में प्रशिक्षण प्रदान करना शामिल है। इसके अलावा, प्रभागीय प्रमुख–ईआरडी एनटीआई और भारत में संचालित सभी प्रकार के आरएनटीसीपी प्रशिक्षण में एक सुविधा प्रदाता के रूप में शामिल है। रिपोर्टिंग की अवधि के दौरान प्रभाग की अनुसंधान गतिविधियों को निम्नानुसार संक्षिप्त रूप में दिया गया है:

क. शोध

गहन अध्ययन:

1. बेंगलूरु शहर में चयनित तृतीयक स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में एक्स्ट्रा–पल्मोनरी टीबी के प्रबंधन के लिए मिश्रित तरीकों पर आधारित चिकित्सकों के लिए निदान और उपचार प्रथाओं का मूल्यांकन।

   स्थिति:

   - अध्ययन पूरा हुआ और विश्लेषण कार्य चल रहा है।
   - प्रारंभिक विश्लेषण आधारित पेपर नेटकॉन 2018 में प्रस्तुत किया गया था

2. कर्नाटक राज्य, भारत में ड्रग रेसिस्टेंट ट्यूबरकुलोसिस के निदान के लिए नए एकीकृत एल्गोरिथम का कार्यान्वयन: हम कितना अच्छा काम कर रहे हैं?

   स्थिति

   - कर्नाटक भर में सभी सीबीएनएएटीसाइटों से डेटा संग्रह और डेटा प्रविष्टि का कार्य चल रहा है।

3. बंगलौर शहर में निजी स्वास्थ्य परिचर्या केन्द्रों में टीबी मामलों का पता लगाने की दक्षता और टीबी मामलों के प्रबंधन में सुधार लाना (आरपी/239)

   स्थिति:

   - अध्ययन पूरा किया गया और दस्तावेज जून, 2018 में भारतीय क्षय रोग पत्रिका में प्रकाशित किया गया।

4. बैंगलोर शहर में नए टीबी रोगियों द्वारा निदान हेतु किया गया व्यय आरएनटीसीपी द्वारा अधिसूचित

   स्थिति:

   - अध्ययन पूरा किया गया और रिपोर्ट लेखन का कार्य चल रहा है।

5. कर्नाटक में टीबी–एचआईवी सह–संक्रमित रोगियों में प्रतिकूल क्षय रोग उपचार परिणाम की भविष्यवाणी

   स्थिति:

   - अध्ययन के प्रारूप तैयार किए गए।

- टीसीसी और आईईसी से अनुमोदन प्राप्त हुआ।
- नए दिशानिर्देशों में परिवर्तन के मद्देनजर अध्ययन स्थगित किया गया, 6 महीने के बाद लेने की योजना बनाई गई थी

6. भारत में उप राष्ट्रीय पल्मोनरी तपेदिक प्रचलन सर्वेक्षण, 2006 – 2012: समान रूप से संचालित किए गए डेटा विश्लेषण के परिणाम

स्थिति:

- पेपर मार्च 2019 में पीएलओएस–वन में प्रकाशित किया गया।

ख. एक्स्ट्राम्यूलर अध्ययन

1. नए पता लगाए गए स्पूटम पोजिटिव पल्मोनरी टीबी रोगियों के परिवार के स्वस्थ सदस्यों में टीबी रोकने में दो टीको वीपीएम 1002 तथा इक्यूवेक (एमडब्ल्यू) की दक्षता एवं सुरक्षा का मूल्यांकन करने हेतु एक चरण–III, रेडमाइन्ड, डबल ब्लाइंड, थ्री आर्म प्लेसबो नियंत्रित परीक्षण (आईसीएमआर/आईटीआरसी/वीएसी/001/2018, संस्करण 1.5 दिनांक 3 अक्टूबर, 2018)

स्थिति:

यह एक चरण III नियामक क्लिनिकल परीक्षण अध्ययन है जो सीडीएससीओ (डीसीजीआई) से मंजूरी प्राप्त है,एनटीआई आईईसी सहमति प्राप्त की गई,कर्मचारियों की भर्ती की गई, बेंगलुरु शहर में टीकाकरण स्थलों की पहचान (जयनगर और केसी जनरल अस्पताल) की गई, उपकरण खरीदे जाने हैं और परीक्षण अस्थायी रूप से मध्य जून 2019 में शुरू होगा।

16.10.5 अनुसंधान और प्रलेखन प्रकोष्ठ (आरडीसी):

रिसर्च डॉक्यूमेंटेशन प्रकोष्ठ एनटीआई के नोडल सेंटर के रूप में भारतीय संदर्भ में प्रकाशित टीबी शोध को डिजिटाइल करने और अपलोड करने की जिम्मेदारी निभा रहा है। अपलोड किए गए शोध लेख, शोध दस्तावेज पोर्टल www.tbresearch-ntiindia.org.in पर उपलब्ध हैं। पोर्टल में निम्नलिखित संस्थानों / संगठन के प्रकाशित टीबी शोध शामिल हैं:

- भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बैंगलोर
- जैव सूचना विज्ञान संस्थान, बैंगलोर
- महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (एमजीआईएमएस), वर्धा
- राष्ट्रीय जनजातीय स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएमआर), जबलपुर
- राष्ट्रीय क्षय रोग अनुसंधान संस्थान (एनआईआरटी), चेन्नै
- राष्ट्रीय क्षय रोग और श्वसन रोग संस्थान (एलआरएस), नई दिल्ली
- राष्ट्रीय जालमा कुष्ठ रोग और अन्य माइकोबैक्टीरियल रोग संस्थान, आगरा
- राष्ट्रीय संचालन अनुसंधान समिति, केंद्रीय टीबी प्रभाग, भारत सरकार
- नेशनल टास्क फोर्स, जोनल टास्क फोर्स और स्टेट टास्क फोर्स ऑफ मेडिकल कॉलेज
- राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान (एनटीआ), बैंगलोर
- नई दिल्ली टीबी सेंटर (एनडीटीबीसी), नई दिल्ली
- राज्य क्षय रोग केंद्र
- भारतीय क्षय रोग संघ (टीएआई)

2018–2019 के दौरान आरडीसी में निम्नलिखित गतिविधियां शुरू की गईं:

- सहयोगी केन्द्रों से प्राप्त और विभिन्न प्रकाशनों यथा इंट जे. ट्यूबर्स एंड एलडी, आईजेएमएम, आईजेएमआर, आईजेटीबी, पीएचए आदि में प्रकाशित भारतीय क्षय रोग अनुसंधान लेखों (71) का डिजिटीकरण और अपलोड करना।
- संस्थागत आचार समिति (आईईसी) की बैठक: 20 वीं, 21 वीं और 22 वीं एनटीआई आईईसी बैठकों के आयोजन में सदस्य सचिव की सहायता की।
- केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) के साथ एनटीआई–आईईसी का पंजीकरण: आरडीसी ने सीडीएससीओ के साथ एनटीआई आईईसी के पंजीकरण के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और निम्नलिखित अपेक्षित दस्तावेजों को तैयार करने में

योगदान दिया और पंजीकरण प्रक्रिया पूरी की:

– पंजीकरण प्रक्रिया के लिए दस्तावेजों के 19 सेट

– एनटीआई–आईईसी की मानक प्रचालन पद्धति (एसओपी)

- एनटीआई बुलेटिनः एनटीआई बुलेटिन के प्रारूप प्रलेख "नीति और प्रक्रिया" संस्करण 1.0 तैयार किया गया। एन.टी.आई. बुलेटिन 2017, 53/1 और 4 के संकलन में प्रकाशन इकाई की सहायता की।
- संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट (2017–2018) के संकलन में प्रकाशन अनुभाग की सहायता की।
- डब्ल्यूएचओ सहयोगी केंद्र के रूप में एनटीआई की वार्षिक रिपोर्ट (2017–2018) के संकलन में मंडल प्रमुखों के साथ समन्वय किया।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, डीएसटी, नई दिल्ली के विज्ञान और प्रौद्योगिकी गतिविधियों को समर्पित संसाधनों पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2018–19 पूरा किया।

16.10.6 निगरानी और मूल्यांकन प्रभाग

वर्तमान में, आरएनटीसीपी की निगरानी गतिविधि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालयके तहत केंद्रीय टीबी प्रभाग द्वारा की जा रही है। एनटीआईकी निगरानी और मूल्यांकन प्रभाग प्रशिक्षित जनशक्ति प्रदान करके विभिन्न राज्यों के केंद्रीय आंतरिक मूल्यांकन के संचालन में सीटीडीको सहायता प्रदान करता है। यह संस्था द्वारा किए गए सभी अनुसंधान कार्यों की सांख्यिकीय आवश्यकताओं के लिए भी सहायता प्रदान करता है।

16.10.7 संचार और सामाजिकी प्रभाग

वैज्ञानिक गैलरी

वैज्ञानिक गैलरी की स्थापना टीबी की सामान्य जानकारी, कार्यक्रम के विकास, एनटीआई द्वारा किए गए शोध और संस्थान के प्रारंभ होने के समय उसकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी के प्रचार–प्रसार के लिए की गई है। स्वास्थ्य और अन्य विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों जैसे डॉक्टरों और सरकारी और निजी क्षेत्र के डॉक्टरों और परा–चिकित्सा कर्मियों और स्वास्थ्य–क्षेत्र के प्रशिक्षुओं की विभिन्न श्रेणियों जैसे आगंतुकों की विविध श्रेणियों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, हमारे पास सूचना के प्रसार के लिए दो तरीके हैं। प्रदर्शन इकाइयो (फोटो डिस्प्ले और स्वास्थ्य शिक्षा पैनल) और इंटरैक्टिव सूचना कियोस्क, नियमित संवेदीकरण कार्यक्रमों के अलावा, जो विभाजन द्व ारा किए जाते हैं।

छात्रों का दौरा

पैरा–चिकित्सा कर्मियों और पैरा–चिकित्सा छात्र एनटीआई के एसीएसएम डिवीजन द्वारा आयोजित नियमित संवेदीकरण कार्यक्रम में भाग लेते हैं। ऐसे छात्रों की कुल संख्या निम्नानुसार है। जीवन विज्ञान के कुल 945 छात्रों और स्कॉलर्स ने 28 बैचों में एनटीआई का दौरा किया और इस दौरान मंडलीय कर्मचारियों द्वारा उन्हें जानकर बनानाः

क्रं. सं.	श्रेणी	छात्रों की संख्या
1	एमएससी (नर्सिंग)	077
2	बीएससी (नर्सिंग)	762
2	डी जी एन एम	025
3	बीएससी (एमआईटी)	025
4	डिप्लोमा हेल्थ इंस्पेक्टर	026
5	चिकित्सा सहायक प्रशिक्षु	030
	छात्रों की कुल संख्या	**945**

16.10.8 प्रशासन प्रभाग

एनटीआईका प्रशासन प्रभाग संस्थान की सभी प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रभाग के अंतर्गत आने वाली पाँच इकाइयाँ हैं– स्थापना, लेखा, छात्रावास, भंडार और परिवहन इकाइयाँ। वर्ष 2018–19 के लिए गैर–योजनागत तथा योजनागत के तहत प्राप्त बजट और व्यय का विवरण इस प्रकार हैः

	बजट अनुमान	व्यय
राजस्व	Rs. 11,20,00,000	Rs. 13,36,61,000
पूंजीगत	Rs. 1,10,00,000	Rs. 1,10,00,000
		अप्रैल, 2018 से मार्च, 2019

वर्ष 2018–19 के लिए संस्थान द्वारा विभिन्न स्रोतों के माध्यम से सृजित राजस्व भारत सरकार की समेकित निधि में जमा किया गया। विवरण नीचे दी गई तालिका में दिया गया है:

वर्ष	राशि (रु.)
2018-2019 (अप्रैल, 2018 मार्च19)	Rs. 2,71,451.00

16.11 नई दिल्ली क्षय रोग केंद्र, नई दिल्ली

नई दिल्ली क्षय रोग केंद्र स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय का सबसे पुराना अनुदान प्राप्त संस्थान है। यह 1940 में टीबी एसोसिएशन ऑफ इंडिया और तत्कालीन भारत सरकार के बीच एक समझौते द्वारा स्वतंत्रता पूर्व युग में स्थापित किया गया था। यह टीबी और श्वसन रोगों के क्षेत्र में निदान, उपचार, प्रशिक्षण, शिक्षण और अनुसंधान के लिए मान्यता प्राप्त एक शीर्ष संस्थान है। वर्ष 2005 में, केंद्रीय क्षय रोग प्रभाग ने नई दिल्ली क्षय रोग केंद्र को फुफ्फुसीय रोगों और तपेदिक के रोगियों के लिए रेफरल केंद्र के रूप में कार्य करने के अलावा।राज्य क्षय रोग शिक्षण और प्रदर्शन केंद्र और दिल्ली राज्य के लिए मध्यवर्ती संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में नामित किया गया है।

वर्ष 2018–19 के दौरान गतिविधियों का मुख्य आकर्षण निम्नानुसार हैं:

i. **नैदानिक गतिविधियाँ**: केंद्र पड़ोसी राज्यों और निजी चिकित्सकों से रैफर किए गए श्वसन रोग टीबी रोगियों के लिए एक रेफरल ओपीडी चलाता है। यह विशेष क्लीनिक (टीबी और मधुमेह, सीओएडी क्लिनिक) भी चलाता है। ओपीडी में, सरकारी और निजी स्वास्थ्य परिचर्या प्रदाताओं द्वारा रैफर किए गए रोगियों को ट्यूबरकुलिन परीक्षण, रेडियोलॉजिकल परीक्षा और परामर्श जैसी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। वर्ष के दौरान 11847 नई ओपीडी (4533 पुरुष और 7314 महिलाएं) और 11,885 (जिनमें से 4381 पुरुष और 7504 महिलाएं) राय और उपचार के लिए यहाँ पुनः आए हैं। 43 मरीजों को डीओटी में इलाज के लिए रखा गया था। कुल 10327 ट्यूबरकुलिन त्वचा परीक्षण किए गए जिन्हें निजी चिकित्सकों और विभिन्न अस्पतालों से रैफर किया गया था। कुल 1914 रेडियोलॉजिकल जाँच की गईं। विशेष क्लिनिक की उपस्थिति 1283 थी।

ii. **शिक्षण और प्रशिक्षण गतिविधियां**: दिल्ली राज्य के लिए राज्य टीबी प्रशिक्षण और प्रदर्शन केंद्र के रूप में एनडीटीबीकेंद्र आरएनटीसीपीके तहत काम करने वाले चिकित्सा और पैरा मेडिकल स्टाफ को प्रशिक्षण और फिर से प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। वर्ष के दौरान 2065 कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया। केंद्र एमएएमसीऔर आर्मी मेडिकल कॉलेज के स्नातक मेडिकल छात्रों और वीपी वेस्ट संस्थान के स्नातकोत्तर एमडी और डीटीडीसी छात्रों को भी शिक्षण प्रदान करता है। संकाय एमडी और डीएनबी छात्रों की थीसिस के लिए सह–पर्यवेक्षण के लिए भी शामिल है। यह 3 महीने की अवधि का टीबी सुपरवाइज़र कोर्स भी चलाता है। टीबी पर्यवेक्षक पाठ्यक्रम के तहत कुल 52 छात्रों को प्रशिक्षित किया गया। केंद्र विभिन्न एमएएमसी, एमपीएच के इंटर्न एनआईसीडी के छात्रोंऔर विभिन्न विश्वविद्यालयों के एमएससीछात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। आरएनटीसीपीऔर क्षय रोग के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए विभिन्न अस्पतालों और कॉलेजों की नर्सें केंद्र में आती हैं। सूक्ष्मजीव विज्ञानी और प्रयोगशाला तकनीशियनों को तीव्र निदान में उन्नत प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया है।

iii. **प्रयोगशाला गतिविधियाँ**: इस वर्ष का मुख्य आकर्षण यह है कि केंद्र की प्रयोगशाला एनएबीएल द्वारा मान्यता प्राप्त है। प्रयोगशाला ने पूरे जीन सीक्वेंसर का भी अधिग्रहण किया है। 2018–19 के दौरान एएफबीऔर डीएसटीके लिए स्मीयर जाँच कल्चर सहित कुल 49,207 प्रयोगशाला परीक्षण किए गए। प्रयोगशाला के कर्मचारियों के प्रशिक्षण और पुनः प्रशिक्षण में प्रयोगशाला भी शामिल थी। 25 जिलों की ऑनसाइट मूल्यांकन दौरे भी किए जाते हैं। 25 चेस्ट क्लीनिक / जिलों में से 17 की पीएमडीटी गतिविधियां निदान और अनुवर्ती कार्रवाई के लिए कवर की गईं।

iv. **निगरानी और पर्यवेक्षण गतिविधियाँ**: एसटीडीसी के रूप में, केंद्र दिल्ली राज्य में आरएनटीसीपीसेवाओं की निगरानी कर रहा है। दिल्ली के 25 छाती क्लीनिकों के त्रैमासिक प्रोग्राम प्रबंधन रिपोर्ट का विश्लेषण और प्रतिक्रिया प्रमुख गतिविधि है। वर्ष के दौरान दिल्ली राज्य के 25 छाती क्लीनिक के 19

आंतरिक मूल्यांकन किए गए। कुल 21 पर्यवेक्षी दौरे किए गए।

अ. **ईसीएचओ क्लिनिकः** केंद्र ईसीएचओ क्लिनिक चलाता है, जहां हर बुधवार को दिल्ली और अन्य राज्यों के जिला टीबी अधिकारियों और अन्य पैरा मेडिकल स्टाफ के लिए एक सत्र आयोजित किया जाता है। एक महत्वपूर्ण विषय पर एक विशेषज्ञ द्वारा एक सिद्धांत प्रस्तुत किया जाता है और पैरामेडिकल स्टाफ द्वारा चर्चा के लिए एक कठिन मामला प्रस्तुत किया जाता है। इसके अलावा, प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग फील्ड कर्मचारियों के प्रशिक्षण और दिल्ली राज्य में आरएनटीसीपी गतिविधियों की समीक्षा के लिए किया जाता है।

vi. **परियोजनाएं और प्रकाशनः** वर्ष के दौरान केंद्र में छह प्रचालनात्मक अनुसंधान परियोजनाएं चल रही हैं। वर्ष के दौरान कुल 16 शोध पत्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। इस वर्ष की मुख्य परियोजनाएँ निम्नलिखित हैं:

- जेलों में टीबी देखभाल के लिए ढांचा
- नई दिल्ली में अंतःशिरा नशीले पदार्थों का उपयोग करने वाले लोगों में क्षय रोग के सक्रिय मामलों का पता लगाने का अभियान।
- टीबी मुक्त रोहिणी परियोजना
- दिल्ली में एमडीआर टीबी रोगियों में परिणाम पर काउंसिलिंग कार्यक्रम का प्रभाव

नई दिल्ली क्षय रोग केन्द्र के कार्यों का सार

मापदण्ड	2018-2019
नए मरीजों का पंजीकरण हुआ	11847
फिर से देखता है	11885
प्रयोगशाला परीक्षण	49207
मंटौक्स परीक्षण	10327
डॉट सेंटर से उपचार लेना	43
रेडियोलॉजिकल परीक्षा	1914
विशेष क्लिनिक में भाग लेना (सी.ओ.ए.डी)	1283
कार्मिक प्रशिक्षित	2065
ईक्यूए के लिए आईआरएल विज़िट	19
छाती क्लीनिक की निगरानी और निगरानी	21
अनुसंधान और प्रकाशन	16

16.12 राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एनसीडीसी)

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एसीडीसी) का मुख्यालय दिल्ली में है और इसकी 8 शाखाएँ हैं जो अलवर राजस्थान), बेंगलुरु (कर्नाटक), कोझीकोड (केरल), कुन्नूर (तमिलनाडु), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), पटना (बिहार), राजमुंद्री (आंध्र प्रदेश) और वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में स्थित हैं।

देश में एनसीडीसी खोलकर एनसीडीसी की उपस्थिति का विस्तार और सुदृढ़ीकरण करने के लिए, 29 राज्यों और 1 संघ शासित क्षेत्र के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को कवर करने के लिए एनसीडीसी की 30 शाखाएँ स्थापित करने का प्रस्ताव है। इसमें राज्य की राजधानी में मौजूदा 8 शाखाओं के उन्नयन और शिफ्टिंग को शामिल किया जाएगा। यह सुदृढ़ीकरण बेहतर रोग निगरानी, अनुसूचना और प्रकोप / प्रतिक्रिया के लिए काम करेगा और भारत को जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में अधिक सक्षम और सुसज्जित करेगा, राज्य स्तर पर जन स्वास्थ्य क्षमता और बुनियादी ढांचे को मजबूत करेगा और पूरे देश को प्रभावी ढंग से कवर करने के लिए एनसीडीसी विशेषज्ञता को सक्षम करेगा। शाखाओं को एक दूसरे और एनसीडीसी मुख्यालय के साथ जोड़ा जाएगा।

संस्थान के मुख्यालय में तकनीकी केंद्र / प्रभाग निम्नलिखित हैं:

- महामारी विज्ञान और परजीवी रोग केंद्र (महामारी विज्ञान विभाग, परजीवी रोग) विभाग
- सूक्ष्म जीव विज्ञान प्रभाग (एड्स एवं संबद्ध रोग तथा जैव प्रौद्योगिकी केन्द्र सहित)
- जूनोसिस प्रभाग और जूनोटिक रोग कार्यक्रम प्रभाग।
- चिकित्सा कीटविज्ञानऔर वेक्टर प्रबंधन केंद्र।
- मलेरिया और समन्वय प्रभाग।
- मेडिकल एंटोमोलॉजी और वेक्टर प्रबंधन के लिए केंद्र, मलेरियोलॉजी और समन्वय प्रभाग (एम एंड सी),
- गैर संचारी रोग केंद्र

- पर्यावरण और व्यावसायिक स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य केंद्र
- एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी)

16.12.1 एनसीडीसी के प्रभाग और कार्यक्रम

क. एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी)

भारत सरकार ने 2004 में सभी राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों में एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी) की शुरुआत की थी, जिसका उद्देश्य विकेन्द्रीकृत प्रयोगशाला को सुदृढ़ बनाना / बनाए रखना था, जिससे आईटीए सक्षम रोग निगरानी प्रणाली, महामारी जनित बीमारियों के लिए रोग की प्रवृत्ति की निगरानी कर सके और त्वरित प्रतिक्रिया दल (आरआरटी) के माध्यम से प्रकोपों का प्रारंभिक चरण पर शीघ्र पता लगा सके।

कार्यक्रम की उपलब्धियां:

- वर्ष 2018 में आईडीएसपी नेटवर्क के माध्यम से राज्यों / जिलों द्वारा महामारी जनित रोगों के कुल 1606 प्रकोपों की सूचना दी गई और उनका उपचार किया गया। वेक्टर जनित, वैक्सीन से रोके जाने वाले और जल जनित रोग के प्रकोपों की तुलना में, कयासनूर वन रोग, क्रीमियन–कांगो हैमरेजिक बुखार जैसे उभरते रोग, मौसमी इन्फ्लुएंजा–ए (एच1एन1), एंथ्रेक्स, ब्रुसेलोसिस इत्यादि का राज्य / जिला निगरानी इकाइयों द्वारा सफलतापूर्वक पता लगाया और समाहित किया गया है।
- घटना आधारित निगरानी को और मजबूत करने के लिए, आईडीएसपी ने रिपोर्ट की और 626 मीडिया अलर्ट सत्यापित किये, जिन्हें वर्ष 2018 में मीडिया स्कैनिंग और सत्यापन सेल के माध्यम से किसी भी असामान्य स्वास्थ्य घटना के लिए स्कैन किए गए थे।
- महामारी जनित रोगों के निदान के लिए जिला प्रयोगशालाओं को चरणबद्ध तरीके से मजबूत किया जा रहा है। 36 राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों में 292 प्रयोगशालाओं को सुदृढ़ीकरण के लिए अनुमोदित किया गया है, जिसमें से 192 प्रयोगशालाएं आईडीएसपी द्वारा अनुशंसित परीक्षणों (31 दिसंबर 2018 तक का डेटा) के अनुसार प्रदर्शन कर रही हैं। इन प्रयोगशालाओं को प्रशिक्षित मानव शक्ति, आवश्यक उपकरण निधि और अभिकर्मकों और उपभोग्य सामग्रियों के लिए प्रति प्रयोगशाला प्रति वर्ष 4 लाख रुपये का वार्षिक अनुदान दिया जा रहा है।
- प्रकोप के दौरान महामारी संबंधी बीमारियों के लिए नैदानिक सेवाएं प्रदान करने के लिए राज्यों में पहचान किए गए मेडिकल कॉलेजों और अन्य प्रमुख केंद्रों में मौजूदा कार्यात्मक प्रयोगशालाओं का उपयोग करके और निकटवर्ती जिलों में उन्हें जोड़ कर एक राज्य आधारित रेफरल प्रयोगशाला नेटवर्क स्थापित किया गया है। वर्तमान में नेटवर्क 23 राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों में कार्यात्मक है जिसमें 118 प्रयोगशालाएं शामिल हैं।
- आईडीएसपी और इसकी राज्य इकाइयों ने इंफ़्लुएंज़ा जैसी रुग्णता और गंभीर तीव्र श्वसन संक्रमण (SARI) के लिए निगरानी बढ़ा दी है, जो एच1एन1 (स्वाइन फ़्लू) सहित मौसमी इन्फ्लूएंजा के निदान के लिए एक अग्रदूत के रूप में कार्य करता है। 12 प्रयोगशालाओं के आईडीएसपी सहायता प्राप्त लैब नेटवर्क परीक्षण, गुणवत्ता आश्वासन, मार्गदर्शन, वायरल परिवहन माध्यमों और नैदानिक अभिकर्मकों को प्रदान करने के संबंध में इन्फ्लुएंजा के लिए प्रयोगशाला सहायता प्रदान कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, आईसीएमआर प्रयोगशालाएं और निजी क्षेत्र की प्रयोगशालाएं इन्फ्लुएंजा के लिए परीक्षण कर रही हैं।
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुरोध पर, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एकीकृत स्वास्थ्य सूचना प्रणाली (आईएचआईपी) नामक वेब सक्षम इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य सूचना प्रणाली को डिजाइन और विकसित किया है। 26 नवंबर, 2018 को सचिव, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण ने आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, ओडिशा, उत्तर प्रदेश, केरल और कर्नाटक में आईएचआईपी के आईडीएसपी के भाग को प्रारंभ किया।
- आईडीएसपी द्वारा प्रबंधित, कार्य–नीतिक स्वास्थ्य संचालन केंद्र (एसएचओसी), एनसीडीसी ने 4 से 6 दिसंबर, 2018 तक डब्ल्यूएचओ मुख्यालय जिनेवा द्वारा आयोजित वैश्विक महामारी तत्परता पर

सिमुलेशन अभ्यास में भाग लिया। इसके अलावा, एनसीडीसी में एसएचओसीको केरल में निपाह वायरस रोग के लिए और केरल में बाढ़ के प्रकोप के लिए पूर्ण पैमाने पर सक्रिय किया गया।

- लखनऊ में 3 से 5 मई तक कार्यक्रम कार्यान्वयन की निगरानी की गई और 5 विस्तृत क्षेत्रीय समीक्षाएं (चंडीगढ़ में उत्तर की, बैंगलोर में दक्षिण की, रायपुर में पूर्व की, अहमदाबाद में पश्चिम की और गुवाहाटी में पूर्वोत्तर की) की गईं।

आईएचआईपी रोल आउट के 12 वें चरण के लिए लक्षित राज्य (12 राज्य)

- पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम, गोवा, उत्तराखंड

ख. महामारी विज्ञान प्रभाग

राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र (एनसीडीसी) दिल्ली महामारी विज्ञान एवं प्रशिक्षण का एक विश्व स्वास्थ्य संगठन सहयोगी केन्द्र है। भारत के विभिन्न राज्यों/संघ शासित क्षेत्र और कुछ पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, भूटान, श्रीलंका, थाइलैंड, तिमोर लेस्ते, मालदीव और इंडोनेशिया के प्रतिभागियों के लिए प्रति वर्ष नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम और अनेक अन्य अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यकलाप संचालित किए जाते हैं। अवधि के दौरान महामारी विज्ञान प्रभाग के अधिकारियों ने संचारी रोगों के प्रकोपों के अतिरिक्त निपाह, मेलियोडोसिसि, काला अजार, एच1एन1, जाकी जैसे मुख्य प्रकोपों की जाँच की और प्राधिकारों को इनकी रोकथाम के उपायों का सुझाव दिया, केरल राज्य को बाढञ के बाद आपदा पश्चात रोग निगरानी की स्थापना करने में सहायता की और त्वरित स्वास्थ्य मूल्यांकन करके राज्य की बाढ़ पश्चात स्वास्थ्य आवश्यकताओं का मूल्यांकन किया। कुंभ के दौरान जनता की भीड़ हेतु प्रयागराज में संचारी रोग निगरानी प्रणाली स्थापित की गई जिसने इस अवसर के दौरान संचारी रोगों के प्रकोप का पता लगाने और रोकथाम में सहायता की। नियंत्रण, जनशक्ति विकास, विभिन्न घटकों/संकेतकों के मूल्यांकन हेतु दिशा–निर्देशों का विकास करने के रूप में विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में तकनीकी सहायता देने के प्रावधान किए।

ग. पर्यावरण और व्यावसायिक स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य

पर्यावरण और व्यावसायिक स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य केंद्र फरवरी 2015 में स्थापित किया गया था और यह स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालयकी ओर से जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण के कारण मानव स्वास्थ्य के मुद्दों का निपटान करने वाली नोडल तकनीकी एजेंसी है।

1. जलवायु परिवर्तन

- राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य कार्य योजना प्रधानमंत्री जलवायु परिवर्तन परिषद के तहत एक स्वास्थ्य मिशन दस्तावेज के रूप में तैयार की गई है। अब सभी राज्य, राज्य नोडल अधिकारी के तहत पर्यावरणीय स्वास्थ्य सेल 'की स्थापना की दिशा में काम कर रहे हैं। राज्य स्वास्थ्य विभाग में जलवायु परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन तथा मानव स्वास्थ्य पर राज्य विशिष्ट कार्य योजना तैयार करने के लिए एक बहु–क्षेत्रीय टास्क फोर्स का गठन पर कार्य कर रहे हैं।
- जलवायु परिवर्तन और मानव स्वास्थ्य कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत चलाया गया है; फरवरी 2019 में आयोजित 6ठीं एमएसजी ने इस नए स्वास्थ्य कार्यक्रम को मंजूरी दी।
- जनवरी 2019 में इंडिया हैबिटेट सेंटर में राष्ट्रीय राज्य जलवायु परिवर्तन एवं मानव स्वास्थ्य कार्य योजना विकास तकनीकी परामर्श आयोजित किया गया।

2. वायु प्रदूषण

- वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार तीव्र श्वसन रुग्णता (एआरआई) की कड़ी निगरानी दिल्ली स्थित छह प्रमुख अस्पतालों/संस्थानों (एम्स, एलएचएमसी, एसजेएच, आरएमएलएच, एनआईटीआरडी, वीपीसीआई) में संचालित की जा रही है। राज्य के स्वास्थ्य विभाग भी इसी तरह की रूपरेखा पर एआरआई मामलों के लिए कड़ी निगरानी शुरू करने की प्रक्रिया में हैं।
- वायु प्रदूषण पर स्वास्थ्य एडवाईजरी जारी की गई और आईईसी तैयार तथा प्रचारित की गई।
- वायु प्रदूषण से होने वाले रोगों के बोझ और वायु

प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभावों का मुकाबला करने में स्वास्थ्य क्षेत्र की भूमिका पर डब्ल्यूएचओ के सहयोग से नई दिल्ली में 3–5 अक्टूबर 2018 तक राष्ट्रीय परामर्श आयोजित किया गया।

- एनसीडीसी ने अक्टूबर 2018 में जिनेवा में वायु प्रदूषण पर विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रथम वैश्विक सम्मेलन में भाग लिया।

3. गर्मी से संबंधित बीमारियाँ

- आईडीएसपी के माध्यम से गर्मी से संबंधित बीमारियों और मौतों की निगरानी की जा रही है।
- भारतीय मौसम विभाग विभाग द्वार प्रभावित राज्यों को जारी दैनिक लू–चेतावनी का प्रचार–प्रसार किया जा रहा है।
- गर्मी के मुद्दों पर स्वास्थ्य एडवाइजरी जारी की गई है और आईईसी तैयार तथा प्रसारित की गई हैं।

घ. गैर–संचारी रोग प्रभाग

गैर–संचारी रोग केंद्र (एनसीडी): केंद्र एनपीसीडीसीएस को तकनीकी सहायता प्रदान करता है, और क्षमता निर्माण, आईईसी नीति निर्माताओं और कार्यक्रम प्रबंधकों को सहमत करने, निगरानी और मूल्यांकन और अनुसंधान में शामिल है। प्रभाग ने भारत के सात उत्तरी राज्यों में राष्ट्रीय एनसीडी निगरानी सर्वेक्षण पूरा किया। प्रभाग के अधिकारियों ने अन्य अधिकारियों के साथ आंध्र प्रदेश के उदानम क्षेत्र में क्रोनिक किडनी रोग की बढ़ती संख्या के कारणों की जांच में भाग लिया। सीओपीडी /अस्थमा प्रबंधन, क्रोनिक किडनी रोग (सीकेडी) प्रबंधन के दिशानिर्देशों की समीक्षा करने और अंतिम रूप देने के लिए और एनएमएचपी के तहत न्यूरो डेवलपमेंट डिसऑर्डर (एनडीडी) के प्रबंधन और निगरानी में सहयोग के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए विशेषज्ञ समूह की बैठकों को बुलाया गया। प्रभाग ने जन स्वास्थ्य महत्व के दिनों, जैसे, वर्ल्ड नो टोबैको डे, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, विश्व हृदय दिवस, विश्व स्वास्थ्य दिवस और इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली में महिलाओं के स्वास्थ्य के मुद्दों पर तकनीकी सत्र आयोजित किए। प्रभाग ने बेसिक लाइफ सपोर्ट (बीएलएस) और एडवांस्ड कार्डिएक लाइफ सपोर्ट (एसीएलएस) के लिए एनसीडीसी, दिल्ली के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एनेस्थेसिया और गहन परिचर्या विभाग, वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल, दिल्ली में प्रशिक्षण आयोजित किया। एनसीडी डिवीजन से जुड़े ईआईएस अधिकारियों ने सफदरजंग अस्पताल में एसीएस (एक्यूट कोरोनरी सिंड्रोम) से ग्रस्त भर्ती रोगियों में अस्पताल–पूर्व और अस्पताल में देरी से संबंधित कारणों पर एक अध्ययन किया।

ङ. माइक्रोबायोलॉजी प्रभाग

1 श्वसन वायरस और टेराटोजेनिक वायरस प्रयोगशाला

- एनसीडीसीमें इन्फ्लुएंजा लैब, आईडीएसपी इन्फअलुएंजालैब नेटवर्क के तहत 12 नेटवर्क प्रयोगशालाओं के बीच नोडल प्रयोगशाला है जो देश भर में एच1एन1 और अन्य प्रकार के इन्फ्लुएंजा वायरस के नमूनों के परीक्षण के लिए जिम्मेदार है। यह दिल्ली और उसके आसपास के अस्पतालों के साथ–साथ कस्तूरबा अस्पताल, जीटीबी अस्पताल नामक 3 बड़ी निगरानी स्थलों से निगरानी सहित नियमित रेफरल परीक्षण करता है। परीक्षण सीडीसी द्वारा अनुमोदित प्रोटोकॉल और अभिकर्मकों का उपयोग करके एच 1 एन 1 और अन्य इन्फ्लुएंजा वायरस के लिए वास्तविक समय आरटी– पीसीआर द्वारा किया जाता है। एनसीडीसी सभी नेटवर्क प्रयोगशालाओं के लिए सीडीसी प्रोटोकॉल के अनुसार किट और रेजिडेंट्स, फंड रिलीज/एमओयू पर हस्ताक्षर करने, प्रत्येक प्रयोगशाला में गुणवत्ता आश्वासन, सभी प्रयोगशालाओं के लिए नमूना रेफरल सेवाओं, प्रयोगशाला जैव सुरक्षा के लिए दिशानिर्देश विकसित करने, नमूना संकलन के संबंध में आईडीएसपी के साथ संपर्क। संग्रह परीक्षण और अनुक्रमण के लिए प्रयोगशालाओं का समर्थन करने के लिए या परिसंचारी तनाव की निगरानी करने के लिए अनुक्रमण के लिए जिम्मेदार है । नेटवर्क लैब नियमित रूप से सूचना और विश्लेषण के लिए अपना डेटा एनसीडीसी को भेज रहे हैं।
- प्रयोगशाला इन्फ्लुएंजा ए और इसके उप प्रकारों यथा सीज़नल एच 3 एन 2, महामारी एच 1 एन 1, एच 5 एन 1 (बर्ड फ़्लू), एच 7 एन 9, इन्फ्लुएंजा बी, मर्स–सीओ टऔर रियल टाइम आरटी–पीसीआर द्वारा अन्य श्वसन वायरस के लिए आणविक नैदानिक सेवाएं प्रदान करती है । इसके अलावा, प्रयोगशाला एलिसा तकनीक का उपयोग करके रूबेला (आईजीजी और

आईजीएम), साइटोमेगालो वायरस, हरपीज सिंप्लेक्स वायरस I और II के लिए सीरोलॉजिकल निदान भी प्रदान करती है।

- जनवरी से दिसम्बर के दौरान इन्फ्लूएंजा निदान के लिए कुल 1409 गले/नाक के स्वाब के नमूने प्राप्त हुए थे। इनमें से 121 नमूने इन्फलुएंजा ए एच1एन1, के लिए और 89 नमूने एच3एन2 के लिए सकारात्मक थे। जनवरी से मार्च 2019 की अवधि के लिए 4305 नमूनों का परीक्षण किया गया, जिनमें से 1698 एच1एन1 के लिए सकारात्मक थे और 5 एच3एन2 के लिए सकारात्मक थे।

2 राष्ट्रीय सूक्ष्मजैवरोधी रेजिस्टेंस रोकथाम कार्यक्रम (एएमआर)

- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत, 12 वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान "राष्ट्रीय सूक्ष्मजैव रोधी रेजिस्टेंस कार्यक्रम" शुरू किया गया जिसे राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र, नई दिल्ली द्वारा समन्वित किया जा रहा है। यह एक चालू योजना है और एएमआर निगरानी कार्यक्रम का एक प्रमुख घटक है। 2018–19 में, 18 राज्यों में कुल 20 प्रयोगशालाओं को शामिल करने के लिए नेटवर्क का विस्तार किया गया। विभिन्न प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ आयोजित की गई हैं: नामतः हूनेट सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके डेटा प्रबंधन और एंटीबायोटिक उपभोग अध्ययन संचालित की गई। क्षमता निर्माण के लिए नेटवर्क लैबों में ऑनसाइट विज़िट भी किए गए और गुणवत्ता डेटा प्रस्तुत करना सुनिश्चित किया गया। भारत ने 2017 के लिए 10 साइटों से वार्षिक एएमआर निगरानी डेटा को ग्लास (ग्लोबल एएमआर सर्विलांस सिस्टम) पर प्रस्तुत किया है। वर्ष 2017 के लिए वार्षिक एएमआर निगरानी रिपोर्ट भी एनसीडीसी वेबसाइट पर अपलोड की गई है और विभिन्न हितधारकों के साथ साझा की गई है। आम जनता के बीच एएमआरपर जागरूकता पैदा करने के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत आईईसी गतिविधियों के रूप में स्कूलों, कॉलेजों और हेल्थ मेला में सार्वजनिक कॉन्क्लेव, पोस्टर और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया गया। देशव्यापी प्रसार के लिए मीडिया सामग्री को अंतिम रूप दिया गया है। कार्यक्रम के तहत 18 साइटों में एंटीबायोटिक की उपभोग का अध्ययन शुरू किया गया है

च. एंटेरो-वायरस प्रभाग

राष्ट्रीय पोलियो प्रयोगशाला और राष्ट्रीय खसरा प्रयोगशाला वाला एंटेरोवायरस प्रभाग पोलियों वायरस पृथक्करण और इंट्राटाइपिक विभेदन एवं खसरा तथा रुबेला सीरोलोजी परीक्षण हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रत्यायित है। वर्ष 2018–19 में प्रयोगशाला को दिल्ली, उत्तराखण्ड, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा से गंभीर फ्लेसिड पेरालाइसिस (एएफपी) मामलों से 13114 स्टूल नमूने और यदा–कदा मध्य प्रदेश से वायरल पृथक्करण एवं रियल टाइम पीसीआर हेतु नमूने प्राप्त हुए तथा रिपोर्ट मिली। एनसीडीसी स्थित राष्ट्रीय पोलियो प्रयोगशाला वायरल पृथक्करण तथा रिलय टाइम पीसीआर हेतु दिल्ली, पंजाब और उत्तर प्रदेश के लिए पर्यावरणीय पोलियो वायरल निगरानी (ईपीएस) की भी सहायता करता है। वर्ष 2018–19 में प्रयोगशाला को सीवेज के 564 नमूने प्राप्त हुए हैं और उनकी रिपोर्ट दी है। ईपीएस के संबंध में प्रयोगशाला पर देश का सबसे अधिक कार्य भार है। संगठन को विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक विशेषज्ञ दल से वायरस पृथक्करण के लिए 90 प्रतिशत अंक और आरटी–पीसीआर हेतु 94 प्रतिशत अंकों के साथ सम्पूर्ण प्रत्यायन स्थिति प्राप्त हुई है। प्रयोगशाला ने पोलियो वायरस हेतु आरटी–पीसीआर के दक्षता परीक्षण में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं और वायरस पृथक्करण के लिए 95 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। प्रयोगशालाखसरे और रुबेला परीक्षण हेतु डब्ल्यूएचओ प्रत्यायित है और यह डब्ल्यूएचओ के सहयोग से खसरा रुबेला निगरानी के अंतर्गत खसरा उन्मूलन परियोजना का एक भाग है। प्रयोगशाला को खसरा की आईजीएम एंटीबॉडी पहचान के 274 नमूने प्राप्त हुए हैं और इसकी रिपोर्ट की है। प्रयोगशाला के विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के एक विशेषज्ञ दल द्वारा 83.8 प्रतिशत अंक के साथ अप्रैल, 2018 महीने में सम्पूर्ण प्रत्यायन स्थिति प्राप्त हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) मुख्यालय के एक दल ने 5–6 मार्च, 2019 को खसरा एवं रुबेला के लिए प्रयोगशाला की जांच की है। प्रयोगशाला ने, एलिसा द्वारा खसरे और रुबेला आईजीएम एंटिबॉडी पहचान के लिए दक्षता परीक्षा में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। प्रयोगशाला पम्प, एपेस्टीन बार वायरस, पर्वो वायरस बी–19, वेर्गसेला जोस्टर वायरस और एंटेरो वायरस जैसे अन्य वायरस वाले संक्रमण के लिए नैदानिक सहायता दे रही है। वर्ष 2018–19 में, प्रयोगशाला को अन्य वायरस के कुल 559 नमूने प्राप्त हुए हैं और इसने उनकी रिपोर्ट दी है।

छ. परजीवी रोग विभाग

यह उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोगों से संबंधित गतिविधियों के साथ जुड़ा हुआ है, जैसे कि गिनी कृमि रोग, मृदा संचरित हेल्मिंथियासिस (एसटीएच) और लसीका फाइलेरिया। विभाग राष्ट्रीय गिनी कृमि उन्मूलन कार्यक्रम और देश में मिट्टी संचरित हेल्मिन्थेसिस के लिए राष्ट्रीय नोडल तकनीकी एजेंसी के रूप में कार्य करता है। वर्ष 2000 में भारत को गिनी कृमि रोग से मुक्त घोषित किया गया था। तत्कालीन स्थानिक राज्यों से मासिक रिपोर्ट के माध्यम से पोस्ट उन्मूलन चरण में गिनी कृमि रोग पर निगरानी रखी जा रही है, गिनी कृमि अफवाहों का सत्यापन और अफवाह रिकॉर्ड करने का वैश्विक उन्मूलन हासिल किया जाता है। विभाग समय–समय पर एसटीएच प्रसार मूल्यांकन सर्वेक्षणों के माध्यम से देश में एसटीएच रोग के बोझ की निरंतर निगरानी कर रहा है। प्रमुख एंटी–हेल्मिथिक दवाओं की प्रभावकारिता की निगरानी, अन्य कमजोर आबादी समूहों के लिए एसटीएच निवारक कीमोथेरेपी के दायरे का विस्तार करना और नई नैदानिक तकनीकों पर शोध भी विभाग की प्रमुख गतिविधियां हैं। इसके अलावा, चिकित्सा और अर्ध–चिकित्सा राज्य स्वास्थ्य कर्मियों के क्षमता निर्माण के माध्यम से देश से फाइलेरिया उन्मूलन के लिए सक्रिय योगदान दिया जा रहा है। 2018–19 में, कोझीकोड, राजामहेंद्रवरम और वाराणसी में तीन एनसीडीसी शाखाओं में क्रमशः 33, 32 और 16 मेडिकल और पैरा–मेडिकल कर्मचारियों के लिए फाइलेरोलॉजी में प्रशिक्षण आयोजित किए गए थे। इसके अलावा, विभाग की तकनीकी देखरेख में इन तीन एनसीडीसी शाखाओं के माध्यम से नियमित रोग और रुग्णता प्रबंधन क्लीनिक के साथ–साथ नैदानिक सहायता (रात्रि रक्त स्मीयर और सीरोलॉजिकल परीक्षा) प्रदान की जा रही है।

ज. मेलेरियोलॉजी एवं समन्वय प्रभाग

यह प्रभाग देश में मलेरिया रोगों और उनके नियंत्रण के क्षेत्र में प्रकोप की जांच, परिचालन अनुसंधान और प्रशिक्षित जनशक्ति विकास के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है। यह मलेरिया संक्रमण के प्रयोगशाला निदान के लिए राज्य सरकारों को नैदानिक सहायता भी प्रदान करता है और स्नातकोत्तर चिकित्सा, नर्सिंग और होम्योपैथिक छात्रों और अन्य पेशेवरों के लिए अल्पकालिक अभिविन्यास/प्रशिक्षण यात्राओं और सम्मेलन आदि का संचालन करता है। 2018 में, 29 अक्टूबर तक, प्रभाग द्वारा अल्पकालिक अभिविन्यास प्रशिक्षण आयोजित किए गए थे, जिसमें विभिन्न संस्थानों के 923 छात्रों को प्रशिक्षित किया गया था। इसके अलावा, 2018 में, अक्टूबर तक, मलेरिया परजीवी के लिए 589 रक्त की जांच की गई और 40 को सकारात्मक पाया गया। (पीवी–40, पीएफ–00, मिश्रित–00)।

झ. चिकित्सा एंटोमोलॉजी और वेक्टर प्रबंधन केंद्र

चिकित्सा एंटोमोलॉजी और वेक्टर प्रबंधन केंद्र को अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के रूप में इसे विकसित करने के लिए पुनर्गठित किया गया है क्योंकि दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में एकत्र सूखे मच्छरों से ड्यूरनेट एलएलआईएन और डेंगू वायरस एंटीजन का फील्ड परीक्षण किया गया है ताकि तथा 1.5 लाख से अधिक कीट के नमूनों के साथ एक एंटोमोलॉजिकल म्यूजियम को बनाए रखने, सार्वजनिक स्वास्थ्य महत्व के वैक्टरों की एक कीट को बनाए रखने, सार्वजनिक स्वास्थ्य महत्व के वैक्टरों के खिलाफ कीटनाशक के विभिन्न योगों की प्रयोगशाला और क्षेत्र मूल्यांकन, तकनीकी सहायता प्रदान करने और प्रशिक्षित जनशक्ति विकसित करने के लिए आसन्न प्रकोपों की भविष्यवाणी की जा सके। वेक्टर–जनित रोगों और उनके नियंत्रण जैसे कि डब्ल्यूएचओ प्रशिक्षण पाठ्यक्रम वेक्टर जीवविज्ञान और नियंत्रण तथा आईडीएसपी द्वारा वित्त पोषित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम टिक, माइट्स और पिस्सू–जनित रोगों पर केंद्र को एनआईसीडी मच्छर प्रूफ कूलर और मच्छर के लार्वा–चिलोडोनेलायूनसिनटा के लिए जैविक नियंत्रण एजेंट के साथ पेटेंट से सम्मानित किया गया है। वर्ष के प्री–मानसून और पोस्ट मानसून अवधि के दौरान डेंगू, पीला बुखार और जीका वायरस के लिए पीओई के 10 अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों और 7 समुद्री बंदरगाहों में एंटोमोलॉजिकल सर्वे किए जा रहे हैं। केंद्र मेडिकल कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को प्रशिक्षण और शिक्षण के उद्देश्य के लिए चिकित्सा महत्व के आर्थ्रोपोड के विभिन्न नमूनों की आपूर्ति करता है। केंद्र विभिन्न राज्यों और संगठनों को वेक्टर जनित रोगों और उनके नियंत्रण के प्रकोप संबंधी निगरानी और निगरानी पर तकनीकी मार्गदर्शन, सहायता और सलाह प्रदान करता है। वेक्टर जनित रोगों पर प्रमुख प्रकोप की जांच डिवीजन

द्वारा की गई है जैसे– अहमदाबाद में जीका का प्रकोप, जगदलपुर में जेई का प्रकोप, मिजोरम में स्क्रब टाइफस का प्रकोप, सोलन, हिमाचल प्रदेश के जेई का प्रकोप,बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश, डेंगू का डेंगू का प्रकोप, दुर्ग, छत्तीसगढ़ में चिकनगुनिया का प्रकोप, छत्तीसगढ़ में चिकनगुनिया का प्रकोप, पलक और मलापुरम, केरल में वीबीडी का आकलन, बरेली और बदायूं, उत्तर प्रदेश में मलेरिया का प्रकोप, जयपुर, राजस्थान में जीका का प्रकोप, भोपाल, मध्य प्रदेश में जीका का प्रकोप और ऋषिकेश, उत्तराखंड में गिनी वर्म का प्रकोप।

ञ. जूनोसिस डिवीजन

प्रभाग देश में प्रकोप की जांच, संचालन अनुसंधान और प्रशिक्षित जनशक्ति और उनके नियंत्रण के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य महत्व के जूनोटिक संक्रमणों की प्रयोगशाला निदान के लिए राज्य सरकारों को नैदानिक सहायता प्रदान की जाती है।

जूनोटिक रोग कार्यक्रम प्रभाग तीन राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के समन्वय की सूची नीचे दी गई है।

- जूनोसिस रोकथाम और नियंत्रण के लिए इंटर–सेक्टरल समन्वय कार्यक्रम
- राष्ट्रीय रेबीज नियंत्रण कार्यक्रम,
- लेप्टोस्पायरोसिस रोकथाम और नियंत्रण कार्यक्रम

ट. एड्स और संबंधित रोग केन्द्र

कार्यकलाप	निष्पादन
1. "किट गुणवत्ता के लिए एनआरएलएस के कंसोर्टियम" के तहत किट का गुणवत्ता नियंत्रण परीक्षण।	एचआईवी, एचबीवी और एचसीवी किट के 22 बैचों मूल्यांकन किया गया।
2. "बाह्य गुणवत्ता मूल्यांकन योजना" (ईक्यूएएस) परियोजना	अगस्त 2018 और मार्च 2019 में लिंक किए गए 13 राज्य संदर्भ प्रयोगशालाओं (एसआरएल) और उनके संबद्ध आईसीटीसी के लिए एचआईवी सेरोलॉजी के लिए प्रवीणता परीक्षण (पीटी) पैनलों की तैयारी और वितरण के 2 दौर पूरे किए गए।
3एचआईवी प्रहरी निगरानी एचएसएस–एएनसी के तहत नमूनों का एचआईवी परीक्षण	563 सिरम नमूनों की जांच की गई
4. एकीकृत परामर्श और परीक्षण केंद्र (आईसीटीसी) में एचआईवी परामर्श और परीक्षण	701 ग्राहकों को सलाह दिया गया और एचआईवी का परीक्षण किया गया
5. सीरोलॉजी, इम्यूनोलॉजी और सामयिक संक्रमण	• एचआईवी सीरो–स्थिति के लिए 80 नमूनों की पुष्टि की गई • 12 नमूनों की एचआईवी –2 स्थिति की पुष्टि • सीडी4 काउंट के लिए 1612 नमूनों का परीक्षण किया गया • सिफलिस के लिए 328 नमूनों का परीक्षण किया गया
6. एनएबीएल संबंधी गतिविधियां	केंद्र ने सफलतापूर्वक एनएबीएल (नेशनल एक्रीडिटेशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लेबोरेटरीज) डेस्कटॉप सर्विलांस आईएसओ 15189: 2012 मानक के अनुसार मेडिकल टेस्टिंग (एचआईवी और सीडी4 परीक्षण) के क्षेत्र में सफलतापूर्वक पूरा किया है।
7. कार्यशाला/जागरूकता गतिविधियां	• आईसीटीसी काउंसलर और तकनीशियन ने 07.04.2018 को दिल्ली विश्वविद्यालय के कैम्पस लॉ सेंटर में विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में एड्स के जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया। • केंद्र ने स्पॉट पोस्टर मेकिंग थीम के साथ "लीव लाइफ पॉजिटिवली" आयोजित किया। विश्व एड्स दिवस (1 दिसंबर 2018) की पूर्व संध्या पर 04.12.2018 को अपने एचआईवी स्थिति को जानें। • केंद्र ने 6 मार्च और 7 मार्च 2019 को लिंक किए गए राज्य संदर्भ प्रयोगशालाओं के लैब तकनीशियनों और तकनीकी अधिकारियों, एसएसीएस के गुणवत्ता प्रबंधकों के लिए "ईक्यूएएस फॉर एचआईवी परीक्षण" पर 02 दिनों की कार्यशाला का आयोजन किया।

ठ. वायरल हेपाटाईटिस प्रभाग

यह प्रभाग वायरल हेपेटाइटिस के लिए नियमित और रेफरल नैदानिक सेवाओं का संचालन करता है, प्रकोप की जांच के लिए प्रयोगशाला सहायता प्रदान करता है, प्रयोगशाला पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान करता है और वायरल हेपेटाइटिस निगरानी का संचालन करता है।

वायरल हेपेटाइटिस के राष्ट्रीय कार्यक्रम के तहत, प्रकोपों का पता लगाना, टाइप–विशिष्ट तीव्र हेपेटाइटिस और प्रवृत्ति जोखिम कारकों के विवरण का वर्णन, कालानुक्रमिक संक्रमित व्यक्तियों के अनुपात का अनुमान, पुराने संक्रमण के बोझ का अनुमान, एचसीसी की घटनाओं का अनुमान और सिरोसिस और हस्तक्षेप के लिए अन्य कार्रवाई योग्य अवसर आयोजित किए जाते हैं। उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट, एपिडेमियोलॉजिस्ट, माइक्रोबायोलॉजिस्ट और एनएसीओ, आईसीएमआर, डब्ल्यूएचओ, सीडीसी के प्रतिनिधियों से युक्त एक तकनीकी संसाधन समूह का गठन किया गया है। देश भर के विशेषज्ञों और नाको, आईसीएमआर, डब्ल्यूएचओ और सीडीसी के प्रतिनिधियों के साथ वायरल हेपेटाइटिस निगरानी के लिए एक प्रारंभिक योजना विकसित की गई थी। परीक्षण प्रयोगशालाओं और चिकित्सकों के लिए निगरानी और परिचालन दिशानिर्देशों की एक विस्तृत योजना भी विकसित की गई है। "वायरल हेपेटाइटिस – द साइलेंट डिजीजः प्रिवेंशन कंट्रोल एंड ट्रीटमेंट गाइडलाइन्स" पर एक उपचार दिशानिर्देश भी प्रकाशित किया गया है।

एचबीएस और एचसीवी की बीमारी के बोझ का आकलन करने के लिए एनएफएचएस में एचएसएस के साथ क्रोनिक निगरानी और हेपेटाइटिस बी और सी के लिए बायोमार्कर को शामिल करना।

ड. जैव प्रौद्योगिकी / आणविक निदान प्रभाग

यह प्रभाग आणविक नैदानिक सेवाएं, आणविक महामारी विज्ञान, विशेष प्रशिक्षण और सार्वजनिक स्वास्थ्य के विभिन्न महत्वपूर्ण महामारी–प्रवण रोगों पर लागू शोध प्रदान करता है।

16.13 केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान (सीआरआई), कसौली

केंद्रीय अनुसंधान संस्थान, कसौली को 3 मई, 1905 को स्थापित किया गया था। यह भारत सरकार के अंतर्गत स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय का एक अधीनस्थ कार्यालय है। केंद्रीय अनुसंधान संस्थान निम्नलिखित गतिविधियों में लगा हुआ है:

क) बैक्टीरिया और वायरल टीके और सीरा का उत्पादन।

ख) नैदानिक रीएजेंटों का उत्पादन और आपूर्ति।

ग) इम्यूनोलॉजी और वैक्सीनोलॉजी के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास

घ) वैक्सीनोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी में शिक्षण और प्रशिक्षण

ङ) प्रतिरक्षाविदों का गुणवत्ता नियंत्रण

वैक्सीन और एंटी–सेरा का विनिर्माण और आपूर्ति

वर्ष (2018–19) के दौरान, (31.03.2019 तक) संस्थान ने संस्थान में निम्नलिखित निर्मित जीवन रक्षक उत्पादों की आपूर्ति की है:

क्र.सं.	वैक्सिन का नाम	स्थापित क्षमता प्रतिवर्ष	उत्पादित मात्रा	मांग	आपूर्ति
1	डिप्थेरिया एंटिटॉक्सिन (एडीएस) 10,000 आईयू (वायल)	10,000	3096	4590	3075
2	एंटी स्नेक वेनम सिरम (एएसवीएस) (लिक्विड) (10एमएल वायल)	10,000	434	284	90
3	एंटिरेबिज सिरम (एआरएस) (5एमएल वायल)	80,000	6315	21,225	2590

सीआरआईकसौली डब्ल्यूएचओके माध्यम से पीले फीवर वैक्सीन का आयात करता है ताकि आम जनता की जरूरत पूरी हो सके। वर्ष 2018–19 में, संस्थान ने 2,04,010 की मांग के लिए1,15,000 खुराक का आयात किया और 1,45,300 खुराक की आपूर्ति की।

संस्थान में डीपीटीसुविधा ने ईजीएमपी मानकों का अनुपालन किया है। उत्पादन और आपूर्ति शुरू करने के लिए नियामक अनुमति के लिए ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया के पास आवेदन किए गए हैं।

संस्थान की अन्य गतिविधियाँ

टीके और एंटीसेरा के निर्माण के अलावा, संस्थान की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां इस प्रकार हैं:–

- गुणवत्ता आश्वासन और गुणवत्ता नियंत्रण गतिविधियां
- राष्ट्रीय साल्मोनेला और कोली केंद्र
- राष्ट्रीय इन्फ्लुएंजा निगरानी केंद्र
- रेबीज अनुसंधान केंद्र
- राष्ट्रीय पोलियो निगरानी प्रयोगशाला
- प्रायोगिक पशु घर
- चिकित्सा उपचार केंद्र और नैदानिक प्रयोगशाला।
- शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियाँ
- एच.पी. विश्वविद्यालय, शिमला के तहत इस संस्थान में एमएससी (माइक्रोबायोलॉजी) कक्षाएं चल रही हैं।
- इस संस्थान में इम्यूनोबायोलॉजिकल एंड एनिमल केयर के उत्पादन में सर्टिफिकेट कोर्स चल रहा है और वर्तमान में भारत सरकार के कौशल विकास कार्यक्रम के तहत 50 अभ्यर्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

16.14 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोलॉजिकल (एनआईबी), नोएडा

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोलॉजिकल (एनआईबी) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन एक स्वायत्त संस्थान है। संस्थान के अधिदेशों में फार्माकोपिया विशिष्टताओं के अनुसार,आंतरिक रूप से आयातित और निर्मित दोनों जैविक और जैव–चिकित्सीय उत्पादों की सुरक्षा, प्रभावकारिता और मानक आपूर्ति सुनिश्चित करना, विनिर्देशों को अंतिम रूप देने में भारतीय और अन्य फार्माकोपिया के साथ सहयोग करना, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के कर्मियों को प्रशिक्षित करना, राष्ट्रीय संदर्भ मानक तैयार करना, जैविक और जैव चिकित्सीय उत्पादों के गुणवत्ता मूल्यांकन के क्षेत्र में किए गए वैज्ञानिक विकास को ध्यान में रखते हुए अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों/संगठनों को प्रौद्योगिकियों के उन्नयन में सहयोग करना शामिल हैं। संस्थान संबंधित क्षेत्रों में भारत में मानकों को लागू करने के लिए निम्नलिखित संयुक्त निरीक्षण के दौरान तकनीकी विशेषज्ञता भी प्रदान करता है:

क. केंद्रीय औषधि मानक और नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) द्वारा गठित अधिकारियों की एक टीम द्वारा विनिर्माण परिसर

ख. राष्ट्रीय जीएलपी अनुपालन निगरानी प्राधिकरण (एनजीसीएमए) द्वारा प्रयोगशालाएं – जीएलपी निरीक्षक।

ग. जानवरों पर प्रयोगों के नियंत्रण और पर्यवेक्षण (सीपीसीएसईए) के उद्देश्य के लिए समिति द्वारा पशु घर।

एनआईबी के प्रयासों को सुविधाजनक बनाने में एनआईबी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (भारत सरकार), केंद्रीय औषधि मानक और नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) और उद्योग से निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन के साथ देश के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण सेवा के लिए अपने जनादेश को पूरा करने के लिए ईमानदारी से प्रयास कर रहा है।

इस वर्ष एनआईबी का उत्कृष्ट प्रदर्शन के बारे में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों में संस्थान की सक्रिय भागीदारी द्वारा विशेष रूप से संबंधित विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) कार्यक्रमों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका के साथ–साथ अन्य प्रख्यात अंतरराष्ट्रीय संगठनों के समर्थन के लिए सहायता प्रदान करते हुए उल्लेख किया गया है ताकि जैविक गुणवत्तता नियंत्रण जांच, गुणवत्तापूर्ण प्रयोगशाला प्रबंधन प्रणाली और हेमोविजिलेंस कार्यक्रम की स्थापना की जा सके। इन सहयोगी गतिविधियों से संस्थान की अंतर्राष्ट्रीय दृश्यता और स्थिति में वृद्धि हुई है।

इस वर्ष संस्थान ने 1809 नमूनों का मूल्यांकन किया है, जिसमें ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स अधिनियम और नियमों के तहत 13 नमूने शामिल हैं। इनमें से, 46 बैच मानक गुणवत्ता (एनएसक्यू) के नहीं पाए गए, इस प्रकार एनएसक्यू नमूने के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा और बढ़ावा देने में संस्थान की भूमिका को उजागर किया गया, यदि परीक्षण किए बिना बाजार में जारी किया गया, तो जन–स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। प्रासंगिक फार्माकोपिया(एस)/ गैर–फार्माकोपियल उत्पादों के लिए निर्माता के विनिर्देशों/ डब्ल्यूएचओ टीआरएस, ईडीक्यूएम बैच सहित अंतर्राष्ट्रीय दिशानिर्देशों के अनुसार मूल्यांकन किया जाता है। एनआईबी की पशु सुविधा ने कुल 10532 छोटे प्रयोगशाला जानवरों अर्थात स्प्रंगडावले चूहों, जी. सूअरों, खरगोशों, विस्टार चूहों का 1216 जैविक नमूनों का परीक्षण करने के लिए उपयोग किया। विभिन्न प्रकार के जैविक परीक्षण करने के लिए एनआईबी की क्षमता 2017–18 के दौरान 209 से बढ़कर इस अवधि के दौरान 245 हो गई है।

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार के जैव–चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के अनुसार जैविक उत्पादों के परीक्षण के माध्यम से उत्पन्न बायोमेडिकल कचरे को अलग किया जाता है। इस वर्ष के दौरान कुल 6023 किलोग्राम प्रयोगशाला अपशिष्ट (लाल, पीले और नीले रंग की श्रेणी में) को अंतिम निपटान के लिए अधिकृत विक्रेता, यूपी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को सौंप दिया गया। एनआईबी के उद्दीपक में कुल 82,356 किलोग्राम का एनआईबी संस्थापित किया गया था, जिसे 2,110 किलोग्राम राख के उत्पादन के लिए यूपी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा कानपुर में चिन्हित स्थल पर अंतिम निपटान के लिए एक अन्य अधिकृत विक्रेता (मेसर्स यूपी वेस्ट मैनेजमेंट प्रोजेक्ट) को सौंप दिया गया था। हर महीने एनआईबी द्वारा उत्पन्न किए गए, अलग किए गए और निपटान किए गए बायोमेडिकल वेस्ट की मात्रा का एक बायोमेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट रिपोर्ट भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन सेल को प्रस्तुत किया जाता है।

अन्य संस्थानों को गुणवत्ता वाले जानवरों (छोटे) की बिक्री के लिए जानवरों पर नियंत्रण और पर्यवेक्षण के प्रयोगों (सीपीसीएसईए) की समिति से 6 जनवरी 2016 के पत्र के तहत आवश्यक अनुमोदन के साथ एनआईबी की पशु सुविधा ने इस वर्ष कुल 3252 प्रयोगशाला जानवरों जिसमें स्प्रैग डावल चूहें, विस्टार चूहें, स्विस चूहें, बीएएलएलबी/ सी चूहें, जी. सूअर शामिल है जिसे दिल्ली–एनसीआर के 25 अन्य अनुसंधान और शैक्षणिक संस्थानों, और 5 अन्य राज्यों अर्थात उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और मध्य प्रदेश को आपूर्ति की है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न वैज्ञानिक गतिविधियों में संस्थान की सक्रिय भागीदारी विशेष रूप से संबंधित विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के कार्यक्रमों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है जो निम्नानुसार हैं:

i. 19 सितंबर 2018 को डब्ल्यूएचओ द्वारा एचआईवी, एचसीवी, एचबीएसएजी और सिफिलिस–इन–विट्रो निदान राख (डब्ल्यूएचओ–सीसी नं. आईएनडी–148) की गुणवत्ता नियंत्रण के लिए एनआईबी की इम्मयूनोडायग्नोस्टिक किट और आणविक नैदानिक प्रयोगशाला को डब्ल्यूएचओ सहयोग केंद्र के रूप में नामित किया गया है। संस्थान के चार वैज्ञानिकों के साथ निदेशक, एनआईबी 13 से 15 दिसंबर, 2018 तक एएमटीजेड–कलाम कन्वेंशन सेंटर, विशाखापत्तनम में आयोजित चिकित्सा उपकरणों के संबंध में "चिकित्सा उपकरणों की बढ़ती पहुंच" पर 4था डब्ल्यूएचओ ग्लोबल फोरम में शामिल हुए। मंच के दौरान, एनआईबी को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव द्वारा डब्ल्यूएचओ सहयोग केंद्र के रूप में इम्मयूनोडायग्नोस्टिक किट और आणविक नैदानिक प्रयोगशाला, एनआईबी घोषित करने वाले प्रमाण पत्र के साथ सम्मानित किया गया।

ii. एनआईबी को 22 नवंबर 2017 को इन–विट्रो डायग्नोस्टिक्स के लिए डब्ल्यूएचओ प्रीक्वालिफिकेशन प्रोग्राम के लिए "सपोर्ट सेल" के रूप में नामित किया गया है। एनआईओ में डब्ल्यूएचओ–पीक्यू सपोर्ट सेल की भूमिका इन–विट्रो डायग्नॉस्टिक्स (आईवीडी) डब्ल्यूएचओ– पीक्यू प्रोग्राम पर भारतीय निर्माताओं को आवश्यक होल्डिंग और मार्गदर्शन प्रदान करना है ताकि उन्हें वैश्विक गुणवत्ता मानकों को पूरा करने में सक्षम बना सके तथा आईवीडी उद्योग का पैमाना और परिमाण के साथ डब्ल्यूएचओ की अपेक्षाओं के अनुरूप गुणवत्ता और प्रलेखन गतिविधियों के मामले का सामना कर रहा है। सपोर्ट

सेल के रूप में एनआईबी में आईवीडी निर्माताओं को तकनीकी विशेषज्ञता, क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता प्रदान करने की जिम्मेदारियां हैं। समर्थन सेल ने अभी तक नीचे दी गई दो बैठकों का आयोजन किया है:

(क) पहली बैठक 17 अगस्त, 2018 को आईवीडी के विभिन्न हितधारकों के साथ एनआईबी में आयोजित की गई थी, जिसमें सेल की गतिविधियों का समर्थन करने के लिए एनआईबी द्वारा डब्ल्यूएचओ–पीक्यू के लिए आईवीडी निर्माताओं को विस्तारित करने की आवश्यकता है।

(ख) दूसरी बैठक 13 फरवरी, 2019 को एनआईबी में एसोसिएशन ऑफ इंडियन मेडिकल डिवाइस इंडस्ट्री (एआईएमईडी) और एसोसिएशन ऑफ डायग्नोस्टिक मैन्युफैक्चरर्स ऑफ इंडिया (एडीएमआई) की सक्रिय भागीदारी के साथ हुई थी। बैठक का उद्देश्य पहली बैठक में हितधारकों द्वारा उठाए गए मामलों का हल करना था और साथ ही एनआईबी और डब्ल्यूएचओ द्वारा किए जाने वाले कार्यों के कारण और संबंधित हितधारक संघों की भूमिका पर विचार–विमर्श और निर्णय करना था।

iii. भारतीय फार्माकोपिया में एचपीएईसी–पीएडी द्वारा आईआईबी वैक्सीन की पीआरपी सामग्री के निर्धारण के लिए प्रोटोकॉल को शामिल करने के लिए हितधारकों की दूसरी बैठक 23 मई 2018 को एनआईबी में आयोजित की गई थी और इसमें भारतीय वैक्सीन निर्माता, भारतीय फार्माकोपिया आयोग और एनआईबी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। वर्तमान में भारतीय निर्माता सत्यापन प्रोटोकॉल पर काम कर रहे हैं और एक बार सत्यापन पूरा हो जाने के बाद सत्यापन के लिए सत्यापन डेटा एनआईबी को प्रस्तुत किया जाएगा। प्रस्तावित समयावधि के अनुसार एनआईबी में सत्यापन 30/04/2019 तक पूरा हो जाएगा। एनआईबी डब्ल्यूएचओ और नेशनल सेंटर फॉर इम्मयूनोबायोलॉजिकल रिसर्च एंड इवैलुएशन (सीआरआईवीआईबी), इंस्टीट्यूटो सुपेरियर डी सनिटा (आईएसएस), रोम, इटली को समय–समय पर प्रगति की जानकारी देता रहता है।

iv. हेमोविजिलेंस प्रोग्राम ऑफ इंडिया (एचवीपीआई):

(क) डब्ल्यूएचओ की दक्षिण पूर्व एशिया की क्षेत्रीय कार्यालय (एसईएआरओ) बांग्लादेश में एनआईबी और डब्ल्यूएचओ के कंट्री कार्यालय के समन्वय में, 8 से 12 अक्टूबर, 2018 तक एनआईबी में रक्तदान की गुणवत्ता और सुरक्षा के लिए हीमोविजिलेंस प्रणाली के क्षमता निर्माण पर पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ बांग्लादेश की सरकार के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण में सहयोग किया है।

(ख) दक्षिण पूर्व एशिया (एसईएआरओ) में डब्ल्यूएचओ के क्षेत्रीय कार्यालय ने 19–22 अगस्त 2019 को हीमोविजिलेंस पर विशेष जोर देते हुए सुरक्षित रक्त की वैश्विक रणनीति के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करने के लिए में एनआईबी से रक्त दान सेवाओं के राष्ट्रीय केंद्र बिंदुओं की एक क्षेत्रीय बैठक आयोजित करने का अनुरोध किया है जिसमें दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के 11 सदस्य राज्य एनआईबी में भाग लेंगे।

एनआईबी को दिनांक 22.12.2014 के असाधारण राजपत्र अधिसूचना जीएसआर 908(ई) और दिनांक 15.03.2017 के जीएसआर 250(ई) के तहत ब्लड ग्रुपिंग रिएगेंट्स, इम्यूनोडायग्नॉस्टिक किट, ब्लड प्रोडक्ट्स, रिकॉम्बिनेंट प्रोडक्ट्स, बायोकेमिकल किट, एंजाइम और हॉरमोन, बैक्टीरियल वैक्सीन और वायरल वैक्सीन के लिए सेंट्रल ड्रग्स लेबोरेटरी (सीडीएल) के लिए ड्रग एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट के तहत अधिसूचित किया गया है। संस्थान के चार वैज्ञानिकों को क्रमशः असाधारण राजपत्र अधिसूचना एस.ओ. 2393 (ई), दिनांक 02.09.2015 और जी.एस.आर. 250 (ई)–भाग– II – धारा 3 – उप–धारा (प), दिनांक 15 मार्च 2017 के तहत सरकारी विश्लेषक अधिसूचित किया गया है। जम्मू और कश्मीर राज्य सरकार ने इन एनआईबी वैज्ञानिकों को दिनांक 21 अप्रैल 2017 के एसआरओ 193 के तहत उनके राज्य के लिए सरकारी विश्लेषकों के रूप में अधिसूचित किया है।

एनआईबी को 1 जून, 2018 के राजपत्र अधिसूचना एस.ओ. 2237 (ई) के तहत एचआईवी, एचबीएसएजी और एचसीवी, ब्लड ग्रुपिंग सीरा, ग्लूकोज टेस्ट स्ट्रिप्स, पूरी तरह से स्वचालित विश्लेषक आधारित ग्लूकोज के लिए इन विट्रो डायग्नोस्टिक्स हेतु केंद्रीय चिकित्सा उपकरण परीक्षण प्रयोगशाला (सीएमडीटीएल) नामित किया गया है। केंद्र सरकार ने दिनांक 11.07.2018 के राजपत्र अधिसूचना एस.ओ. 3400 (ई) के तहत एचआईवी, एचबीएसएजी और एचसीवी, ब्लड ग्रुपिंग सीरा, ग्लूकोज टेस्ट स्ट्रिप्स, पूरी तरह से स्वचालित विश्लेषक आधारित ग्लूकोज रिएजेंट के संबंध में मेडिकल डिवाइस टेस्टिंग ऑफिसरों के रूप में एनआईबी के चार सरकारी विश्लेषकों को नामित किया।

एनआईबी में चिकित्सीय उत्पादों, चिकित्सीय किट, रिएजेंट और टीके सहित 120 उत्पादों के लिए 9–10 जून 2018 को पुनर्मूल्यांकन के बाद 2018–2020 की अवधि के लिए एनआईबी आईएसओ/आईईसी 17025: 2005 के अनुसार अपनी एनएबीएल मान्यता स्थिति को बनाए रखा है। मान्यता प्राप्त जैविक परीक्षण 2018–2020 में 140 से बढ़कर 160 और मान्यता प्राप्त रासायनिक परीक्षण 2018–2020 में 86 से बढ़कर 125 तक हो गए हैं।

कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, संस्थान ने 24 मई, 2018 से 11 मार्च, 2021 तक ब्यूरो वेरिटास सर्टिफिकेशन/यूकेएएस (बीएस ओएचएसएएस 18001: 2007) प्रमाणन (सर्टिफिकेट नंबर आईएनडी 18.8672यू / एचएस) वैध पत्र क्रमांक 4090200 दिनांक 04/06/2018 को सफलतापूर्वक हासिल कर लिया है। यह प्रमाणन कार्यस्थल के भीतर स्वास्थ्य और सुरक्षा से जुड़े जोखिमों की पहचान, नियंत्रण और कमी को एक रूपरेखा प्रदान करता है। ओएचएसएएस 18001: 2007 व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रबंधन प्रणालियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त मानक है और यह व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा आकलन विशिष्टता के लिए है।

एनआईबी ने निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय / राष्ट्रीय बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन योजना (ईक्यूएएस)/प्रवीणता परीक्षण में भाग लिया, जिसका उद्देश्य किसी बाहरी एजेंसी द्वारा प्रयोगशाला के प्रदर्शन की जांच करना है।

- रक्त उत्पाद प्रयोगशाला ने ईडीक्यूएम, फ्रांस द्वारा आयोजित फाइब्रिन सीलेंट किट (पीटीएस 164) पर एक अंतर्राष्ट्रीय पीटी अध्ययन में सफलतापूर्वक भाग लिया और संतोषजनक परिणाम प्राप्त किए।
- वैक्सीन प्रयोगशाला ने डब्ल्यूएचओ–एचक्यू, जिनेवा से अग्रेषित नमूनों पर एचपीएईसी–पीएडी द्वारा तरल वैक्सीन प्रस्तुति में हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी कैप्सुलर पॉलीसेकेराइड की पीआरपी सामग्री के निर्धारण – प्रवीणता परीक्षण अध्ययन में भाग लिया है।
- इम्यूनोडायग्नॉस्टिक किट प्रयोगशाला ने नेशनल सेरोलॉजी रेफरेंस लैबोरेटरी (एनएसआरएल) – ऑस्ट्रेलिया द्वारा आयोजित हेपाटाईटिस सीरोलॉली के लिए अंतर्राष्ट्रीय ईक्यूएएस, एचआईवी सीरोलॉजी और सिफिल्स सीरोलॉजी में हर तीन माह में सफलतापूर्वक भाग लिया।
- जैव रसायन किट प्रयोगशाला नामांकित है तथा क्लीनिकल बायोकेमिस्ट्री क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज, वेल्लोर के विभाग द्वारा संचालित रसायन विज्ञान प्प (ग्लूकोज, कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स) में के लिए एसीबीआई/सीएमसी बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन योजना (ईक्यूएएस) –2018 और 2019 में सफलतापूर्वक भाग लिया।

इंसुलिन मानव आईपीआरएस के लिए राष्ट्रीय संदर्भ मानक और 4–संदर्भ प्रदर्शन सेरा पैनल्स अर्थात एचआईवी, एचबीएसएजी, एचसीवी और सिफलिस के अलावा, एनआईबी ने इंसुलिन लिस्प्रो आईपीआरएस के लिए राष्ट्रीय संदर्भ मानक तैयार किए हैं। संस्थान अप्रैल 2019 के महीने में एंटी–ए और एंटी–बी ब्लड ग्रुपिंग रीएजेंट की न्यूनतम क्षमता के लिए राष्ट्रीय संदर्भ मानक जारी करेगा।

एनआईबी केवैज्ञानिकों ने निम्नलिखितपोस्टर प्रस्तुत किए:

- "नैनोमेडिकल साइंसेज– आईएसएनएससीओएन–2018 पर 6वीं विश्व कांग्रेस में" विज्ञान भवन, नई दिल्ली में "हेल्थकेयर अनुप्रयोगों में नैनो–प्रौद्योगिकी–एक गुणवत्ता नियंत्रण परिप्रेक्ष्य", 7 से 10 जनवरी, 2019 तक "केमिस्ट्री–बायोलॉजी इंटरफेस 2019" और "मानव जीवन के भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए सम्मेलन"। यह अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम भारत में पहली बार भारत के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के साथ–साथ नोबेल पुरस्कार विजेताओं सहित भारत और विदेशों से बहुत बड़ी संख्या में

भाग लेने के लिए आयोजित किया गया था। सार को अमूर्त की पुस्तक में प्रकाशित किया गया है, जो इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्टिफिशियल सेल्स नैनोमेडिसिन और बायोटेक्नोलॉजी के जर्नल का पूरक है।

- 17 से 20 जनवरी 2019 तक "बायोलॉजिकल ट्रांजैक्शंसः अणु से जीव 2019 (बीटीएमओ 2019)"कार्यक्रम में डायग्नोस्टिक में मशीन लर्निंग और कम्प्यूटर विजन पर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलुरु।

एनआईबी इनोवेशन एंड ट्रांसलेशनल रिसर्च डिवीजन–इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर),नई दिल्ली के सहयोग से निर्माता को उत्पाद डिजाइन के संबंध में मार्गदर्शन दे रहा है, उन्हें डिवाइस के परीक्षण मापदंडों और उनकी विशिष्टताओं और स्वीकृति की सीमाओं के बारे में संवेदनशील बनाता है। उत्पाद विकास के चरण के दौरान जैव रासायनिक किट प्रयोगशाला के साथ स्वदेशी निर्माताओं का यह सहयोग, गुणवत्ता मानकों के बारे में उन्हें संवेदनशील बनाएगा और अगले स्तर पर जाने के लिए उनकी तैयारियों को विकसित करेगा।

इसके अलावा, एनआईबी ने विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक और नियामक एजेंसियों के साथ संबंध स्थापित किए हैं और इसके वैज्ञानिकों ने निम्नलिखित गतिविधियों का प्रदर्शन किया है:

- दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रीय प्रत्यायन प्रणाली (एसएएनएएस), दक्षिण अफ्रीका की टीम के एक विशेषज्ञ सदस्य और ओरल पोलियो वैक्सीन, खसरा वैक्सीन और येलो फ़ेस वैक्सीन के लिए 26 फरवरी 2019 को 'आईएसओ:17025:2017 प्रत्यायन' के अनुसार दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रीय नियंत्रण प्रयोगशाला (एसएएनसीएल) के डेस्कटॉप निगरानी लेखा परीक्षा में सहायता प्रदान की गई।
- वक्ताओं ने:
  - क 2 से 6 जून, 2018 तक आईएसबीटी टोरंटो कनाडा की 35 वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसमें कांग्रेस के दौरान एक प्रस्तुति "हीमोविजिलेंस योजना पेश करने का भारतीय भारतीय अनुभव" दिया गया था।
  - ख डब्ल्यूएचओ वेस्टर्न पैसिफिक रीजन (डब्ल्यूपीआरओ) – 28 जून 2018 को नेशनल कंट्रोल लेबोरेटरी (एनसीएल) वर्कशॉप, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फूड एंड ड्रग सेफ्टी इवैल्यूएशन (एनआईएफडीएस), साउथ कोरिया जिसमें "एनआईबी, भारत में इम्युनोग्लोबुलिन पर वर्तमान विचार" पर एक व्याख्यान दिया गया था।
  - ग ताइपेई, ताइवान में 09 और 10 जुलाई, 2018 को "इन–विट्रो डायग्नोस्टिक डिवाइस रेगुलेशन" पर सम्मेलन, जिसमें ताइवान एफडीए के अनुरोध पर ताइवान में 10 जुलाई, 2018 को "भारत में इन–विट्रो डायग्नोस्टिक विनियमन पर अपडेट" पर एक व्याख्यान दिया गया था।
- जापान में 21 से 29 जनवरी, 2019 तक आयोजित सार्क देशों के लिए (जेईएनईएसएसवाईएस 2018) जापान–पूर्व एशिया नेटवर्क ऑफ एक्सचेंज फॉर स्टूडेंट्स एंड यूथ्स 2018 के दूसरे बैच के लिए युवा डॉक्टरों/वैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं की श्रेणियों के तहत संकाय के रूप में नामित एक एनआईबी वैज्ञानिक को विदेश मंत्रालय/जापान सरकार द्वारा भारत से 13 अंतिम उम्मीदवारों (06 संकायों और 07 छात्रों) में से एक के रूप में चुना गया। उन्होंने "स्वास्थ्य" विषय के तहत कार्यक्रम में भाग लिया, जो भावी मित्रता और सहयोग के लिए एक आधार का निर्माण कररेगा।
- आईसीएमआर द्वारा नामित एक एनआईबी वैज्ञानिक ने 18 से 22 फरवरी 2019 तक बांडुंग, इंडोनेशिया में पोलियो वायरस प्रयोगशाला के लिए डब्ल्यूएचओ सिरो गैप III कार्यान्वयन प्रशिक्षण में भाग लिया। यह प्रशिक्षण डब्ल्यूएचओ ने ग्लोबल पोलियो उन्मूलन पहल (जीपीईआई) भागीदारों के साथ मिलकर प्रदान किया था और जंगली पोलियोवायरस के प्रकार–विशिष्ट उन्मूलन और मुख पोलियो वैक्सीन के उपयोग के क्रमिक समाप्ति के बाद पोलियोवायरस सुविधा से जुड़े जोखिम को कम करने के लिए रिस्क्रेन बायोरिस्क प्रबंधन के साथ सहयोग किया गया।
- भारतीय हीमोविजिलेंस कार्यक्रम (एचवीपीआई) की

अध्यक्षता करने वाले एनआईबी वैज्ञानिक को अब अंतर्राष्ट्रीय हीमोविजिलेंसनेटवर्क (आईएचएन) बोर्ड के सचिव के रूप में पद नामित किया गया है।

- जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी) के अनुरोध पर एनआईबी के वैज्ञानिक फर्स्ट हब अर्थात फेसिलिटेशन ऑफ इनोवेशन एंड रेग्युलेशन्स फॉर स्टार्ट अप्स एंड इनोवेटर्स की बैठकों में भाग लेते हैं और विशेषज्ञ जानकारी देते हैं और स्टार्टअप्स / इनोवेटर्स से पूछे गए प्रश्नों का जवाब देते हैं।

निब भारत के हीमोविजिलेंसकार्यक्रम (एचवीपीआई) के लिए राष्ट्रीय समन्वय केंद्र हैंऔर उक्त कार्यक्रम देश भर में 10 दिसंबर 2012 को शुरू किया गया था। प्रतिकूल संक्रमण प्रतिक्रियाओं की रिपोर्टिंग के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए इस वर्ष 05 सीएमईऔर 05 राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाएं आयोजित की गईं। देश भर में एनआईबीके एचवीपीआईडिवीजन द्वारा आयोजित इन सीएमई / कार्यशालाओं के दौरान रक्त बैंक अधिकारियों, चिकित्सकों, नर्सों, रक्त दान प्रेरकों और रक्त बैंक तकनीकी कर्मचारियों सहित कुल 1538 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया था।

"प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना" के तहत और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के सहयोग से संस्थान राष्ट्रीय कौशल विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम और देश में रक्त बैंकिंग सेवाओं को मजबूत बनाने के लिए बायोलॉजिकल गुणवत्ता नियंत्रण पर व्यवहारिक प्रशिक्षण आयोजित करता है। इस वर्ष के दौरान 460 से अधिक कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया है, जिनमें छात्र, ब्लड बैंक के अधिकारी, और विनिर्माण इकाइयों से तकनीकी कार्मिक शामिल हैं। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षकों नामतः राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के माध्यम से ब्लड बैंक के अधिकारियों, राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (एनआईपीईआर) / हिमाचल प्रदेश, सिलचर, गुवाहाटी और श्री ऊटी, मैसूर के विश्वविद्यालयों के माध्यम से स्नातकोत्तर छात्रों विनिर्माण इकाइयों से तकनीकी कार्मिक और विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। एनआईबीअप्रैल 2019 में देश के आदिवासी क्षेत्रों अर्थात छत्तीसगढ़ और झारखंड (बस्तर विश्वविद्यालय और संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ और विनोबा भावे विश्वविद्यालय, झारखंड) के स्नातकोत्तर छात्रों के लिए राष्ट्रीय कौशल विकास और व्यवहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है।

एनआईबीने 1 नवंबर से 3 नवंबर, 2018 तक यात्री निवास, भगवती नगर, जम्मू में प्रदर्शनी 'राइज़ इन जम्मू एंड कश्मीर 2018' में भाग लिया , जहां 45 राष्ट्रीय संस्थानों / संगठनों ने राष्ट्र के समक्ष सेवाओं के अपने संबंधित क्षेत्रों का प्रदर्शन किया तथा छात्रों और आम जनता के साथ बातचीत की। एनआईबी की टीम ने अपने बहुआयामी क्रियाकलापों अर्थात जैविकों के क्षेत्र में कैरियर और प्रशिक्षण के अवसरों का प्रदर्शन किया। एनआईबी का स्टाल, आकर्षण का केंद्र था क्योंकि उन्होंने मोबाइल ऐप आधारित प्वाइंट ऑफ केयर ब्लड ग्लूकोज की मॉनिटरिंग करने वाले उपकरणों का प्रदर्शन किया था। आगंतुकों को सर्वाइकल कैंसर के निदान में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस) के नवीनतम अनुप्रयोगों के बारे में भी बताया गया।

बजट और वित्त

वित्तीय वर्ष 2018–19 के दौरान, स्वीकृत बजट अनुमान (बीई) के अंतर्गत आवंटन 41.79 करोड़ रुपये के लिए था और संशोधित अनुमान (आरई) के अंतर्गत 39.05 करोड़ रुपये का अनुमोदन किया गया था। । संस्थान ने विभिन्न स्रोतों यानी, विभिन्न जैव उत्पादों के नमूनों के मूल्यांकन के लिए परीक्षण शुल्क/प्रभारों, विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों से प्राप्त प्रशिक्षण शुल्क, छात्रावास और गेस्ट हाऊस के लिए प्रयोक्ता प्रभार और बचत बैंक खाता पर ब्याज आदि के माध्यम से 13.60 करोड़ (जीएसटी सहित) का कुल राजस्व अर्जित किया।

संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैं: –

विवरण	राशि (करोड़ रु। में)
बजट अनुमान (बीई)	41.79
संशोधित अनुमान (आरई) / अंतिम अनुमान	39.05
वर्ष के दौरान व्यय (लगभग)	37.11
सकल राजस्व अर्जित (लगभग)	13.60

16.15 बीसीजी वैक्सीन लैबोरेटरी, गुइंडी

बीसीजी वैक्सीन प्रयोगशाला, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का एक अधीनस्थ कार्यालय है जिसे बीसीजी वैक्सीन के निर्माण और आपूर्ति के लिए 1 मई 1948 को स्थापित किया गया था। संस्थान निम्नलिखित क्रियाकलापों में शामिल है:

- बाल्यकाल में क्षयरोग और क्षयरोग के कारण मेनिनजाइटिस के नियंत्रण के लिए भारत सरकार के यूआईपी के लिए फ्रीज ड्राइड बीसी वैक्सीन (10 खुराक) का निर्माण और आपूर्ति
- मूत्राशय के कार्सिनोमा के लिए फ्रीज ड्राइड बीसीजी कैंसर थेराप्युटिक वैक्सीन (40मि.ग्रा.) का निर्माण और आपूर्ति ।

बीसीजीवैक्सीन के निर्माण के लिए स्थापित नया सीजीएमपीसुविधा केंद्र :

- नए सीजीएमपीसुविधा केंद्र में उत्पादित छह स्थिरता (कनसिस्टेंसी) बैचों के इन–हाउस गुणवत्तानियंत्रण परीक्षण किए गए थे और ये भारतीय फार्माकोपिया की आवश्यकता के अनुरूप पाए गए थे।
- केंद्रीय औषधि प्रयोगशाला, कसौली ने 27.06.2018 को प्रमाणित किया है कि नमूने मानक गुणवत्ता के थे।
- सुगमपोर्टल के माध्यम से विपणन के प्राधिकार के लिए ऑनलाइन आवेदन 11.2.2019 को पूरा हो गया है।
- बीसीजी वैक्सीन के लिए ग्रांट ऑफ लाइसेंस (निर्माण और बिक्री) की प्राप्ति पर, इसका व्यावसायिक उत्पादन शुरू किया जाएगा।

बीसीजीवीएल में किए गए शैक्षणिक क्रियाकलाप:

- बीसीजीवीएल सरकारी / निजी कॉलेजों और मद्रास विश्वविद्यालय से माइक्रोबायोलॉजी, बायो केमिस्ट्री और बायो–टेक्नोलॉजी संकाय में स्नातकोत्तर और स्नातकछात्रों के लिए इनटर्नशिपप्रशिक्षण प्रदान करता है । यह प्रशिक्षण एक महीने की अवधि के लिए है जो बीसीजी वैक्सीन के उत्पादन और परीक्षण पहलुओं की रूपरेखा पर प्रतिभागियों को जागरुक बनाता है। वर्ष 2018–2019 के लिए, बीसीजीवीएल ने 16 पीजी और 9 यूजी छात्रों के लिए इनटर्नशिप प्रशिक्षण प्रदान किया है ।
- माइक्रोबायोलॉजी और बायोटेक्नोलॉजी के 36 पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों ने बीसीजी वैक्सीन के उत्पादन पर अभिमुखी कार्यक्रम के लिए वर्ष 2018–19 में बीसीजीवीएल का एकदिवसीय दौरा किया। ये शैक्षणिक क्रियाकलाप इस क्षेत्र में छात्रों को ज्ञान और अनुभव प्रदान करती हैं जिससे भारत सरकार के कौशल विकास कार्यक्रम में योगदान मिलता है।

16.16 भारतीय पाश्चर संस्थान (पीआईआई), कुन्नूर

भारतीय पाश्चर संस्थान, कुन्नूर को 6 अप्रैल 1907 को दक्षिण भारत के पाश्चर संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था और इस संस्थान ने भारतीय के पाश्चर संस्थान (सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत) के रूप में एक नया जन्म लिया और इसने 10 फरवरी, 1977 से स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय के रूप में कार्य करना शुरू किया संस्थान के मामले एक शासी निकाय द्वारा देखे जा रहे हैं।

यह संस्थान टीकों के डीपीटी समूह के टीकों और टिशू कल्चर एंटी रैबीज (टीसीएआर) के उत्पादन में शामिल रहा है ।

वर्तमान क्रियाकलाप:

- नई जीएमपी (गुड मैन्युफैक्चरिंग प्रैक्टिस) मानकों के अनुसार डीपीटी सुविधा केंद्र को 149.16 करोड़ रुपये के कुल गैर–आवर्ती व्यय के साथ स्थापित किया गया था।
- नए डीपीटी सुविधा केंद्र में कठिनाई वाले बिंदुओं पर ध्यान देते हुए, निष्पादन अर्हताओं संबंधी क्रियाकलाप, ट्रायल बैच उत्पादन और प्रक्रिया का वैधीकरण क्रियान्वित किए जाने हैं।

अन्य क्रियाकलाप :

1907 में शुरू होने के बाद से पीआईआई, कुन्नूर रेबीज फाईलैक्सिस के लिए एक एंटी–रैबीज क्लिनिक चला रहा है।

- पीआईआई, कुन्नूर भी आम जनताके लिए रैबीज डायग्नोस्टिक लैब चला रहा है । रेबीज संक्रमण से सुरक्षा के लिए टीकाकरण के बाद सेरा रूपांतरण का आकलन करने के लिए रेबीज को बेअसर करने वाले एंटीबॉडी परीक्षण के लिए लगभग 165 सीरम नमूने प्राप्त किए गए थे।

- विश्व रेबीज दिवस की स्मृति में 28 सितम्बर 2018 को मनाए गए विश्व रेबीज दिवस के अवसर पर जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें स्कूली बच्चों के लिए ड्राइंग, निबंध लेखन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

शैक्षणिक क्रियाकलाप

- 12 शोधार्थी पीएचडी कर रहे हैं, जिनका पाठ्यक्रम, भारथिअर विश्वविद्यालय, कोयंबटूर से संबद्ध है। चालू वर्ष के दौरान उच्च प्रभाव वाली पत्रिकाओं में रैबीज पर 4 प्रकाशन प्रकाशित किए गए हैं।
- शोधार्थी अपने पीएचडी के पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में नवीन दृष्टिकोण अपनाते हुए रैबीज, डिप्थीरिया और पर्टुसिस के पुनः संयोजक (रीकॉम्बीनेंट) टीके विकसित कर रहे हैं।
- विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रों को वैक्सीन उत्पादन, टीकाकरण प्रक्रियाओं, स्वास्थ्य देखभाल आदि के बारे में जागरूक बनाने के लिए औद्योगिक दौरे का आयोजन किया जाता है।

16.17 सीरोलॉजी संस्थान, कोलकाता

इंस्टीट्यूट ऑफ सीरोलॉजी, कोलकाता की स्थापना वर्ष 1912 में हुई थी और यह स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य करता है । संस्थान की भूमिका निम्नानुसार है:

- विभिन्न जैविक प्रदर्शित जीवों की प्रजातियों की उत्पत्ति के निर्धारण के लिए फॉरेंसिक सीरोलॉजी में विशेषज्ञता।
- वीडीआरएल एंटीजन, प्रजाति विशिष्ट एंटीसेरा, एंटी एच लेक्टिन जैसे गुणवत्तापूर्ण नैदानिक अभिकर्मकों का उत्पादन जिनकी सरकारी और गैर–सरकारी संस्थानों को आपूर्ति की जाती है।
- नाको के तहत क्षेत्रीय एसटीआई संदर्भ प्रयोगशाला जो पश्चिम बंगाल के आईसीटीसी के प्रयोगशाला तकनीशियनों के प्रशिक्षण और एसटीआई के निदान हेतु डब्ल्यूबीएसएसीएस की सहायता करती है ।
- वीडी सीरोलॉजी सेक्शन पश्चिम बंगाल के विभिन्न मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में सिफलिस के लिए परीक्षण सुविधाएं प्रदान करता है।
- डब्ल्यूएचओऔर एनपीएसपीके तहत राष्ट्रीय पोलियो प्रयोगशाला द्वारा पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र और बिहार, झारखंड के कुछ हिस्सों से एएफपीमामलों के मल के नमूनों से पोलियो वायरस को अलग करना। कोलकाता के कुछ नगर निगम क्षेत्रों के पर्यावरणीय नमूनों (सीवेज वॉटर) से पोलियो वायरस को अलग करना ताकि पीसीआर तकनीक का उपयोग करके आईटीडी प्रयोगशाला द्वारा पोलियो वायरस पर नजर रखी जा सके। और इसका इंट्राटाइपिक वर्गीकरण किया जा सके।
- पश्चिम बंगाल, झारखंड, उड़ीसा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह से खसरा और रूबेला की सीरोलॉजिकल डिटेक्शन के लिए राष्ट्रीय खसरा प्रयोगशाला।

वर्ष 2018–19 के दौरान उपलब्धियां:

- **वीडी सीरोलॉजी:** सिफलिस के लिए 2884 रक्त नमूनों का परीक्षण किया गया।
- **फोरेंसिक सीरोलॉजी:** प्रजातियों की उत्पत्ति और समूह के निर्धारण के लिए 5400 एक्जिविटों का परीक्षण किया गया।
- **बीजीआरसी संक्शन:** 4300 एंप्यूल एंटी एच लेक्टिन का उत्पादन किया गया था और 4665 एंप्यूल की विभिन्न फोरेंसिक प्रयोगशालाओं को आपूर्ति की गई।
- **एंटीबॉडी संक्शन:** 3585 एंप्यूल एंटीसेरा का उत्पादन किया और 3522 एंप्यूल विभिन्न राज्य और केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाओं को आपूर्ति की गई।
- **खसरा प्रयोगशाला:** 3792 नमूने प्राप्त किए गए और खसरे के लिए जांचे गए और रूबेला के लिए किया गया 2230 नमूनों का परीक्षण किया गया।
- **गुणवत्ता नियंत्रण:** मामलों के 86 लोट प्राप्त किए गए और इनका परीक्षण किया गया।
- **राष्ट्रीय पोलियो प्रयोगशाला:** 12414 मल के नमूनों का परीक्षण एनपीवी और वीडीपीवी के लिए और 325 नमूनों का पर्यावरणीय निगरानी के लिए परीक्षण किया गया।
- एंटीजेन प्रोडक्शन सेक्शन: वी.डी.आर.एल. एक एंटीजन उत्पादन यूनिट ने 4170 एंप्यूल एंटीजन का उत्पादन किया और पूरे भारत में अलग–अलग अस्पतालों और एसटीडी क्लीनिकों को 4370 एंप्यूल एंटीजन की आपूर्ति की ।

एसटीडी/ बैक्टीरियोलोजीसेक्शनः कोलकाता के मेडिकल कॉलेजके एसटीआई क्लीनिकों से विभिन्न प्रकार के एसटीआईके निदान के लिए 13270 परीक्षण किए गए थे

16.18 अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (आईआईपीएस), मुंबई

1958 में अपनी स्थापना के बाद से, जनसंख्या विज्ञान संस्थान, जनसांख्यिकी और स्वास्थ्य के क्षेत्र में शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान आयोजित करता है । विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इसे 1985 में डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा दिए जाने के साथ ही इसका दायरा काफी विस्तृत हो गया है।

16.18.1 शिक्षण

शैक्षणिक वर्ष 2018 –19 के दौरान , संस्थान ने निम्नलिखित पाठ्यक्रमों की पेशकश की (क) जनसंख्या अध्ययन में कला/ विज्ञान स्नातकोत्तर (एम ए / एमएससी (ख) बायो में विज्ञान के जैव – सांख्यिकी और जनसांख्यिकी में विज्ञान स्नातकोत्तर (एमबीडी) (ग) जनसंख्या विज्ञान के मास्टर एमपीएस (घ) जनसंख्या अध्ययन/ जैव – सांख्यिकी और जनसांख्यिकी में मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल) (ड.) जनसंख्या अध्ययन में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) (च) पोस्टडॉक्टोरल फेलोशिप (पीडीएफ)) गैर डिग्री ((छ) स्वास्थ्य संवर्धन शिक्षा में डिप्लोमा (डीएचपीई) तथा (ज) हेल्थ केयर में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा (पीजीडीसीएचसी)।

इन कार्यक्रमों के अलावा, संस्थान मास्टर ऑफ पॉपुलेशन स्टडीज (एमपीएस), एमए (जनसंख्या अध्ययन) और जनसंख्या अध्ययन में डिप्लोमा (डीपीएस) दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रदान करता है।

2017– 18 के दौरान , 38 छात्रों ने जनसंख्या अध्ययन में मास्टर्स ऑफ आर्ट्स/साईंस (एमए/एमएससी) में डिग्री के लिए अर्हता प्राप्त की। 11 छात्रों ने जैव सांख्यिकी और जनसांख्यिकी में मास्टर्स ऑफ साइंस में डिग्री के लिए अर्हता प्राप्त की मास्टर्स ऑफ पॉपुलेशन स्टडीज में डिग्री 41 छात्रों को प्रदान की गई । 58 छात्र जनसंख्या अध्ययन / जैव – सांख्यिकी और जनसांख्यिकी में मास्टर ऑफ फिलॉसफी में डिग्री प्राप्त करने के पात्र थे। इस शैक्षणिक वर्ष के दौरान 24 छात्रों ने जनसंख्या अध्ययन / जैव – सांख्यिकी और जनसांख्यिकी में पीएचडी की डिग्री के लिए सभी आवश्यकताओं को पूरा किया। 21 छात्रों ने स्वास्थ्य संवर्धन शिक्षा में डिप्लोमा (डीएचपीई) प्राप्त किया। जबकि 6 छात्रों ने स्वास्थ्य देखभाल में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पीजीडीसीएचसी) प्राप्त करने के लिए अर्हता प्राप्त की डिस्टेंस लर्निंग के लिए 38 छात्रों को मास्टर्स ऑफ पॉपुलेशन स्टडीज़ (एमपीएस) डिग्री दी गई और 1 छात्र को जनसंख्या अध्ययन में डिप्लोमा दिया गया।

16.18.2 अनुसंधान

संस्थान अपने स्वयं के संसाधनों का उपयोग करके और बाह्य वित्त पोषण के माध्यम से भी अनुसंधान कार्यक्रम आयोजित करता है । बाहरी रूप से वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं आमतौर पर संबंधित एजेंसियों के अनुरोध पर शुरू की जाती हैं । संस्थान में चल रहे प्रोजेक्ट निम्नानुसार हैं:

क. संस्थान द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं
1. पूरी हुई परियोजना

क्र.सं.	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	परियोजना समन्वयक
1.	भारत में जनसंख्या परिदृश्य की दीर्घकालिक संभावना	एफ राम, एल. लादूसिंग, आर. बी. भगत और एस उनीसा
2.	भारत में घरेलू सुविधाओं और परिसंपत्तियों में परिवर्तन : एक जनगणना आधारित अध्ययन	आर. बी. भगत, सुनील सरोदे और लक्ष्मी कांत द्विवेदी
3.	भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में हेल्थ इन्फ्रास्ट्रक्चर और एमसीएच देखभाल	मनोज अलागराजन और एम. गुरूस्वामी
4.	कैंसर से उत्तरजीविता का अप्रत्यक्ष अध्ययन :भारत में एक बड़े पैमाने पर अनुभवजन्य अनुप्रयोग	मुरली धर और बी. पासवान

2. चल रही परियोजनाएँ

क्र.सं.	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	परियोजना समन्वयक
1.	औपनिवेशिक काल में बॉम्बे प्रेसीडेंसी के लिए महत्वपूर्ण दरों का अनुमान	चंदर शकर, एफ राम और टी. वी. शेखर
2.	महाराष्ट्र में व्यापक पोषण सर्वेक्षण पर फोलोअप, 2015 – 18 (सीएनएसएम)	सईद उनिसा और प्रकाश एच. फुलपागरे
3.	भारत में जनसंख्या और विकास के ऐतिहासिक रुझान और पैटर्न : एक जिला स्तरीय विश्लेषण	पी अरोकियासामी, आर. नागराजन, प्रलिप कुमार नरजारी, मनोज अलागराजन, अपराजिता चट्टोपाध्याय, हरिहर साहू, सूर्यकांत यादव
4.	मध्य गंगा मैदान से प्रवास के कारण और परिणाम	अर्चना के. रॉय, आर. बी. भगत, के . सी . दास, सुनील सरोदे, आर.एस . रेशमी
5.	भारत में केवल बेटी वाले परिवार स्तर, रुझान और अंतर	हरिहर साहू और आर. नागराजन
6.	तमिलनाडु में विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए आवास आश्रय में रहने की समान दशाएं: सामाजिक विकास के लिए बनाए गए मॉडल गांव	डी. ए . नागदेव, चंदर शेखर, एस.के. मोहंती और पी. मुरुगेसन
7.	भारत में जेब से खर्च (ओओपीई) और आपातकालीन स्वास्थ्य खर्चों के रुझान	एस. के. मोहंती
8.	उत्तर पूर्व भारत में जनसंख्या वृद्धि और स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति। 1951 से 2011 के दौरान अभिज्ञात जनजातियों के विशेष संदर्भ में,	एच. लुंगडिम, हरिहर साहू और एल. लाडूसिंह

3. नई परियोजनाएं

अकादमिक परिषद ने अगले शैक्षणिक सत्र में प्रारंभ किए जाने वाले दो नए प्रोजेक्टों को मंजूरी दी है :

क्र.सं.	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	परियोजना समन्वयक
1.	भारत में 2011 से 2031 तक जिला स्तर की वार्षिक जनसंख्या का क्विनक्वेनियल आयु वर्ग और लिंग के आधार पर अनुमान	मुरली धर और बी. पासवान
2.	उत्तर प्रदेश में ग्राम और वार्ड स्तर का भू–स्थानिक मानचित्रण	एल. के. द्विवेदी, ए. के मिश्रा और सईद उनीसा

ख. विदेशी एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं

1. पूर्ण प्रोजेक्ट

क्र.सं.	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	परियोजना समन्वयक	निधीयन एजेंसी
1	चरण 1 राज्यों बिहार, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में स्वाभिमान महिला पोषण प्रदर्शन कार्यक्रम के लिए आधारभूत सर्वेक्षण के लिए अग्रणी तकनीकी सहायता एजेंसी;	सईद उनीसा, प्रकाश एच. फुलपगारे, अपराजिता चट्टोपाध्याय, सारंग पेडगाँवकर, प्रीति ढिल्लन	यूनिसेफ, नई दिल्ली
2	जनसंख्या पर्यावरण और बस्ती (एनविस)	धनंजय डब्ल्यू बंसोड़ और अपराजिता चट्टोपाध्याय	पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार
3	नीति निर्धारण में अनुसंधान के साक्ष्यों को प्रयोग करने की क्षमता बढ़ाना	एफ. राम, सईद उनिसा और अपराजिता चट्टोपाध्याय	वेलकम ट्रस्ट और सीओआरटी, वडोदरा
4	स्वास्थ्य पर डंपिंग ग्राउंड फायर के प्रभाव का आकलन : मुंबई में एक केस स्टडी	एल. लादू सिंह, धनंजय डब्ल्यू बंसोड़, और अपराजिता चट्टोपाध्याय	पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार

2. सतत परियोजनाएँ

क्र.सं.	अनुसंधान परियोजना का शीर्षक	परियोजना समन्वयक	निधीयन एजेंसी
1.	भारत में अनुदैर्ध्य एजिंग अध्ययन (एलएएसआई) मेन वेव (2014 – 19)	पी. अरोकियासामी, डी. ए.नागदेव, टी. वी. शेखर, एस. के. मोहंती, ए.चट्टोपाध्याय, दीप्ति गोविल और सारंग पेदागांवकर	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय/ सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार यूएनएफपीए और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑन एजिंग (एनआईए) / राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान(एनआईएच), संयुक्त राज्य अमरीका।
2.	स्टडी ऑफ ग्लोबल एजिंग एंड एडल्ट हेल्थ (एसएजीई) – भारत, वेव–2, अध्ययन, 2014 – 16 का	पी. अरोकियासामी, एच. लुंगडिम, टी. वी. सेखर,मुरली धर और अर्चना के.रॉय	विश्व स्वास्थ्य संगठन,जेनेवा ।
3.	राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण – 4	एफ. राम, बी. पासवान, एस. के. सिंह, एच.लुंगडिम, चंदर शेखर, अभिषेक सिंह, धनंजय बंसोड़ मनोज अलागराजन, एल. के. द्विवेदी, मानस प्रधान और सारंग पेडगांवकर	यूएसएआईडी, डीएफआईडी, बीएमजीएफ, यूनीसेफ, यूएनएफपीए, मैक आर्थर फाउंडेशन, और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।
4.	भारत में अनचाहे गर्भ और गर्भपात (यूपीएआई) पर अध्ययन	एफ. राम, चंदर शेखर, मनोज अलागराजन, एम.आर. प्रधान और हरिहर साहू	गुट्टमाकर इंस्टीट्यूट, यूएसए।
5.	महिलाओं के काम की गिनती	एल. लाडूसिंह	आईडीआरसीकनाडा
6.	स्वाभिमान	सईद उनीसा, आर. एस.रेशमी, लक्ष्मीकांत द्विवेदी, सारंग पेडगाँवकर	यूनिसेफ, नई दिल्ली

16.18.3 प्रकाशन और प्रसार

संस्थान के संकाय और छात्र राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं और पुस्तकों के माध्यम से अपने अध्ययन के निष्कर्ष प्रकाशित करते हैं। वे विभिन्न सेमिनारों, सम्मेलनों और कार्यशाला के माध्यम से अपने काम का प्रसार भी करते हैं। वर्ष 2017–18 में – संकाय अनुसंधान स्टाफ और छात्रों द्वारा 150 शोध पत्र और 6 पुस्तकें प्रकाशित की गई। कुल 52 अनुसंधान परियोजना रिपोर्ट/मोनोग्राफ संस्थान द्वारा प्रकाशित किए गए और संकाय/कर्मचारियों/छात्रों द्वारा विभिन्न सम्मेलनों में 123 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। आईआईपीएसने इस वर्ष के दौरान 52 सेमिनार कार्यशालाएं भी आयोजित किए।

16.18.4 पुस्तकालय

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज लाइब्रेरी में संस्थान की पाठ्यक्रम सामग्री और शोध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संसाधनों का एक संग्रह है । इसमें 85,736 पुस्तकें, 17262 के पत्रिकाओं जिल्दबंद खंड लगभग 17041 पुनः मुद्रित पुस्तकें और 630 दृश्य श्रव्य सामग्री और 300 से अधिक (प्रिंट + ऑनलाइन) पत्रिकाओं के सदस्य हैं। मुख्य पत्रिकाओं और संपादित पुस्तकों के 26,550 शोध लेख हैं, जिन्हें ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (ओपीएसी) के माध्यम से अनुक्रमित और उपलब्ध कराया गया है। पुस्तकालय में जनसंख्या अध्ययन और उसके प्रमुख क्षेत्र, दर्शन, मनोविज्ञान, धर्म, समाजशास्त्र, सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, शिक्षा, गणित, एंथ्रोपोलॉज, सार्वजनिक स्वास्थ्य, इतिहास, भूगोल, आदि पर संग्रह है। पुस्तकालय अपने उपयोगकर्ताओं को करंट अवेयरनेस, न्यू एडिशंस, सेलेक्टिव डिसेमिनेशन ऑफ इन्फॉर्मेशन, ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (ओपीएसी), डॉक्यूमेंट डिलीवरी सर्विस, फोटोकॉपी सुविधा, संदर्भ सेवा, ग्रंथ सूची सेवा, मेटाडाटा इंटरपोलेशन आदि प्रदान करता है।

इस पुस्तकालय में स्वतंत्रता पूर्व अवधि से लेकर नवीनतम जनगणना 2011 (भारत के जनगणना 1872–1941 तक पीडीएफ प्रारूप में) तक सभी जनगणना के लिखित संकलनों का विशेष संग्रह है। पुस्तकालय जेएसटीओआर, विज्ञान प्रत्यक्ष (सामाजिक विज्ञान संग्रह), एससीओपीयूएस, इंडियास्टाटऔर अन्य प्रमुख प्रकाशकों के स्वास्थ्य और जनसंख्या विज्ञान से संबंधित ऑनलाइन संग्रह जैसे कई ऑनलाइन डेटाबेस तक पहुँच प्रदान करता है। पुस्तकालय 2000 + ऑनलाइन (पूर्ण – पाठ) पत्रिकाओं के लिए iProx21 के माध्यम से अधिकृत उपयोगकर्ताओं को दूरस्थ पहुँच प्रदान करता है।

आईआईपीएस पुस्तकालय के पास इनफ्लिबनेट (यूजीसी), डेलनेट, आईएएसएलआईसी, एनआईआरडी, आईएएसएसआई के साथ संस्थागत सदस्यता है और यह संस्थान के लाभ के लिए अधिक से अधिक सेवाओं का विस्तार कर रहा है। संस्थान यूजीसी के आईएनएफएलआईबीएनईटीके शोध गंगा इंडुकैट कार्यक्रमों का एक सक्रिय सदस्य है। वर्ष 2018 तक संस्थान द्वारा प्रदान किए गए सभी पीएच. डी. थीसिस शोधगंगा डाला जाएगा।

16.18.5 सूचना संचार औरप्रौद्योगिकी (आईसीटी) औरडेटा केंद्र

सूचना संचार और प्रौद्योगिकी (आईसीटी) इकाई की स्थापना संस्थान में आईसीटी अवसंरचना के नियोजन, कार्यान्वयन और विकास के लिए की गई थी। इकाई आईसीजीसेवाओं की एक पूरी श्रृंखला प्रदान करती है जिसमें ई–गवर्नेंस ई–आफ़िस के लिए तकनीकी सहायता, आवेदन और कार्यान्वयन, डाटा अधिग्रहण और प्रसार, लोकल एरिया नेटवर्क (लैन), इंटरनेट सेवाओं, कंप्यूटर रखरखाव और आईटी सहायता डेस्क समर्थन और वेबसाइट और अनुप्रयोग विकास और एकीकरण शामिल हैं।

सरकारी प्रक्रियाओं की दक्षता, स्थिरता और प्रभावशीलता में सुधार के लिए, आईआईपीएसने अपने कार्यालय को डिजिटल और पेपरलेस वातावरण में बदल दिया है। संस्थान में ई–गवर्नेंस समाधान की तैनाती मेंयहइकाई योजना, तैयारी और कार्यान्वयन में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। हैंडहोल्डिंग और समर्थन सेवाएं प्रदान करने के लिए आईसीटीइकाई में एक ई–ऑफिससपोर्ट टीम भी स्थापित की गई है।

आईसीटी इकाई में 48 पर्सनल कंप्यूटर और 3 एलसीडी प्रोजेक्टर से लैस अपनी प्राथमिक कंप्यूटर लैब है। इंटरनेट के माध्यम से जुड़े 16 व्यक्तिगत कंप्यूटरों के साथ इसकी दूसरी लैब भी आईसीटी इकाई में उपलब्ध है। जिन पाठ्यक्रमों में कंप्यूटर के उपयोग की आवश्यकता होती है (एम. पी. एस., एम. ए./एमएससी, बायोस्टैटिस्टिक्स और डेमोग्राफी, एम. फिल. और छोटा – शब्द प्रशिक्षण पाठ्यक्रम इन दो प्रयोगशालाओं में आयोजित किए जाते हैं। आईसीटी इकाई के कंप्यूटर लैब नवीनतम कोर i7 या नवीनतम पीढ़ी के कंप्यूटर से लैस हैं। इसके अलावा, आवश्यक सांख्यिकीय सॉफ़्टवेयर, जैसे आईबीएमएसपीएसएस संस्करण 25, स्टाटासंस्करण

15, सास 9.4 जनसांख्यिकीय डेटासेट के विश्लेषण के लिए अपेक्षित, स्टेट ट्रांसफर और एआरसी जीआईएस वर्जन 10 यूजर लाइसेंस के साथ स्थापित किए गए हैं। इसके अलावा, मोर्टपैक, एंडनोट एक्स 7 और एटलस टीआई जैसे महत्वपूर्ण सॉफ्टवेयर स्थापित किए गए हैं।

छात्रों, कर्मचारियों और संकाय सदस्यों के परिसर में इंटरनेट प्रदान किया गया है। राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क परियोजना के तहत, संस्थान ने–राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र से–जीबीपीएसइंटरनेट लिंक का अधिग्रहण किया है। आईआईपीएस एलएएनमें वायर्ड और वायरलेस दोनों वाई–फाई घटक शामिल हैं और यह संस्थान में लैपटॉप जैसे पोर्टेबल डिवाइस सहित सभी कंप्यूटरों को जोड़ता है। कैंपस में छात्र, कर्मचारी, अतिथि और संकाय 24x7 वाई–फाई सुविधा का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं। संस्थान के नेटवर्क के गेटवे फ़ायरवॉल पर एक एकीकृत खतरा प्रबंधन समाधान लागू किया गया है। कुछ प्रकार के ट्रैफ़िक को अवरुद्ध करके, फ़ायरवॉल संस्थान के नेटवर्क या कंप्यूटरों को अनधिकृत उपयोगकर्ताओं से बचाता है और डाटा को हमले से सुरक्षा प्रदान करता है।

संस्थान की द्विभाषी (अंग्रेजी–हिन्दी) वेबसाइट और ऑनलाइन सेवाओं के लिए अन्य वेब अनुप्रयोग, जैसे कि ऑनलाइन प्रवेश परीक्षा और वार्षिक सेमिनार के लिए सार प्रस्तुति आदि का रखरखाव भी आईसीटी इकाई द्वारा किया जाता है।

डाटा सेंटर

संस्थान में एक मजबूत डाटा केंद्र है जिसमें विभिन्न सिस्टम प्रशासन सेवाओं के लिए हाई एंड सर्वर जनसांख्यिकीय डेटासेट के भंडारण और प्रसार को सक्षम करने के लिए नेटवर्क से जुड़ा स्टोरेज सर्वर भी है। डेटा सेंटर में वर्तमान में सभी महत्वपूर्ण डेटासेट हैं, जैसे कि जनगणना से संबंधित और आईआईपीएसद्वारा किए गए बड़े पैमाने के सर्वेक्षणों के विभिन्न दौरे इन्हें आईआईपीएस उपयोगकर्ताओं द्वारा लानके माध्यम से सीधे एक्सेस किया जा सकता है। एक वेब पोर्टल के माध्यम से, आईआईपीएसद्वारा सर्वेक्षण किए गए ऑनलाइन डेटाबेसों को भी पंजीकृत उपयोगकर्ताओं के पास प्रसारित किए जाते हैं।

16.19 महात्मा गांधी चिकित्सा विज्ञान संस्थान (एमजीआईएमएस) सेवाग्राम, महाराष्ट्र

महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (एमजीआईएमएस), सेवाग्राम भारत का पहला ग्रामीण मेडिकल कॉलेज है जो ग्रामीण परिवेश और प्रशासन में स्थित है। कस्तूरबा अस्पताल को देश का एकमात्र अस्पताल होने का गौरव प्राप्त है जिसे स्वयं राष्ट्रपिता ने शुरू किया था। महात्मा गांधी की " कर्मभूमि सेवाग्राम " में स्थित , एमजीआईएमएस की स्थापना 1969 में गांधी शताब्दी वर्ष में डॉ. सुशीला नायर ने की थी।

संस्थान के वित्त पोषण पैटर्न के संबंध में, वार्षिक आवर्ती व्यय भारत सरकार, महाराष्ट्र सरकार और कस्तूरबा हेल्थ सोसायटी द्वारा क्रमशः 50:25:25 के अनुपात में साझा किया जाता है। भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 2018–19 के दौरान संस्थान के आवर्ती व्यय को पूरा करने के लिए 67.33 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता जारी की।

संस्थान का दृष्टिकोण समुदाय उन्मुख चिकित्सा शिक्षा का एक ऐसा प्रतिरूप मॉडल विकसित करना है जो हमारे देश की बदलती जरूरतों के लिए उत्तरदायी और पेशेवर उत्कृष्टता के लोकाचार में निहित है। अपने संस्थापक की भावना के अनुसार, महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और नैदानिक देखभाल में व्यावसायिक उत्कृष्टता के अनुकरणीय मानकों का अनुपालन करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें विशेषकर वंचित ग्रामीण समुदायों के लिए सुलभ और सस्ती स्वास्थ्य देखभाल के साथ–साथ मूल्य–आधारित चिकित्सा शिक्षा को एकीकृत करने के एक पैटर्न को विकसित करना निहित है।

स्वास्थ्य देखभाल

कस्तूरबा अस्पताल में 934 बेड हैं: 690 टीचिंग बेड, 100 सर्विस बेड, 32 प्राइवेट रूम और विभिन्न गहन चिकित्सा इकाइयों में 62 बेड हैं। यह संस्थान 50–बेड वाला डॉ. सुशीला नायर अस्पताल भी चलाता है, जो मेलघाट में और अमरावती जिले में उतावली के आदिवासी इलाकों में, तीन–चौथाई मरीज ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं। मरीज महाराष्ट्र के विदर्भ और आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के आसपास के इलाकों से आते हैं। कस्तूरबा अस्पताल वहनीय लागतों पर आधुनिक प्रौद्योगिकी के लाभ और अनुकंपा आधारित स्वज्ञस्थ्य परिचर्या प्रदान करता है।

वर्ष 2018–19 में 891128 रोगी आउट पेशेंट के तौर पर अस्पताल में भर्ती हुए और 51818 रोगियों को विभिन्न बीमारियों के लिए भर्ती किया गया। अस्पताल में मेडिसिन,

सर्जरी, प्रसूति और स्त्री रोग और पेडियाट्रिक्स में अत्याधुनिक गहन चिकित्सा इकाइयाँ हैं जो उत्कृष्ट महत्वपूर्ण देखभाल प्रदान करते हैं। श्री सत्य साईएक्सीडेंट एंड इमरजेंसी यूनिट (ट्रामा सेंटर), ट्रॉमा के मरीजों को सक्कोर प्रदान करता है। इन संस्थान में एक रक्त घटक इकाई है जो न केवल कस्तूरबा अस्पताल में रोगियों को बल्कि इसके साथ–साथ निकटवर्ती निजी अस्पतालों को भी घटक प्रदान करती है। सिकल सेल एनीमिया और थैलेसीमिया के मरीजों को निःशुल्क रक्त दिया जाता है। एमआरआई, सीटी स्कैन और मैमोग्राफी की सुविधाएं उपलब्ध हैं। संस्थान के रेडियोथेरेपी विभाग में कैंसर के रोगियों के इलाज के लिए अत्याधुनिक उपकरण मौजूद हैं, जिसमें गहन इलेक्ट्रॉनकृत रेडियोथेरेपी (आईएमआरटी) के साथ कई इलेक्ट्रॉन बीम के साथसिम्युलेटर और एचडीआरब्रैकीथेरेपी के साथ 3 डी अनुरूप रेडियोथेरेपी (सीआरटी) उन्नत दोहरे ऊर्जा रैखिक त्वरक शामिल है। पैथोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री प्रयोगशालाएं जिनमें नैदानिक परीक्षणों की बैटरी का संचालन करने के लिए सुविधाएं मौजूद हैं। एमजीआईएएसने कार्डियक कैथीटेराइजेशन लैब और डिजिटल सबट्रेक्शन एंजियोग्राफी को भी अपने सुविधा संग्रह में जोड़ा है।

कस्तूरबा अस्पताल ने 15000 वर्ग फुट में फैले एक नए अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर (ओटी) कॉम्प्लेक्स का निर्माण किया है। इसमें दस मॉड्यूलर ओटी सुइट्स, एक गहन देखभाल इकाई और प्री –ऑपरेटिव मूल्यांकन वार्ड जिसमें प्रत्येक में 10 बैड होंगे, दो रिकवरी रूम और एक मेडिकल स्टोर हैं। एक आदर्श मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य (एमसीएच) विंग का उद्घाटन किया गया है। इस एमसीएचविंग में प्रसूति एवं स्त्री रोग और बाल चिकित्सा और नियोनेटोलॉजी के लिए बेड हैं। इसमें आउट पेशेंट विभाग, प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर वार्ड, उच्च निर्भरता इकाइयां, ऑपरेशन थिएटर, गंभीर रूप से बीमार नवजात इकाई, लेबर रूम, प्रसूति गहन देखभाल इकाइयां, कौशल दक्ष प्रयोगशालाएं और ऐसे अन्य क्षेत्र शामिल हैं।

संस्थान की स्वास्थ्य बीमा योजना ने अनेक पुरस्कार जीते हैं क्योंकि यह समुदाय में स्वास्थ्य के प्रति चेतना पैदा करने की मांग करता है। इसमें दो योजनाएं हैं– स्वास्थ्य बीमा योजना और ज्वार स्वास्थ्य आश्वासन योजना। पहली योजना के तहत, कोई भी ग्रामीण व्यक्ति प्रति वर्ष 400 रुपये का भुगतान करके अपना और अपने परिवार का बीमा कर सकता है और इसके बदले में उसे ओपीडी और इनडोर बिलों पर 50% की सब्सिडी अनुदान मिलती है। ज्वार स्वास्थ्य आश्वासन योजना के तहत भाग लेने वाले प्रत्येक गांव को केंद्र और राज्य सरकारों से आर्थिक सहायता के साथ अस्पताल से कवर किए जाने वाले स्वास्थ्य खर्च के बाकी के भुगतान साथ भुगतान करने के लिए जिम्मेदार बनाया गया है।

एमजीआईएमएस में प्रशामक देखभाल केंद्र

एमजीआईएमएस ऐसे रोगियों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने के लिए उपशामक देखभाल शुरू करने की अवधारणा का सक्रिय रूप से समर्थन कर रहा है जिन रोगियों को कैंसर और गैर–कैंसर की बीमारी जैसी कोई गंभीर या जानलेवा बीमारी है। उपशामक देखभाल केंद्र के भवन का निर्माण दिसंबर, 2018 में शुरू किया गया है और इसके मार्च, 2020 तक पूरा होने की संभावना है।

राष्ट्रीय आपातकालीन जीवन सहायता प्रशिक्षण कौशल केंद्र

भारत सरकार के स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालयने अपने राष्ट्रीय आपातकालीन जीवन समर्थन (एनईएलएस) कार्यक्रम के तहत एक केंद्रीकृत अत्याधुनिक सिमुलेशन और कौशल प्रयोगशाला बनाने के लिए भारत के पहले पांच केंद्रों में एमजीआईएमएसको चुना है।एनएलईएस परियोजना स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू की गई एक पहल है जो डॉक्टरों और पैरामेडिक्स को उनके रोजमर्रा के जीवन के बचाते समय सामना की जाने वाली आपातकालीन स्थितियों से निपटने में मदद करने के लिए 'मेड इन इंडिया' पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए शुरू की गई है। केंद्र का कार्य आगामी वर्ष में शुरू होने वाला है।

16.20 केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा ब्यूरो (सीबीएचआई)

परिचय

केंद्रीय स्वास्थ्य आसूचना ब्यूरो (सीबीएचआई), जो 1961 में स्थापित किया गया है, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय का स्वास्थ्य आसूचना स्कंध है, जिसका विजन "संपूर्ण देश में एक मजबूत स्वास्थ्य प्रबंधन सूचना प्रणाली" स्थापित करना

है।

16.20.1 सीबीएचआई का उद्देश्य

(i) साक्ष्यों के आधार पर नीतिगत निर्णय लेने, योजना बनाने और अनुसंधान गतिविधियों के लिए देश के स्वास्थ्य क्षेत्र से संबंधित आंकड़ें एकत्रित करना, उनका विश्लेषण करना और उन आंकड़ों का समान रूप से प्रचार करना।

(ii) भारत में सरकारी और निजी दोनों मेडिकल संस्थानों में चिकित्सा रिकॉर्ड को वैज्ञानिक तौर पर बनाए रखने के लिए मानव संसाधन विकसित करना;

(iii) भारत में स्वास्थ्य सूचना प्रणाली के कुशल कार्यान्वयन और अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरणों में परिवार के उपयोग के लिए संचालन अनुसंधान पर आधारित आवश्यकता पर ध्यान देना;

(iv) भारत में अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण में परिवार के कार्यान्वयन के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र में मास्टर ट्रेनरों के एक पूल का सृजन और इसे संवेदनशील बनाना;

(v) ज्ञान और कौशल विकास प्रदान करने के लिए डब्ल्यूएचओ सहित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग करना।

16.20.2 सीबीएचआई द्वारा की गई गतिविधियाँ

- **प्रकाशन राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफ़ाइल और इसकी विश्लेषणात्मक रिपोर्ट:** सीबीएचआई विभिन्न संचारी और गैर–संचारी रोगों पर प्राथमिक और इसके साथ ही माध्यमिक डेटा एकत्र करता है, स्वास्थ्य क्षेत्र में मानव संसाधन अपने वार्षिक प्रकाशन "राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफ़ाइल" के जरिए स्वास्थ्य सांख्यिकी अनुरक्षण के प्रसार के लिए विभिन्न सरकारी संगठनों/विभागों से स्वास्थ्य अवसंरचना कार्य करता है जो 6 प्रमुख संकेतकों नामित जनसांख्यिकी, सामाजिक–आर्थिक, स्वास्थ्य स्थिति, स्वास्थ्य वित्त, स्वास्थ्य अवसंरचना और मानव संसाधनके तहत अधिकांशतः प्रासंगिक स्वास्थ्य जानकारी पर प्रकाश डालता है। सीबीएचआईने 2017 से राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल पर आधारित विश्लेषणात्मक रिपोर्ट प्रकाशित करना शुरू कर दिया है।
- **एचएस–पीआरओडी:** सीबीएचआईहेल्थ सेक्टर पॉलिसी रिफॉर्म ऑप्शन डेटाबेस (एचएस–पीआरओडी) के लिए सुधार पहलों की जानकारी एकत्र करता है। (www-hsprodindia@nic-in)। यह एक वेब–सक्षम डेटाबेस है जो उत्तम पद्धतियों, स्वास्थ्य सेवाओं के प्रबंधन में नवाचारों पर जानकारी साझा करना है और साथ ही उनकी विफलताओं को उजागर करने के लिए एक मंत्र का सृजन करता है। जो राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- **क्षमता निर्माण:** स्वास्थ्य क्षेत्र में क्षमता निर्माण और मानव संसाधन विकास के लिए, सीबीएचआई केंद्र / राज्य सरकारों, ईएसआई, रक्षा और रेलवे और इसके साथ–साथ निजी स्वास्थ्य संस्थानों मेंइनके विभिन्न मेडिकल रिकॉर्ड विभाग और स्वास्थ्य संस्थानों में काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए अपने विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों और फील्ड सर्वेक्षण इकाइयों के माध्यम से दीर्घकालिक और अल्पकालिक सेवा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है जो नीचे दिए गए विवरण के अनुसार है:–

क्र.सं.	प्रशिक्षण का नाम	बैच	अवधि	प्रशिक्षण केन्द्र
1.	चिकित्सा रिकॉर्ड अधिकारी	2 (प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर एक)	1 साल	1. सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली। 2. जिपमेर, पुदुचेरी
2.	मेडिकल रिकॉर्ड तकनीशियन	6 (प्रत्येक प्रशिक्षण केंद्र पर दो)	6 महीने	1. सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली। 2. जिपमेर, पुदुचेरी 3. डॉ. आरएमएल अस्पताल, नईदिल्ली

- **लघुअवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रमः**

क्र.सं.	प्रशिक्षण का नाम	बैच	अवधि	प्रशिक्षण केन्द्र
1.	(आईसीडी–10) पर मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	2	पांच दिन	क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केंद्र (आरएचएसटीसी), मोहाली, पंजाब
2.	फंक्शनिंग डिसेबिलिटी एंड हेल्थ (आईसीएफ) के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण पर प्रशिक्षकों (टीओटी) का प्रशिक्षण	2	3 दिन	क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केंद्र (आरएचएसटीसी), मोहाली, पंजाब।
3.	एचआईएम (अधिकारियों के लिए) पर अभिकेन्द्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम	8 (मोहाली में दो और प्रत्येक छह एफएसयूमें से एक)	पांच दिन	क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केंद्र (आरएचएसटीसी), मोहाली, पंजाब और छह एफएसयूयानी बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, पटना, जयपुर और लखनऊ।
4.	एचआईएमपर अभिकेन्द्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम (गैर–चिकित्सा कार्मिक के लिए)	14 (दो बजे प्रत्येक केंद्र)	पांच दिन	क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केंद्र (आरएचएसटीसी), मोहाली, पंजाब और छह एफएसयूयानी बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, पटना, जयपुर और लखनऊ।
5.	(आईसीडी – 10 और आईसीएफ) पर ओरिएंटेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम (गैर–चिकित्सा कर्मियों के लिए)	20 (मोहाली में दो प्रत्येक छह एफएसयूपर तीन)	पांच दिन	क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केंद्र (आरएचएसटीसी), मोहाली, पंजाब और छह एफएसयूयानी बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, पटना, जयपुर और लखनऊ।
6.	गैर–चिकित्सा कार्मिकों के लिए एमआर एंड आईएम पर अभिकेन्द्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम	8 (मोहाली में दो प्रत्येक छह एफएसयूपर एक)	पांच दिन	क्षेत्रीय स्वास्थ्य सांख्यिकी प्रशिक्षण केंद्र (आरएचएसटीसी), मोहाली, पंजाब और छह एफएसयू यानी बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, पटना, जयपुर और लखनऊ ।

- सीबीएचआई अपने वार्षिक प्रकाशन "राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफ़ाइल" मेंसतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) के लक्ष्य 3 अर्थात मातृ मृत्यु अनुपात, कुशल कार्मिक के द्वारा किया गया जन्म का अनुपात 5 वर्ष से कम आयु में मृत्यु दर (प्रति 1000 जन्म), शिशु मृत्यु दर (प्रति 1000 जीवित) जन्म), प्रति वर्ष प्रति 1000 व्यक्तियों पर टीबी की घटना, प्रति वर्ष प्रति 1000 व्यक्तियों पर मलेरिया की घटनाएँ, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की सघनता और वितरण आदि के संबंध में संक्षिप्त सूचना/आंकड़ों का प्रकाशन करता है। नवीनतम प्रकाशन एनएचपी – 2018 है।
- भारत में अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (आईसीडी– 10 एवं आईसीएफ) के परिवार के संबंध में डब्ल्यूएचओ द्वारा सहयोग प्राप्त केंद्र के रूप में निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों के साथ कार्यः

- डब्ल्यूएचओ परिवार के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (डब्ल्यूएचओ – एफआईसी) के विकास और उपयोग को बढ़ावा देना, जिसमें रोग और संबंधित स्वास्थ्य समस्याएं (आईसीडी) का अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकीय वर्गीकरण, कार्य पद्धति, विकलांगता और स्वास्थ्य (आईसीएफ) अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण और अन्य व्युत्पन्न और संबंधितवर्गीकरण और एक सामान्य भाषा के रूप में कई दलों द्वारा अनुभवजन्य अनुभव को ध्यान में रखते हुए उनके कार्यान्वयन और सुधार में योगदान करना सम्मिलित है।
- डब्ल्यूएचओ–एफआईसी के वर्तमान और सक्षम प्रयोक्ताओं के साथ नेटवर्किंग और संदर्भ केंद्र के रूप में कार्य करना ।
- डब्ल्यूएचओ–एफआईसीः विशेषता आधारित अनुकूलन, प्राथमिक देखभाल अनुकूलन, कार्यकलाप/प्रक्रिया, चोट वर्गीकरण (आईसीईसीआई) के कम से कम एक संबंधित और / या व्युत्पन्न क्षेत्र में कार्य करना।

• राष्ट्रीय स्वास्थ्य संसाधन भंडार (एएचआरआर) परियोजनाः

- सीबीएचआई ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य संसाधन भंडारण परियोजना (एनएचआरआर) को राष्ट्रव्यापी स्तर पर शुरू करने का कार्य आरंभ कर दिया है।
- एनएचआरआर परियोजना का उद्देश्य एक वेब–आधारित और सभी सरकारी और निजी दोनों तरह के स्वास्थ्य संसाधनों के जियो–मैपिंग सक्षम एकल मंच का सृजन करना है जिसमें अन्यों के साथ–साथ अस्पताल, डायग्नोस्टिक लैब्स, डॉक्टर्स और फ़ार्मेसीज़ आदि को शामिल किया गया है और इसमें देश में प्रत्येक स्वास्थ्य प्रतिष्ठान में स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी सुविधाएं, मानव संसाधन और चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता के संबंध में आंकड़े निहीत होंगे।
- जनगणना में सभी स्वास्थ्य परिचर्या प्रतिष्ठानों में सेवाओं की पहुंच और उपलब्धता से संबंधित डेटा बिंदुओं को सम्मिलित किया जाएगा जिसमें सार्वजनिक स्वास्थ्य से उप–केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और जिला अस्पतालों और निजी स्वास्थ्य क्षेत्र से और डॉक्टरों, अस्पतालों, डायग्नोस्टिक लैब्स, केमिस्ट शामिल होंगे।
- प्रौद्योगिकी आवश्यकताएँः प्रौद्योगिकी भागीदार के रूप में, इसरो, डब्ल्यूएचओ और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन (बीएमजीएफ) भी इस परियोजना से जुड़े हैं। भुवन मंच पर भारत की स्वास्थ्य संपदा का जीओ–टैगिंग, जियो विजुअलाइजेशन एंड स्पेशियल एनालाइसेज को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य संसाधन भंडार और क्षमता निर्माण के लिए जियो वेब पोर्टल और मोबाइल ऐप डिजाईन और विकसित करने के लिए दिनांक 3 मई, 2017 को नेशनल रिमोट सेंसिंग कॉरपोरेशन (एनआरएससी), इंडिया स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन (इसरो) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- क्षेत्र मूल्यांकन अध्ययन के लिए प्रारंभिक सर्वेक्षण कार्य का शुभारंभः उपर्युक्त भागीदारों के सहयोग से प्रारंभिक कार्यकलाप पूरे कर लिए गए हैं और हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश), जोधपुर (राजस्थान), उत्तर सिक्किम (सिक्किम), भोपाल (मध्य प्रदेश) और एर्नाकुलम (केरल) को 5 जिलों में एक फील्ड मूल्यांकन अध्ययन कार्य निष्पादित किया जा रहा है।
- जनगणना–पूर्व के तौर तरीकों अर्थात टैबलेट ऐप की जांच और आंकड़ा एकत्रण तथा कार्य प्रणाली के लिए क्वालिटी चेक मॉडल की जांच पूरी किए जाने के बाद, एनएचआरआरकी जनगणना को औपचारिक रूप से दिनांक 19 जून, 2018 को माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा द्वारा शुरू किया गया था। व्यापक स्तर पर प्रचार सुनिश्चित करने के लिए और सूचना प्रदाता से पूर्ण और सही आंकड़े प्राप्त करने के लिए, आँकड़ों के संग्रह अधिनियम, 2000 के तहत जनगणना की अधिसूचना के साथ साथ

सभी प्रमुख राष्ट्रीय और स्थानीय समाचार पत्रों में यह विज्ञापित किया गया था। तदनुसार, डेटा संग्रह कार्य शुरू किया गया है।

16.21 केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (सीएचईबी)

"केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो" (सीएचईबी) की स्थापना 1956 में स्वास्थ्य सेवाएं महानिदेशालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालयके एक भाग के रूप में की गई थी, जो समुदाय में जागरूकता पैदा करने के लिए साक्ष्य आधारित स्वास्थ्य सूचना का सृजन करने और प्रसारित करने के लिए अनिवार्य था जिसके परिणामस्वरूप अपेक्षित स्वास्थ्य व्यवहार संभव हुआ। समुदाय की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए चिकित्सा, पैरामेडिकल और अन्य गैर–स्वास्थ्य कार्मिकों की क्षमता विकास के लिए भी सीएचईबी जिम्मेदार है, जिससे सभी के लिए स्वास्थ्य इक्विटी और स्वास्थ्य के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षमता में सुधार होता है।

जनसांख्यिकी बदलाव के कारण बढ़ते हुए दीर्घकालिक स्थानिक संक्रमण के परिणामस्वरूप रोग के परिवर्तित प्रोफ़ाइल ने बीमारी और चोटों के मानक उपचार से बढ़कर उपचार करना आवश्यक बना दिया है और स्वास्थ्य के लिए शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों पर मुख्य रूप से स्वास्थ्य संवर्धन की जनसंख्या के आधारित दृष्टिकोण के जरिए इन चुनौतियों से निपटना। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक निर्धारकों गत समय के दौरान, सीएचईबी ने न केवल देश के भीतर, बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रीय देशों का भी नेतृत्व किया है। सीएचईबी द्वारा किया गया योगदान उल्लेखनीय है जो कि इसके प्रकाशनों, शोध और मूल्यांकन अध्ययनों के साथ–साथ सीएचईबी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं और सेमिनारों से परिलक्षित होता है।

1956 के बाद, सीएचईबी भवन के सभी कमरों का नवीनीकरण किया गया है। सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ एक सम्मेलन कक्ष, एक कक्षा और एक कंप्यूटर प्रयोगशाला विकसित की गई है। ई–लाइब्रेरी वाला एक पुस्तकालय विकास के अधीन है।

सीएचईबी के पाँच उप प्रभाग हैं:

- मीडिया और संपादकीय प्रभाग;
- प्रशिक्षण, अनुसंधान और मूल्यांकन प्रभाग।
- स्कूल और किशोर स्वास्थ्य शिक्षा प्रभाग।
- स्वास्थ्य संवर्धन और शिक्षा प्रभाग
- प्रशासनिक प्रभाग।

वर्तमान में, इन प्रभागों में प्रशासनिक और सहायक कर्मचारियों के अलावासीएचईबी में तीन चिकित्सा अधिकारी और चार स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी तैनात हैं

सीएचईबी के कार्य

- स्वास्थ्य व्यवहार में वांछित फेरबदल के लिए समुदाय के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए सीएचईबी प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मास मीडिया, नवीन मीडिया, प्रदर्शनियों और मेलों के माध्यम से विभिन्न रोगों के संबंध में सबूत आधारित आईईसी सामग्री और 'जोखिम संचार रणनीति' विकसित करता हैऔर स्वास्थ्य जानकारी का प्रसार।
- मेडिकल, पैरामेडिकल और अन्य गैर–स्वास्थ्य कार्मिक की क्षमता और कौशल विकास
- भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों और विभागों के साथ, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में स्वास्थ्य और गैर–स्वास्थ्य भागीदारों के साथ लिंकेज और नेटवर्किंग
- स्कूलों, कार्यालयों, कारखानों, उद्योगों, बाजारों, रेलवे स्टेशनों, बस स्टॉप, आवास और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर स्वस्थ पर्यावरणीय ढांचा।

16.21.1 उपलब्धियां

स्वास्थ्य सामग्री का विकास

क) "स्वस्थ भारत पहल": सीएचईबी जून 2016 में एक तिमाही स्वास्थ्य पत्रिका 'स्वस्थ भारत पहल' का शुभारंभ किया और तब से बारह अंकों को प्रकाशित किया गया है। इस अवधि के दौरान स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के बारे में जनता में जागरूकता पैदा करने के लिए सीएचईबी द्वारा त्रैमासिक स्वास्थ्य पत्रिका "स्वस्थ भारत पहल" (जनवरी 2018 से जनवरी 2019

अंक) के पांच अंक अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रकाशित किए गए। 'मास मेलिंग यूनिट' के माध्यम से यह पत्रिका पूरे देश में वितरित की जाती है। देश भर में सभी जिलों के सचिव (स्वास्थ्य), निदेशक स्वास्थ्य सेवाएं, जिला मजिस्ट्रेट, सीएमओ को पत्रिका की अन्य सॉफ्ट कॉपी भेजी जाती है। इसके अलावा, लिंकेज विकसित किए गए हैं और शिक्षा निदेशक, एनसीईआरटी, सीबीएसई, एनआईएचएफडब्ल्यू, वीएचएआई, पीएचएफएल, डीआईईटी, केन्द्रीय विद्यालय और नवोदय विद्यालय को सॉफ्ट कॉपी भेजी जाती है।

ख) माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री और माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा एक समारोह में 'स्वस्थ बच्चे स्वस्थ भारत' को संयुक्त रूप से जारी किया गया है। सात लाख प्रतियां पहले ही मुद्रित और देश भर में स्कूली बच्चों को वितरित की जा चुकी हैं। बीस हजार प्रतियां, हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की, पुनर्मुद्रित की गई थी।

सीएचईबी ने आम जनता के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए स्वस्थ जीवनशैली पर सामग्री विकसित और मुद्रित की है।

सीएचईबी के विभिन्न प्रकाशन

इसके अलावा सीएचईबी राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल और राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य परिचर्या अधिनियम 2017 के लिए आईईसी सामग्री के विकास; गैर – संचारी रोग; रोगी देखभाल सुरक्षा वायु प्रदूषण और स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों और एंटी माइक्रोबियल प्रतिरोध को सीमित करने पर राष्ट्रीय कार्यक्रम में सुविधा प्रदान करता है।

ग) सामूहिक जागरूकता कार्यक्रमः स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के बारे में आम जनता के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए सीएचईबी परिसर में एक आउटडोर डिजिटल एलईडी स्क्रीन प्रतिस्थापित की गई है।

वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज, सफदरजंग

अस्पताल, और नई दिल्ली के एनाटॉमी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया और दिनांक 26 अप्रैल, 2018 को अनेक स्कूलों से किशोर आयु वर्ग के लगभग 350 स्कूली बच्चों के लिए "डायलॉग विद ऑर्गन्सः ए स्टेपिंग स्टोने टू एडोलसेंट हैल्थ पर एक संवाद में स्वास्थ्य संप्रेषण के एक नवप्रयोग–एक खेल, तंबोला ऑन ऑर्गन एंड टीश्यू डोनेशन एंड ट्रास्प्लांटेशन" के जरिए तीन स्वास्थ्य जागरूकता सत्रों का आयोजन किया।

पूर्वोत्तर राज्यों में डिजिटल सिनेमा स्क्रीन डिस्प्ले के माध्यम से मधुमेह, उच्च रक्तचाप और बचपन के मोटापे पर प्रचार शुरू किया गया था।

घ) **लिंकेज और नेटवर्किंगः** राज्य स्तर पर प्रचार–प्रसार संप्रेषण और कर्मचारियों के सामाजिक गतिविधियों में कौशल (एसीएसएम) को सृदृढ़ करने के लिए राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से संपर्क विकसित करने के प्रयास किए गए हैं। इसे प्रभावी बनाने के लिए सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से पत्राचार किया गया है।

ङ) **प्रशिक्षण कार्यक्रमः** सीएचईबी ने क्षमता विकास और कौशल विकास के लिए 64 अभिकेन्द्रित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। देश के विभिन्न हिस्सों से 2503 मेडिकल, नर्सिंग और एएनएम छात्रों को इन प्रशिक्षणों के दौरान स्वस्थ जीवन शैली, स्वास्थ्य शिक्षा, स्वास्थ्य संवर्धन के बारे में जागरूक किया गया।

'दिल्ली सरकार के स्कूल स्वास्थ्य समुदाय के लिए स्वस्थ जीवन शैली पर' प्रशिक्षण – सह – कार्यशाला और अंग दान और प्रत्यारोपण पर कार्यकलापों का आयोजन किया जिसमें 28 डॉक्टर, 44 सार्वजनिक स्वास्थ्य नर्सें, 16 फार्मासिस्ट और 33 नर्सिंग कर्मानुसार शामिल हुए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

आगे का रास्ता

स्वास्थ्य संवर्धन अब एक विश्वव्यापी आंदोलन है जिसका संबंध व्यक्तिगत और जनसंख्या स्वास्थ्य को बेहतर बनाने से है। वर्तमान परिदृश्य में, पिछली सफलताओं और असफलताओं से सीखने उपलब्ध संसाधनों और बाधाओं के भीतर स्वास्थ्य संवर्धन की दिशा में प्रयासों की समीक्षा करना और उन्हें मजबूत करने का समय आ गया है, 'स्वास्थ्य संवर्धन' एक लक्षित, साक्ष्य आधारित सूचना, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए संचार के माध्यम से व्यक्तिगत कौशल विकसित करता है।

सभी विकासात्मक क्षेत्रों मे सफल समन्वय के लिए साक्ष्यों पर आधारित स्वास्थ्य संवर्धन नीतियों, कार्यनीतियों, दिशा–निर्देशों आपसी आनुशासनिक सहयोग और प्रभावी समर्थन के जरिए स्वास्थ्य संवर्धन कार्यकलापों के कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन के लए इन्हें विकसित करने की आवश्यकता बनी रहती है। ऐसे अंतर–आनुशासनिक अनुसंधान कार्यों को प्रोत्साहित करने का समय आ गया है जो स्वास्थ्य और आरोग्यता को बढ़ाने के लिए नीति निर्माताओं, व्यक्तियों और समुदायों के लिए सूचना आधारित साक्ष्य सृजित करते हैं। यह "स्वास्थ्य संवर्धन" को न केवल स्वास्थ्य परिचर्या अवसंरचना और स्वास्थ्य परिचर्या सुपुर्दगी प्रणाली के लिए एस भाग के तौर पर ही नहीं वरन सभी अन्य विकासात्मक विषयों जिनका प्रभाव सामुदायिक स्वास्थ्य पर पड़ता है, को एक एकीकृत भाग के तौर पर संस्थागत किए जाने का समय है। सीएचईबी को नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हैल्थ प्रोफेशन (एनआईएचपी) में उन्नयन किए जाने के लिए भी प्रयास किए गए हैं।

16.22 स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, नई दिल्ली के क्षेत्रीय कार्यालय

परिचय

16.22.1 संकल्पना और उत्पत्ति

क्षेत्रीय समन्वय संगठनों (आरसीओ) की स्थापना 1958 में कुछ राज्यों में राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम (एनएमईपी) गतिविधियों के लिए केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए की गई थी। एक अन्य कार्यालय, क्षेत्रीय स्वास्थ्य कार्यालय (आरएचओ) की स्थापना वर्ष 1963 में तथा परिवार कल्याण संबंधी गतिविधियों के साथ तालमेल स्थापित करने और इनकी पर्यवेक्षण के लिए की गई। बाद में 1978 में, जब सभी केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रायोजित परिवार कल्याण संबंधी कार्यक्रमों के मामलों की पर्यवेक्षण, निगरानी और समन्वय के लिए इन राज्यों में भारत सरकार के एक कार्यालय की आवश्यकता को महसूस किया गया, तो आरसीओ और आरएचओ को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के लिए क्षेत्रीय कार्यालय (आरओएच एवं एफडब्ल्यू) के रूप में विलय कर दिया गया। सीबीएचआई की गतिविधियों के पूरक के लिए 1981 में चार स्वास्थ्य सूचना क्षेत्र इकाइयों (एचआईएफयू) और 1986 में दो अन्य इकाईयां स्थापित की गई थी। अब तक, विभिन्न राज्यों की राजधानियों में डीजीएचएसके अंतर्गत स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के 19 क्षेत्रीय कार्यालय कार्यरत हैं।

16.22.2 संगठन संरचना

आरओएचऔर एफडब्ल्यूकी इकाइयाँ हैं:

1. मलेरिया ऑपरेशन फील्ड रिसर्च स्कीम (एमओएफआरएस)
2. मलेरिया अनुभाग
3. स्वास्थ्य सूचना क्षेत्र इकाई (एचआईएफयू) और
4. क्षेत्रीय मूल्यांकन टीम (आरईटी)।

16.22.3 भूमिकाएँ और कार्य:

ये कार्यालय राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के संदर्भ में केंद्र और राज्य सरकारों के बीच उचित संपर्क और समन्वय सुनिश्चित करने के प्राथमिक उद्देश्य से स्थापित किए गए हैं।

क्षेत्रीय कार्यालयों के मुख्य कार्य नीचे सूचीबद्ध हैं:

- केंद्र–राज्य समन्वय
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम निगरानी और कार्यान्वयन
- प्रशिक्षण और आई.ई.सी.
- क्षेत्रीय मूल्यांकन टीम (आरईटी)
- स्वास्थ्य सूचना क्षेत्र इकाई (एचआईएफयू)
- मलेरिया ऑपरेशनल फील्ड रिसर्च स्कीम (एमओएफआरएस)
- केंद्र प्रायोजित योजनाओं की निगरानी और पर्यवेक्षण

16.22.4 बजट आवंटन और उपयोग

वर्ष 2018–19 का अनुमोदित ब.अ. 55.98 करोड़ रुपये है। वित्तीय वर्ष 2018–19 के लिए किया गया व्यय लगभग44.5 करोड़ रु. है।

16.22.5 स्टाफ की संख्या

31 मार्च 2019 तक क्षेत्रीय कार्यालयों में कर्मचारियों की स्वीकृत संख्या संवर्गों में 589 थी और कार्यरतकर्मचारियों की सं.323 थी। संबंधित आरएचओ के वरिष्ठतम अधिकारी उनकी वरिष्ठ रैंक/ग्रेड वेतन के आधार पर वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक/क्षेत्रीय निदेशक के रूप में नामित होते हैं।

16.22.6 किए गए तकनीकी कार्यकलाप: आरओएच और एफडब्ल्यू द्वारा किए गए तकनीकी कार्यकलापों का विवरण नीचे दिया गया है:

क्र.सं.	तकनीकी कार्यकलाप	निष्पादन 2017–18
1	भाग ली गई राष्ट्रीय स्तरी बैठक	297
	भाग ली गई राज्य स्तरीय बैठक	644
	समस्याओं पर विचार	331
2	**प्रमुख स्वास्थ्य कार्यक्रमों की समीक्षा करने के लिए जिले का दौरा**	
	राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम)	275
	संशोधित राष्ट्रीय टीबी नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी)	199
	राष्ट्रीय कुष्ठरोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनएलईपी)	232
	राष्ट्रीय दृष्टिहीनता कार्यक्रम (एनपीसीबी)	141
	राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी)	449
	एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी)	198
	राष्ट्रीय आयोडिन अल्पतता विकार नियंत्रण कार्यक्रम (एनआईडीडीएसपी)	149
	राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम (एनटीसीपी)	94
	राष्ट्रीय कैंसर, मधुमेह, सीवीडी और स्ट्रोक कार्यक्रम (एनएसपीसीडीएस)	160
	मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम (एनएमएचपी)	102
	अभिघात परिचर्या	116
	मौखिक स्वास्थ्य व फ्लोरोसिस नियंत्रण	86
	बुजुर्गों की स्वास्थ्य देखभाल के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीएचसीई)	102
	राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी)	87
3	**आयोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम**	
	मलेरिया माइक्रोस्कोपी	
	बैच	128
	प्रशिक्षित किये गये व्यक्ति	1477
	सीबीएचआई प्रशिक्षण	
	बैच	60
	प्रशिक्षित किये गए व्यक्ति	1411
	अन्य प्रशिक्षण	
	बैच	126
	कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया	4702

क्र.सं.	तकनीकी कार्यकलाप	निष्पादन 2017–18
4	**अनुसंधान अध्ययन**	
	चिकित्सकीय प्रभाविकता अध्ययन	3
	एंटोमोलॉजिकल अध्ययन	182
	सीबीएचआई अध्ययन	32
	आरईटी अध्ययन	31
5	**आईपीएचएस हेतु परिधीय संस्थानों की निगरानी**	
	डीएच व एसडीएचएस	438
	सीएचसी	409
	पीएचसी	887
	एसएचसी	832
6	**एमओएफआरएस के तहत एनवीबीडीसीपी के कार्यकलाप**	
	आरओएचएफडब्ल्यू में मलेरिया क्लिनिक में एकत्र की गई रक्त स्लाइडें	2095
	आरओएचएफडब्ल्यू द्वारा पॉजिटिव पाई गई रक्त स्लाइडें	84
	क्रॉस चेक की गई रक्त स्लाइडें	622202
	विसंगति वाली रक्त स्लाइडें	1463
	विसंगतियों का प्रतिशत	0.23%
7	**क्षेत्रीय मूल्यांकन टीम (आरईटी) का फील्ड सत्यापन**	
	संपर्क किए गए दंपतियों की संख्या	1918
	नकली / मना किए गए मामलों की संख्या	294
	बच्चों की संख्या, जिनसे टीकाकरण के लिए संपर्क किया गया	2264
	बच्चों की संख्या, जो पूरी तरह से प्रतिरक्षित पाए गए	2112
	सत्यापित एएनसी केसेस फील्ड की संख्या	2392
	माताओं की संख्या, जिनके 3 एएनसी चेक–अप किए गए	2209
	जटिल समस्या वाली एएनसी माताओं की संख्या	109
	माताओं की संख्या, जिनसे पीएनसी जांच के लिए संपर्क किया गया	2411
	पीएनसी अवधि के दौरान माताओं की संख्या,जिनकी 3 पीएनसी की जांच की गई	1866
	पीएनसी अवधि के दौरान माताओं की संख्या,जिनको कोई भी समस्या है	86
	माताओं की संख्या,जिनके साथ जेएसवाई के सत्यापन के लिए संपर्क किया गया	2218
	जेएसवाई के तहत मौद्रिक लाभ प्राप्त करने वाली माताओं की संख्या	1895
	जेएसवाई लाभार्थियों की संख्या जिन्होंने प्रसवावस्था हेतु अपने पैसे खर्च किए	135

16.22.7 क्षमता विकास कार्यशाला:

30/01/2019 से 01/02/2019 तक आयोजित क्षमता निर्माण कार्यशाला का उद्घाटन सचिव (एच एंड एफडब्ल्यू) द्वारा किया गया था। सचिव (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण) ने क्षेत्रीय निदेशकों से बातचीत की और इस बात पर बल दिया कि देश में स्वास्थ्य के मानकों के उत्थापन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रासंगिकता व स्पष्टता हेतु समन्वय की आवश्यकता है और आयुष्मान भारत के तहत स्वास्थ्य व कल्याण केन्द्रों (एचडब्ल्यूसी) के प्रचालन के लिए आरओएचएफडब्ल्यू की अधिक भागीदारी व फोकस की मांग की तथा उन्हें राज्यों के संबंधित प्राधिकारियों से संपर्क करने की सलाह दी ताकि सभी राज्यों में प्रशिक्षित मध्य–स्तरीय प्रदाताओं की नियुक्ति में तेजी आए।

सचिव (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण) ने राज्य अधिकारियों के साथ समन्वय करनेमें क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा निभाई गई भूमिका की सराहना की, जिसमें उन्होंने 2018 में केरल बाढ़ के हालिया उदाहरण का जिक्र किया, जो आरएचएफडब्ल्यू की मदद से कुशलतापूर्वक प्रबंधित किया गया था।

16.22.8 आरएचएफडब्ल्यू की कुछ उपलब्धियां –

आरएचएफडब्ल्यू, कोलकाता:

- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में रिपोर्टिंग के साथ एनसीडी कार्यक्रम शुरू किया
- विशेषज्ञ समूह में भाग लिया जिसने रोगी सुरक्षा पर राष्ट्रीय नीति तैयार की

आरएचएफडब्ल्यू, पुणे:

- डॉ. दीपकसावंत, स्वास्थ्य मंत्री, महाराष्ट्र की अध्यक्षता में मानव अंग प्रत्यारोपण अधिनियम पर बैठक में भाग लिया

आरएचएफडब्ल्यू, शिमला:

- 09/05/2018 को एनसीडीसीशाखा, शिमला की स्थापना के लिए राज्यों के साथ समझौता ज्ञापन के सफलतापूर्वक हस्ताक्षर के लिए राज्य के साथ समन्वय किया ।
- 5 सितंबर से 12 सितंबर, 2018 तक हिमाचल प्रदेश राज्य के लिए सीआरएम की टीम के सदस्य के रूप में भाग लिया
- 21 नवंबर, 2018 को आईएचआईपीके सॉफ्ट लॉन्च में राज्य को सहयोग दिया ।

आरएचएफडब्ल्यू, अहमदाबाद:

- गुजरात राज्य और दादरा नगर हवेली (डीएनएच) में सीबीएचआईके तहत एनएचआरआर परियोजना को वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक, आरओएचएफडब्ल्यू, अहमदाबाद की अध्यक्षता में कार्यान्वित किया गया।
- डॉ. गडपेले, अपरडीजीएचएस, डीजीएचएस, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के साथ समन्वय में एसएसजी अस्पताल, वडोदरा, उप–जिला अस्पताल–खानवेल के आघात परिचर्या सुविधा–केंद्रोंऔर विनोबा भावेहाट्स, सिलावसा की बर्न यूनिट की समीक्षा और निगरानी ।

आरएचएफडब्ल्यू, चेन्नई:

- केन्द्रीय विद्यालय, सीएलआरआई परिसरमें विश्व मलेरिया दिवस मनाया गया और मलेरिया उन्मूलन के बारे में चर्चा की गई ।
- तमिल नाडु राज्य में आईएमए, फार्मेसियों व निजी मेडिकल कॉलेजों द्वारा सहयोग देने के संबंध में कई बाधाओं के बावजूद जून 2018 में तमिलनाडु व पुद्दुचेरी में एनएचआरआर सेंसस की सफलतापूर्वक शुरूआत की गई।

आरएचएफडब्ल्यू, रायपुर:

- ईसीएचओ के सहयोग से चिकित्सा अधिकारियों का ऑनलाइन एनएलईपी प्रशिक्षण
- खरीद में जीईएम का कार्यान्वयन

आरएचएफडब्ल्यू, तिरूवनंतपुरम:

- मई 2018 में कालीकट में निपा वायरस रोग के प्रकोप के दौरान पहला रिस्पोंडर
- केन्द्रीय टीम के सदस्य के रूप में मलप्पुरम में पश्चिम नील नदी बुखार मामले के प्रकोप की जांच
- 2018 में केरल में आई बाढ़ों के प्रति प्रतिक्रिया में, आरओएचएफडब्ल्यू त्रिवेंद्रम द्वारा किए गए

कार्यकलापों में, संचारी रोगों की निगरानी और दैनिक आधार पर केंद्र के साथ डेटा साझा करने के संबंध में सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ प्रदान कर रही है।

आरएचएफडब्ल्यू बंगलोर:

- कर्नाटक राज्य में आईडीएसपी के एकीकृत स्वास्थ्य सूचना मंच (आईएचआईपी) और मलेरिया उन्मूलन के लिए रूपरेखा तैयार करने में जिसे बाद में अनुमोदित किया गया है और इसे लागू किया गया है।
- कोडागु जिले में बाढ़ के बाद रोग निगरानी के संबंध में तकनीकी सहायता प्रदान की गई जिससे कि किसी भी प्रकोप को रोका जा सके। कई अन्य रोग के प्रकोप की जांच की गई है।

आरएचएफडब्ल्यू लखनऊ:

- फरवरी 2019 में वाराणसी में ईएलएफ कार्यक्रम आईडीए (ट्रिपल ड्रग) का प्रदर्शन किया गया।
- आईक्यूवीआईए द्वारा उ.प्र. और उत्तराखंड के विभिन्न जिलों में किए जा रहे एनएचआरआर कार्यकलापों का आकलन किया गया।
- लखनऊ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आप्रवासन, सीमा शुल्क, खुफिया, सीआईएसएफऔर एयरलाइन कर्मचारियों को ज़िका पर प्रशिक्षण दिया गया।

16.23 राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय (एनएमएल), नई दिल्ली

16.23.1 परिचय

राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय (एनएमएल) देश में स्वास्थ्य विज्ञान पेशेवरों के शैक्षणिक, अनुसंधान और नैदानिक कार्यों में सहयोग के लिए बहुमूल्य पुस्तकालय सूचना सेवाएं / सहायता प्रदान करता है। यह देश में स्वास्थ्य परिचर्यासूचना वितरण प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एनएमएलद्वारा प्रदान की जाने वाली कुछ मूल्यवान सेवाएं हैं:

पुस्तकालय मार्च से अक्टूबर तक प्रातः 09:30 बजे से रात 08:00 बजे और नवंबर से फरवरी तक प्रातः 09:30 बजेसे सायं 07:00 बजे तक और छुट्टियों और सप्ताहांत पर प्रातः 9.30 बजे से सायं 6.00 बजे तक वर्ष के 359 दिन खुला रहता है। आवश्यक लेखों की फोटोकॉपी के साथ–साथ सूचना पुनर्प्राप्ति सेवा के लिए संदर्भ और परामर्श प्राप्त करने के लिए हर दिन 100 से अधिक उपयोगकर्ता पुस्तकालय में जाते हैं।

इस रिपोर्टिंग वर्ष में एनएमएल ने भारत सरकार के डिजिटल इंडिया अभियान को लागू करने के लिए पहल की है और एक मिशन के रूप में एनएमएल इसे एक पारंपरिक लाइब्रेरी से डिजिटल लाइब्रेरी में बदलने और सभी राज्यों की मेडिकल लाइब्रेरी से जोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है।

परंपरागत	डिजिटल	उपलब्धियां
पत्रिकाएं	ईआरएमईडी कंसोर्टियम (www-ermed-in)	29 राज्यों में 90 मेडिकल संस्थानों को 239 ई–जर्नल
कोक्रेन लाइब्रेरी	पैन इंडिया लाइसिएंस	कोक्रेन लाइब्रेरी के लेखों का 436543 पूर्ण पाठ डाउनलोड 2018 में पुनः प्रसारित किया गया, यह 2017 की समान समय अवधि की तुलना में 24% अधिक है।
जारीऔर वापसी	बार कोड द्वाराकम्प्यूटरीकृत	पूरा कर लिया है
सदस्यता	कम्प्यूटरीकृत	पूरा कर लिया है
सूची	कम्प्यूटरीकृत (ओपीएसी)	1,00 , 000 पुस्तकें / पत्रिकाएँ (कार्य चल रहा है)
पुस्तकालय सुरक्षा	विद्युत चुम्बकीय सुरक्षा प्रणाली	स्थापित और कार्यशील

16.23.2 डिजिटल लाइब्रेरी सेवाएं

एनएमएल द्वारा निम्न ऑनलाइन सेवाएं शुरू की गई है:

(क) एनएमएल–ईआरएमईडी संघ प्रभावी स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के लिए चिकित्सा के क्षेत्र में राष्ट्रव्यापी इलेक्ट्रॉनिक सूचना संसाधनों को विकसित करने के लिए स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय व स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा की गई एक पहल है। यह 2008 में शुरू हुआ था। 2018 में एनएमएल ने देश भर केनिम्नलिखित 29 राज्यों में 90 सदस्यों (चिकित्सा महाविद्यालय/संस्थान) के लिए ईआरएमईडी संघ; (www-ermed-in) के लिए पांच विदेशी प्रकाशकों से 239ई–पत्रिकाओं का अंशदान किया है।

ईआरएमईडीके ई–संसाधनों द्वारा12,37,981 (बारह लाख सैंतीस हजार नौ सौ इक्यासी) लेख देखे/डाउनलोड किए गए (जनवरी दिसंबर 2018)

1. आंध्र प्रदेश (5)	16. मणिपुर (2)
2. असम (5)	17. महाराष्ट्र (9)
3. अंडमान और निकोबार (1)	18. मेघालय (1)
4. बिहार (1)	19. मिजोरम (1)
5. चंडीगढ़ (2)	20. ओडिशा (2)
6. छत्तीसगढ़ (2)	21. पॉन्डिचेरी (2)
7. दिल्ली (15)	22. पंजाब (2)
8. गुजरात (3)	23. राजस्थान (4)
9. हरियाणा (1)	24. तमिलनाडु (3)
10. हिमाचल प्रदेश (2)	25. तेलंगाना (1)
11. जम्मू और कश्मीर (2)	26. त्रिपुरा (1)
12. झारखंड (2)	27. उत्तर प्रदेश (8)
13. कर्नाटक (2)	28. उत्तराखंड (1)
14. केरल (2)	29. पश्चिम बंगाल (5)
15. मध्य प्रदेश (3)	

(ख) **कोक्रेन लाइब्रेरी:** कोक्रेन लाइब्रेरी छह डाटाबेसों का एक संग्रह है, जिसमें विभिन्न प्रकार के उच्च–गुणवत्ता, स्वतंत्र साक्ष्य शामिल हैं, जो कि स्वास्थ्य सेवा के निर्णयों के बारे में जानकारी देते हैं और एक सातवां डाटाबेस कोक्रन समूह के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

कोक्रेन लाइब्रेरी में समीक्षाओं को सम्पूर्ण पाठ के रूप में इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रकाशित किया जाता है। कोक्रेन की सभी समीक्षाओं के सार तत्व और आसान भाषा सारांश भी Cochrane.org पर उपलब्ध हैं। एनएमएल को कोक्रेन लाइब्रेरी का पैन इंडिया लाइसेंस प्राप्त करने का श्रेय जाता है और भारत में जनवरी 2018 से दिसम्बर 2018 के बीच 436453 (चार लाख छत्तीस हजार चार सौ तिरपन) पूर्ण पाठ डाउनलोड करने के साथ चैथे सबसे ज्यादा डाउनलोड किए। कोक्रन पुस्तकालय की समीक्षाओं को swww.cochranelibrary.com और www.ermed.in पर देखा जा सकता है।

(ग) **ऑन लाइन पब्लिक एक्सेस कैटालॉग (ओपीएसी):**– भारतीय एनआईसी सरकार द्वारा समर्थित लाइब्रेरी में सर्वर और कंप्यूटर लैन के साथ जुड़े लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर पैकेज–ई ग्रंथालय के लिए नेटवर्क तैयार किए जाते हैं, लगभग 100,000किताबें और 2000पत्रिकाओं के शीर्षक अब ओपीएसी कंप्यूटर खोज के माध्यम से प्रयोगकर्ता को उपलब्ध हैं।

(घ) **दस्तावेज वितरण प्रणाली (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक):** सरकार के साथ–साथ निजी फोटोकॉपी काउंटर के

जरिए लेखों की फोटोकॉपी के लिए बड़ी संख्या में अनुरोध पर पोस्ट, ई–मेल और फैक्स द्वारा दिल्ली के बाहर से प्राप्त हुए। पूरे देश में मेडिकल रिसर्च विद्वानों को अनुसंधान सामग्री की 5,000(लगभग) फाटोकॉपी प्रदान की गई। दिल्ली के बाहर के लेखों के वितरण के लिए कोई डाक शुल्क नहीं लिया गया। लाइब्रेरी से पीरियॉडिकल्स के 4000 सेटों को बाइंडिंग कार्य के लिए बाइंडिंग कॉन्ट्रेक्टर को आउटसोर्स भी किया गया और इस अवधि के दौरान 8000 किताबें/पत्रिकाओं को कार्यरत स्टाफ द्वारा रिपेयर करवाया गया।

(ड.) **वर्तमान जागरूकता सेवा (सीएएस):** स्वास्थ्य विज्ञान में वर्तमान साहित्य (सीएलएचएस) एक वर्तमान सेवा है जिसे राष्ट्रीय चिकित्सा पुस्तकालय, डीजीएचएस द्वारा हर महीने संकलित किया है। यह नई चिकित्सा अनुसंधान और उन स्वास्थ्य विज्ञान पत्रिकाओं में नई तकनीकों से संबंधित लेखों का ग्रंथ सूची प्रदान करता है, जो एनएमएल द्वारा सदस्यता लेते हैं। सीएलएचएस स्वास्थ्य विज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप से व्यापक विषय शीर्षकों को शामिल करता है। (www-ermed-in)

(च) **अखबार क्लिपिंग सेवा:** उपयोगकर्ताओं को नवीनतम समाचारों की जानकारी देने के लिए, जो चिकित्सा विज्ञान की प्रासंगिकता रखी हैं। (.मतउमक.पद)

16.23.3 शाखा पुस्तकालय

नेशनल मेडिकल लाइब्रेरी, निर्माणभवन में एक शाखा पुस्तकालय का संचालन करती है, जो कि पढ़ने के उद्देश्य के लिए स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय व स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के कर्मचारियों और अधिकारियों की पुस्तकालय और सूचना की जरूरतों को पूरा करने के लिए है।

प्रकाशन:

- डॉ. के.पी.सिंह और निशा शर्मा, नेशनल मेडिकल लाइब्रेरी: एक प्रतिमान शिफ्ट पी 31–42।
- डॉ. के.पी.सिंह और प्रीति ईआरएमईडी कंसोर्टियम: एक अवलोकन पी 43–51।
- डॉ के.पी.सिंह और निशांत परवीन। पूर्वव्यापी रूपांतरण (एनएमएल : एक अवलोकन पी 152–167।

सम्मेलन:

(1) दो दिवसीय डिजिटल स्वास्थ्य भारत पर राष्ट्रीय सम्मेलन: एक वास्तविकता 3–4 मई, 2018 तक, राष्ट्रीय मेडिकल लाइब्रेरी। देशभर के सभी ईआरएमईडी सदस्यों सहित 200 प्रतिभागियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

3–4 मई 2018 को डिजिटल हेल्थ इंडिया पर राष्ट्रीय सम्मेलन: एक वास्तविकता

(2) 20, अगस्त, 2018 को पैन–इंडिया हेतु एनएमएल में कोक्रेन लाइब्रेरी के अपग्रेडेड वर्जन की शुरूआत की गई जिसमें भारत के 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पैन–इंडिया, के लिए कोक्रन लाइब्रेरी के उन्नत संस्करण का शुभारंभ, 20 अगस्त 18

16.24 ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र (आरएचटीसी), नजफगढ़

ग्रामीण स्वास्थ्य प्रशिक्षण केंद्र, नजफगढ़, नई दिल्ली की स्थापना डिस्पेंसरी व पैरा–मेडिकल स्टाफ की टीम के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या सेवाएं प्रदान करने के लिए 35 से अधिक गांवों में फैली हुई 44,000 की आबादी वाले लगभग 162 वर्ग मील के क्षेत्र को कवर करने के लिए नजफगढ़ में रॉकफेलर फाउंडेशन की वित्तीय सहायता व मार्गदर्शन के साथ वर्ष 1937 में स्वास्थ्य इकाई के रूप में की गयी थी।

वर्तमान में दक्षिण पश्चिमी दिल्ली में स्थित नजफगढ़ ब्लॉक की जनसंख्या 10. 5 लाख है। आरएचटीसी, नजफगढ़ के पास पंजीकृत जनसंख्या लगभग 500,000 है। आरएचटीसी, नजफगढ़, पालम, नजफगढ़, और उज्वा के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और 16 उप केन्द्र 73 गांवों को कवर करते हुए 432.6 कि.मी. के क्षेत्र में फैले हुए हैं।

भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 2018–19 के दौरान संस्थान के आवर्ती व्यय को पूरा करने के लिए 19.79 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता जारी की। 2018–19 में, 3,61,974 बाह्य रोगियों ने अस्पताल में जांच कराई और 75,720 रोगियों को विभिन्न बीमारियों और आपातकालीन स्थिति में भर्ती कराया गया। आरएचटीसी नजफगढ़ के प्रमुख कार्यकलाप निम्न प्रकार से हैं:

1. **प्रशिक्षण**
   - रोम स्कीम के तहत मेडिकल इंटर्न को प्रशिक्षण। लगभग 350 अनपेड मेडिकल इंटर्न ने इस केंद्र से ग्रामीण तैनाती पर गए।
   - एएनएम 10 + 2 (वोक.) छात्रों को प्रशिक्षण, प्रति शैक्षणिक सत्र में40 छात्रों की भर्ती क्षमता के साथ
   - कॉलेज ऑफ नर्सिंग, सफदरजंग अस्पताल, आरएमएल अस्पताल, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, होली फैमिली अस्पताल, बत्रा अस्पताल, अपोलो अस्पताल और विभिन्न अन्य सरकारी संस्थानों/ राज्य सरकार/ प्रा. संस्थानों जैसे विभिन्न नर्सिंग संस्थानों केबीएससी/एमएससी/जीएनएम छात्रों को सामुदायिक स्वास्थ्य नर्सिंग प्रशिक्षण। इस अवधि के दौरान लगभग 1000 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया गया।
   - नर्सिंग कार्मिक को प्रोत्साहन प्रशिक्षण।
   - एक दिवसीय अवलोकन दौरा
2. **स्वास्थ्य सेवा प्रदायगी:** नजफगढ़ क्षेत्र के गांवों व 9 शहर के कमजोर सामाजिक–आर्थिक समूह को पीएचसी नजफगढ़ में 24x7 आपातकालीन सेवाओं सहित प्राथमिक स्वास्थ्य परिचर्या, निवारक, प्रचारक व उपचारात्मक सेवाएं प्रदान करना।
3. **क्षेत्र अध्ययन:** स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, आरसीएच, पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और संचारी रोगों के क्षेत्रीय अध्ययन पहलुओं का संचालन करता है और साथ ही, एनआईएचएआई, एम्स आदि जैसे विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों के लिए अनुसंधान कार्य के लिए क्षेत्रीय सेवाएं भी प्रदान करता है।

आरएचटीसी, नजफगढ़ के विकास की प्रमुख विशेषताएं

- एएनएम अंतिम वर्ष के छात्रों का 100% प्लेसमेंट
- आरएचटीसी नजफगढ़ में प्रस्तावित 100 बिस्तर वाले अस्पताल के निर्माण कार्य की शुरूआत
- आरएचटीसी नजफगढ़ के वार्षिक खेल और वार्षिक दिवस को अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया

संस्थान में निम्नलिखित गतिविधियों का भी आयोजन/प्रदर्शन किया गया:

- **आरसीएच शिविर:** पीएचसी नजफगढ़ के तहत आरसीएच शिविर आयोजित किए गए। शिविरों के विशाल प्रचार के लिए, पैम्फलैट्स, बैनर प्रिंट किए गए व समाचार पत्रों के माध्यम से वितरित किए गए। आरसीएच नजफगढ़ द्वारा आरसीएच शिविरों में निम्नलिखित सेवाएं प्रदान की गईं: (i) जनरल ओपीडी (ii) टीकाकरण सहित प्रसवपूर्व परिचर्या (iii) पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों को प्रतिरक्षण परिवार नियोजन सेवा (iv) महिला जननांग पथ रोग (v) गर्भनिरोधक संबंधी परामर्श (vi) प्रयोगशाला जांच (vii) रोगियों को औषध/दवा वितरण (अपपप) दंत चिकित्सा, नेत्र विज्ञान और बाल चिकित्सा की विशेषज्ञ सेवाएं।
- ग्राम स्वास्थ्य पोषण दिवस: पीएचसी नजफगढ़ और पीएचसी उज्जवा के तहत भिन्न–भिन्न उप केंद्रों में ग्राम स्वास्थ्य पोषण दिवस का आयोजन किया गया। उप–केंद्रीय स्तर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सहायता से वीएचएनडीका आयोजन किया गया। वीएचएनडी में आरएचटीसीनजफगढ़ द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रमुख सेवाएं: (i) मातृ स्वास्थ्य जांच, (ii) 1 वर्ष तक के नवजात शिशु का चेक–अप, 1–3 वर्ष की आयु के बच्चे और 5 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों का चेक–अप (iii) परिवार नियोजन, आरटीआई/एसटीडी, (iv) स्वच्छता (v) संचारी रोग (vi) स्वास्थ्य संवर्धन (vii) पोषण निदर्शन–कुपोषण के कारण होने वाले रोग और इसके एहतियात (viii) स्वच्छता और सही प्रकार से खाना पकाने की आदत (ix) शिशुओं और बच्चों का वजन और (x) पोषण पूरक का महत्व। उपर्युक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए समुदायिक पौष्टिक खाद्य पदार्थों का प्रदर्शन भी किया गया। अब तक 21 वीएचएनडी शिविरों का आयोजन किया जा चुका है।

➢ **जननी सुरक्षा योजना:** जेएसवाई को पीएचसी नजफगढ़ में लागू किया गया है। सभी पात्र लाभार्थियों को 600/– रुपयेका भुगतान किया जाता है। 2016–17 में, 60 मामले, 2017–18 में, 62 मामले और 2018–19 में जेएसवाईके कुल 79 मामलों में सेवाएं प्रदान की गई।

➢ **वेल बेबी शो:** मनाए गए प्रतिरक्षण सप्ताह के दौरान पीएचसी नजफगढ़ में वेलबेबी शो आयोजित किया गया और बच्चों की प्रतिरक्षण, लम्बाई, वजन संबंधी जाँच की गई और उनके आईक्यू कोभी जांचा गया। शो का मुख्य उद्देश्य माता–पिता को प्रतिरक्षण और पोषणयुक्त भोजन के बारे में जानकारी देना था।

➢ **एचआईवी परामर्श कार्यशाला:** विगत वर्ष के दौरान एचआईवी परामर्श कार्यशाला आयोजित की गई। लगभग 250 मेडिकल पैरामेडिकल स्टाफ/प्रशिक्षु ने कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य पैरामेडिकल स्टाफ को जागरूक करना था।

16.25 लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल, दिल्ली

लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल, दिल्ली को 1918 में डीफिरिन फंड की काउंटेस के तहत एमसीसी के लिए नर्सिंग स्टाफ प्रशिक्षण के लिए स्थापित किया गया था। 7 दिसंबर, 2018 को शताब्दी समारोह मनाया गया। यह कार्यक्रम 1931 में भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी (मातृत्व और बाल कल्याण ब्यूरो) के प्रशासनिक नियंत्रण में था। 1952 में भारत सरकार ने स्कूल को अपने नियंत्रण में लिया और राम चंद लोहिया एमसीएच सेंटर को इसमें शामिल किया। पूरे भारत में स्कूल की 24 स्वास्थ्य विजिट प्रशिक्षुओं की क्षमता थी। कोर्स की अवधि उन मेट्रिकुलेट के लिए डेढ़ साल थी, जो अर्हता प्राप्त दाइयांथीं, जिन्हें 1954 में स्वास्थ्य अभ्यार्थी के लिए उन पात्र दाइयों के लिए ढ़ाई साल के एकीकृत पाठ्यक्रम में बदल दिया गया था।

स्कूल का उद्देश्य सामुदायिक स्वास्थ्य के साथ–साथ एम.सी. एच. की विभिन्न श्रेणियों में नर्सिंग पर्सनल में प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध करवाना था। राम चंद लोहिया एमसीएच

और परिवार कल्याण केंद्र के माध्यम से परिवार कल्याण सेवाएं निम्न हैं:

संस्थान वर्तमान में निम्नलिखित पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है:

(i) **सहायक नर्स–सह–मिडवाइफ कोर्स:** यह पाठयक्रम भारतीय नर्सिंग काउंसिल के अंतर्गत आता है और पाठ्यक्रम के लिए पात्रता मानदंड 12वीं पास है। 40 छात्रों ने अगस्त, 2017 में अपना प्रशिक्षण पूरा किया। 40 छात्रों को 2018–20 सत्र के लिए प्रवेश दिया गया है। छात्रों की कुल संख्या 78 है, अर्थात 2017–19 हेतु 38 और 2018–20 के लिए 40 छात्र प्रशिक्षण ले रहे हैं।

(ii) **बहु–उद्देशीय कामगार योजनाके तहत स्वास्थ्य कर्मियों (महिला) के लिए प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम:** यह पाठ्यक्रम छह महीने की अवधि का है। छात्रों को वर्ष में दो बार प्रवेश दिया जाता है अर्थात् जनवरी और जुलाई में। प्रत्येक बैच में 20 की प्रवेश क्षमता है। जुलाई, 2018 बैच के लिए 20 छात्रों का चयन किया गया और दिसंबर, 2018 में अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया। 20 उम्मीदवार वर्तमान में पाठ्यक्रम पूरा कर रहे हैं और दिसंबर, 2019 में अंतिम परीक्षा के लिए उपस्थित होंगे।

(iii) **पोस्ट बेसिक बीएससी (नर्सिंग):** इस संस्थान में पोस्ट बेसिक बीएससी (नर्सिंग) आयोजित करने के लिए मंत्रालय की प्रशासनिक मंजूरी प्राप्त कर ली गई है।

16.25.1 चिकित्सय अनुभव

छात्रों को ग्रामीण और शहरी स्वास्थ्य केंद्र में उनके चिकित्सकीय अनुभव के लिए सफदरजंग अस्पताल, आरएमएल हॉस्पिटल, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज और दिल्ली में कलावती सरन बच्चों के अस्पताल जैसे विभिन्न अस्पतालों में भेजा जाता है।

16.25.2 राम चंद लोहिया एमसीएच और परिवार कल्याण केंद्र

छात्रों को भी राम चंद लोहिया एमसीएच और परिवार कल्याण केंद्र के माध्यम से शहरी स्वास्थ्य अनुभव के लिए तैनात किया जाता है। यह केंद्र 40,000 से अधिक आबादी को एकीकृत एमसीएच परिवार कल्याण सेवाएं प्रदान करता है। साप्ताहिक क्लीनिक द्वारा प्रसवपूर्व की देखभाल, प्रसवोत्तर देखभाल, अच्छी तरह से बच्चा प्रतिरक्षण और परिवार नियोजन क्लीनिक जैसी सेवाएं भी प्रदान की जाती हैं, जो छात्रों द्वारा समुदाय को दी जाती हैं। छात्रों और कर्मचारियों के माध्यम से एमसीएच केंद्र द्वारा समुदाय में प्रदर्शनी और स्वास्थ्य शिक्षा भी आयोजित की जाती है।

16.25.3 अन्य गतिविधियां

समुदाय के साथ–साथ स्कूल, केंद्रों में स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया जाता है:

- **पल्स पोलियो कार्यक्रम**– दिल्ली, पर्फेक्ट हेल्थ मेला आदि में सभी पल्स पोलियों कार्यक्रमों में छात्र व स्टाफ प्रतिभागिता करते हैं।
- **एसएनए गतिविधियां**– एक्ट्रा केरक्यूलर गतिविधियों के रूप में एलआरएचएस में नियमित एसएनए गतिविधियां आयोजित की गई।

16.25.4 बजट

वर्ष 2018–19 हेतु 4,73,0000 (चार करोड़ तिहत्तर लाख रुपए केवल) रुपए संस्थान और स्टाफ कल्याण हेतु कुल बजट है।

16.26 एचएलएल लाइफ केयर लिमिटेड (एलएलएल)

परिचय

पीएसयू एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड (एचएलएल) ने 1966 से एमओएचएफडब्ल्यू के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत तिरुवनंतपुरम जिले के पीरूरेका में मैसर्स ओकामाटो इंडस्ट्रीज इंक जापान के साथ तकनीकी सहयोग से 05 अप्रैल 1969 को कार्य शुरू किया था। आज सात उत्पादन संयंत्रों के साथ, एचएलएल एक बहु–उत्पाद, बहु–इकाई संगठन के रूप में विकसित हो गया है जो विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों को पूरा करता है।

एचएलएल एक मिनी रत्न, अनुसूची बी, केंद्रीय लोक क्षेत्र उद्यम है। एचएलएल दुनिया की एकमात्र ऐसी कंपनी है जो इस तरह की एक विस्तृत श्रेणी के गर्भ निरोधकों का निर्माण

करती है। आज, एचएलएल में सालाना 1.9 अरब कंडोम बनाने की क्षमता है, जो विश्व के प्रमुख कंडोम निर्माताओं में से एक है। यह वैश्विक उत्पादन क्षमता का करीब 10 प्रतिशत है। देश की स्वास्थ्य परिचर्या आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नवप्रवर्तन उत्पाद सेवा और सामाजिक कार्यक्रमों की विस्तृत सारणी के साथ एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड ने "स्वास्थ्य पीढ़ी नवप्रवर्तन" के उद्देश्य के साथ कार्यरत है।

16.26.1 वित्तीय परिणाम 2016–17

31 मार्च 2017 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष के लिए कम्पनी का वित्तीय निष्पादन इस प्रकार है:

(रू लाख में)

वित्तीय विवरण	पृथक		समेकित	
	2017-18	**2016-17**	**2017-18**	**2016-17**
प्रचालन से आय	1,07,538.27	1,05,434.98	1,21,754.07	1,16,086.77
अन्य आय	1,316.49	1,035.73	557.68	1,190.29
कुल आय	1,08,854.76	1,06,470.71	1,22,311.75	1,17,277.06
कर पूर्व लाभ/हानि	(6,486.94)	(4,059.51)	(8,770.08)	(3,144.70)
कर व्यय	471.40	(1,521.31)	1,767.17	(927.93)
वर्ष के लिए लाभ/ (हानि)	(6,958.34)	(2,538.21)	(10,537.25)	(2,216.77)

16.26.2 भौतिक कार्यनिष्पादन: 2017–18

एलएलएल की उत्पाद गतिविधियों की समीक्षा का विवरण नीचे दिया गया है:

क्र. सं.	उत्पाद	इकाई	स्थापित क्षमता	उत्पादित मात्रा द्धपिछला वर्षऋ	उपयोगिता क्षमता (%)
1	कंडोम	मिलियन	1876.00	1846.52 (1846.63)	98%
2	ब्लड बैग	मिलियन	12.50	7.39 (9.26)	59%
3	टांके	लाख डोज़	6.00	1.31 (2.03)	22 %
4	कॉपर–टी	मिलियन	5.50	2.38 (3.70)	43%
5	स्टेरॉइडल ओसीपी	मिलियन चक्र	96.80	43.78 (34.91)	45%
6	नॉन–स्टेरॉइडल ओसीपी (सहेली)	मिलियन गोलियां	30.00	41.37 (32.96)	138%
7	सेनेटरी नैपकिन	मिलियन	392.00	251.93 (276.32)	64%
8	गर्भ जांच कार्ड	मिलियन	26.00	12.55 (12.55)	48%

16.26.3 मुख्य विपणन पहल और उपलब्धियां

वर्ष 2017–18 के दौरान कंपनी की महत्वपूर्ण विपणन पहल और उपलब्धियां नीचे वर्णित हैं:

- सुगंध और पैकेजिंग की नई युवा श्रृंखला में मूडस डियोड्रेंट व का पुनःआरंभ जिनकी 2.56 करोड़ की बिक्री हुई।
- मूडस ने ऑनलाइन फार्मेसी–नेटमेडस.कॉम और अग्रणी ऑनलाइन ग्रोसरी स्टोर–ग्रोफर्स आरंभ किया था।
- अग्रणी संगठित फुटकर श्रृंखला जैसे डब्ल्यूएच स्मीथ, बीग बाजार, रिलाइंस रिटेल में मूडस कंडोम, पर्सनल ल्यूब्रिकेट और वेल्वट का प्रवेश।
- उपभोक्ताओं हेतु प्रदानगी बढ़ाने के लिए हेप्पीडेज़ सेनेट्री नैपकिंग– एक्ट्रालाज और अल्ट्रा के नए प्रकारों का शुभारंभ।
- स्टेनली अस्पताल चैन्ने और जी कुप्पीस्वामी नाइडू अस्पताल और आईएमए कानपुर में रक्त बैंकों ग्लोसाइन बोर्ड कॉ–बार्डिंग।
- नोसोकोमिनल संक्रमण के बारे में रोगियों में जागरूकता निर्माण हेतु हाथ की स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया था।
- स्तनपान और सिजेरियन के पश्चात क्या करें क्या न करें जैसे विषयों पर जागरूकता निर्माण हेतु रोगी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए थे।
- जनवरी, 2018 को भुवनेश्वर में 61वें एआईसीओजी में प्रतिभागिता।
- नया व्यापार–सीजीएचएस हेतु औषध खरीद व आपूर्ति।
- 4जी छूट के तहत न्यूनतम आधार पर आयुष उत्पादों की आपूर्ति कर्नाटक राज्य (कर्नाटक राज्य औषध और लोजिस्टिक) में प्रवेश और 5 करोड़ रुपए के आदेश प्राप्त।
- 17–18 में सेनिटरी नेपकिंग की आपूर्ति हेतु एनसीटी दिल्ली (शिक्षा विभाग) में नया प्रवेश।
- 22 राज्यों में 128 स्पेनिंग हेतु अमृत के कुल काऊंट लेते हुए 45 नई अमृत फार्मेसी की स्थापना।
- 31 मार्च, 2018 के अनुसार अमृत ने 62.85 लाख रोगियों को सेवा दी जिन्होंने 325.19 करोड़ रुपए की बचत का लाभ प्राप्त किया।
- खरीद हेतु विदेश मंत्रालय से 37 करोड़ के आदेश प्राप्त किए और सफलतापूर्वक पूरे किए गए तथा सीरिया, येमन, मोजोब्रिक, तनजानिया, सोमालिया, मेडागास्कर व स्विजरलैंड हेतु को औषध आपूर्ति की गई।
- हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉपोरेशन लि. (एचपीसीएल) और हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (एचजेडएल) के सीएसआर पहल के तहत देशभर के स्कूलों, कॉलेजों और अन्य सार्वजनिक स्थानों में 350 सेनेटरी नेपकिन मशीनों व इंसीनेटरों को इंस्टॉल करने के लिए विभिन्न परियोजनाओं को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया।
- जनजातीय कल्याण विभाग, मध्य प्रदेश के सहयोग से जनजातीय कन्या छात्रावास में 400 सेनेटरी नेपकिन वेडिंग मशीनें इस्टॉल की गई।
- केवल राज्य महिला विकास कॉपरेशन (केएसडब्ल्यूडीसी) के सहयोग में शी पेड परियोजना के भाग के 600 सेनेटरी नेपकिन इंसिनेरेटर इंस्टॉल और सेनेटरी नेपकिन की आपूर्ति की गई।

16.26.4 सहायक और संयुक्त उद्यम

31 मार्च 2019 तक एचएलएल के पास पांच सहायक कंपनियां और एक संयुक्त उद्यम कंपनी है। सहायक और संयुक्त उद्यम कंपनियों के प्रदर्शन का सारांश नीचे दिया गया है:

क) एचएलएल बायोटेक लिमिटेड, एचबीएल

एचएलएल बायोटेक लिमिटेड (एचबीएल), एक पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है जो 12 मार्च 2017 को अपने निगमन का पांचवां वर्ष पूरा कर चुकी है। कंपनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 285 करोड़ रुपए है। पिछले वर्ष की इसी अवधि और 31 मार्च 2017 को जारी किए गए, सब्सक्राइब्ड और इक्विटी

शेयर पेड अप कैपिटल 274.89 करोड़ रुपए है। एचबीसी ने लेबलिंग और पेकेजिंग संचालनों के तहत विनिर्माता के रूप में एलपीवी और हपेटाइटिस बी उत्पादों के लिए दिनांक 5 फरवरी, 2018 को विनिर्माण लाइसेंस प्राप्त कर लिया है।

एचबीसी ने एलपीवी (डिपथेरिया, टेटनस, पेस्टूसिस (संपूर्ण सेल) हेपेटाइटिस–बी (आरडीएनए) और हेमोफिलस इंफ्लूएंजा टाइप–बी कॉजिगेट वेक्सीन) हेतु आरटीएफ बल्क हेतु सफलातपूवर्तक जांच लाइसेंस प्राप्त किया है। एचबीएल ने लिक्विड पेटावेलेंट वेक्सीन (पेटाहिल) और हेपेटाइटिस–बी (एचआईवी एसी–बी) हेतु तमिलनाडु व केरल में अपना नेटवर्क स्थापित किया है। मार्केटिंग टीम ने सुविधाजनक एचबीएल को सुव्यवस्थित अस्पतालों में परिवर्तित किया है जैसे सीएमसी, वेल्लोर, स्टेडफोर्ड, बी वेल, अमृता और इक्रा मल्टीस्पेशियलटी अस्पताल कालीकट।

गुणवत्ता संचालनों/गुणवत्ता आश्वासन पर एचबीएल सभी संचालन विभागों में उच्च स्तरीय नीति दस्तावेजों और मानक संचालन प्रक्रियाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से "गुणवत्तापरक प्रबंधन प्रणाली" विकसित और स्थापित की है।

वर्ष के दौरान एचबीएल ने आने वाले सभी कच्चे माल, पेकिंग सामग्री, इंटर मीडिएट उत्पाद व अंतिम उत्पादों के लिए जांच करने हेतु अनुभवी व प्रशिक्षित कार्मिकों वाली योग्य प्रयोग उपकरणों सहित सुसज्जित स्वतंत्र गुणवत्ता नियंत्रण यूनिट भी स्थापित की गई।

रेबिज बल्क और बीसीजी जैसे विनिर्माण ब्लॉकों के सुविधा वैध्यकरण व तत्परता को पूरा किया जाना अपेक्षित है। जेई टीका डेब्लेप्मेंट फ्रंट पर प्रतिरक्षण अध्ययन पूरा किया जाएगा और पूर्व–नैदानिक ट्रायल समग्री के साथ तैयार किया जाएगा।

ख) गोवा एंटीबायोटिक्स एंड फार्मास्युटिकल्स लिमिटेड, (जीएपीएल)

31 मार्च 2018 को जीएपीएल की अधिकृत और पेड अप शेयर पूंजी क्रमशः 25 करोड़ रुपये है और 19.02 करोड़ रुपए है। जीएपीएल में एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड (होल्डिंग कंपनी) की शेयरधारिता 74% है और शेष 26% ईडीसी लिमिटेड द्वारा धारित है।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, पिछले वर्ष की तुलना में परिचालन से राजस्व 28% तक कम हो गया है। विगत साल के मुकाबले कंपनी का शुद्ध लाभ 85% तक कम रहा।

पूर्णतः स्व–संचालित टेबलेट विनिर्माण सुविधा केंद्र

जीएपीएल ने टेबलेट के विनिर्माण हेतु डब्ल्यूएचओ जीएमपी प्रमाणन के साथ पूर्णतः स्व–संचालित टेबलेट विनिर्माण सुविधा केंद्र की स्थापना हेतु प्रस्ताव किया है। नई टेबलेट विनिर्माणी पंक्ति के अनुमानित क्षमता प्रतिवर्ष 300 मिलियन टेबलेट हो सकती है। यह केंद्र कम समय में कार्यात्मक आवश्यकता सहित संस्थागत उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। इस योजना हेतु अनुमानित निवेश 8.34 करोड़ रुपए तथा वर्ष 2020–21 हेतु वार्षिक टर्नओवर 19.37 करोड़ रुपए है।

सेफेलोस्पोरिन परियोजना 2020–21

जीएपीएल ने उत्पादन क्षमता व उत्पाद श्रृंखला को बढ़ाने के लिए टेबलेट व कैप्सूल की श्रेणी में सूत्रीकरण विनिर्माण सुविधा केंद्र की अत्याधुनिक सेफेलोस्पोरिन श्रृंखला स्थापित करने की योजना बनाई है। इसके अलावा, डब्ल्यूएचओ जीएमपी अनुपालन में केंद्र में नई डीपीपी लाइन शामिल की जाएगी क्योंकि मौजूदा सुविधा अप्रचालित है।

विनियमित बाजार के साथ–साथ गैर–विनियमित बाजार के लिए सूत्रीकरण विशेषज्ञों की संभावना तलाश करने की इच्छा के साथ वर्तमान जीएमपी अनुपालन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नया सुविधा केंद्र तैयार किया जाएगा।

इस सुविधा केंद्र हेतु निवेश लगभग 38 करोड़ रुपए होगा तथा वर्ष 2021–22 में अनुमानित 12.76 करोड़ रुपए के राजस्व सहित 1 करोड़ 82 लाख टेबलेट व 70 लाख कैप्सूल का उत्पादन पहले वर्ष में योजनागत है।

मौजूदा सुविधा केंद्र का उन्नय

जीएपीएल ने वर्तमान विनियामक अनुपालनों को पूरा करने तथा इन–हाऊस नमूना जांच क्षमताओं को मजबूत बनाने गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला का उन्नयन करने की योजना बनाई है।

वर्तमान पीएमजी दिशा–निर्देशों को पूरा करने और सिफ्ट उत्पादन को बढ़ाने के लिए चरणवार रूप में ऐलोपेथिक

विनिर्माण सुविधा केंद्रों में पूरानी मशीनों को बदलने की योजना है।

ग) एचएलएल इंफ्रा टेक सर्विसेज लिमिटेड, (एचआईटीईएस)

एचआईटीईएस को 3 अप्रैल 2014 को एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड की एक पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में शामिल किया गया था जिसका उददेश्य व्यवसाय, बुनियादी ढांचे के विकास, सुविधाओं के प्रबंधन, खरीद सम्बन्धी परामर्श और संबद्ध सेवाओं को चलाने के लिए इन क्षेत्रों में व्यापार के विशाल दायरे का पता लगाना था।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान हिट्स ने समीक्षा अवधि के दौरान कई माइलस्टोन और नई ऊचाइयों के पाने के अलावा टर्नओवर तथा लाभ में वृद्धि प्राप्त की है। पिछले वर्ष के 36.55 करोड़ रुपए के टर्नओवर की तुलना में कंपनी ने 86.32 करोड़ रुपए टर्नओवर प्राप्त किया है साथ ही पिछले वर्ष के 4.08 करोड़ रुपए के लाभ की तुलना में लाभ भी 11.25 करोड़ रुपए तक बढ़ा है।

आधुनिक युग में स्वास्थ्य परिचर्या क्षेत्र का विस्तार प्रेरक सफलता कहानियों में से एक है। स्वास्थ्य परिचर्या क्षेत्र का विकास राष्ट्र निर्माण में मुख्य भूमिका निभाता है। इस लाभ उठाते हुए हिट्स ने व्यापार विकास में अवसरों का उपयोग किया है और महत्वपूर्ण सुधार दर्शाया है।

हिट्स ने निजी क्षेत्र क्लाइंट को सेवा देना भी आरंभ किया है। हिट्स ने त्रिवनंतपुरम में उनकी सुविधाओं के विस्तार हेतु कोस्मोपोलिटन अस्पताल के साथ करार और टेक्नो ग्लोबल लिमिटेड कोलकाता के साथ समझौता ज्ञापन किया है जिसके तहत हिट्स टेक्नो इंडिया विश्वविद्यालय के परिसर आधार मेडिकल कॉलेज नर्सिंग कॉलेज व पेरा मेडिकल कॉलेज स्थापित करने के लिए परामर्श सहायता प्रदान करेगा।

हिट्स ने संयुक्त रूप से स्वास्थ्य परिचर्या परियोजना के कार्यान्वयन हेतु कार्यनीति संधि हेतु मेसर्स किटको लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन किया है। हिट्स ने चिकित्सा उपकरण के विशेषीकरण हेतु ऑनलाइन पोर्टल विकसित किया है जहां क्लाइंट ऑनलाइन चिकित्सा उपकरण विशिष्टता तक पहुँच सके। वर्ष के दौरान हिट्स को रिपब्लिक ऑफ सेइचेलेस हेतु चिकित्सा अस्पताल की खरीद चरण–II प्रदान किया गया है।

घ) एचएलएल मेडिपार्क लिमिटेड (एचएमएल)

20 दिसंबर, 2016 को, एचएलएल ने एचएलएल मेडिपार्क लिमिटेड, एचएमएल, नामक एक 100 प्रतिशत सहायक कंपनी का गठन किया। इसका उद्देश्य चेंगलपट्टु, तमिलनाडु में 330 एकड़ भूमि पर ज्ञान और पर्यावरण प्रबंधन इन्फ्रास्ट्रक्चर के साथ मेडिकल डिवाइस और उपकरण का निर्माण करना था। मेडिपार्क परियोजना एक एकीकृत इकोसिस्टम के माध्यम से उत्पादन इकाइंयों के लिए एक 'वन स्टॉप सुविधा' होगी ताकि बिजनेस, अनुमोदन में सहायता की जा सके, नई खोजों को प्रोत्साहित किया जा सके और नई तकनीकों, प्रोटोटाइपिंग गतिविधियों को विकास किया जा सके तथा कार्यकलापों का व्यावसायीकरण किया जा सके और देश में इस क्षेत्र का हब बनाया जा सके। यह परियोजना आयातों पर निर्भरता को कम करते हुए और देशी और घरेलू उद्योग के विकास लिए एक मजबूत आधार तैयार करके सरकार के मेक इन इंडिया अभियान को भी आगे बढाएगा, जिसके लिए यह आधुनिकतम इन्फ्रास्ट्रक्चर और तकनीकी का प्रयोग करेगा।

मेडिपार्क परियोजना से क्षेत्र में निर्माताओं को आकर्षित करने की क्षमता की उम्मीद की जाती है। देश में निवेश को बढ़ावा देने और सस्ते चिकित्सा उपकरणों को उपलब्ध कराने के अलावा, यह एक किफायती स्वास्थ्य देखभाल वितरण प्रणाली को बढ़ावा देगा और रोजगार के अवसर भी बढ़ाएगा।

निर्माण गतिविधियों को शुरू करने के लिए वैधानिक अनुमोदन प्राप्त किया और वित्तीय समापन अंतिम चरण में परियोजना की एसबीआई फंडिंग 74 करोड़ रुपए है।

31 मार्च, 2018 के अनुसार एचएमएल की अधिकृत और पेड–अप शेयर पूंजी क्रमशः 50 लाख रुपए और 10.01 लाख रुपए है। अधिकृत शेयर पूंजी को बढ़ाकर 13.00 करोड़ कर दिया गया, जिससे कंपनी को परियोजना निवेश के लिए इक्विटी पूंजी जुटाने की सुविधा मिल सके।

वाणिज्य विभाग, भारत सरकार ने इएमआई/ईएमसी

प्रयोगशाला के लिए 9.56 करोड़ के अनुदान सहायता के लिए स्वीकृति प्रदान की, जो ज्ञान प्रबंधन बुनियादी ढांचे का हिस्सा है और यह मेडिपार्क का एक महत्वपूर्ण अंतर लाने वाला होगा।

ड.) एचएलएल मदर एंड चाइल्ड केयर अस्पताल लिमिटेड (एचएमसीसीएचएल)

दिसंबर 2016 में, उत्तर प्रदेश सरकार के महानिदेशक (चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवाएं) ने उत्तर प्रदेश के 20 जिला अस्पतालों (परियोजना) में 100 बिस्तर वाले मदर एंड चाइल्ड हॉस्पिटल (एमसीएच) विंग के परिचालन के प्रस्तावों के लिए एक निविदा अधिसूचना जारी की थी। परियोजना को इएफओएमटी (उपकरण, निवेश संचलन, रखरखाव व स्थानांतरण) के आधार पर निष्पादित किया जाना है, जिसमें सफल बोली लगाने वाले को 10 वर्षों की अवधि के लिए जिला अस्पतालों के एमसीएच विंग का वित्त पोषण, उपकरण प्रदान कराना और संचालन करना है।

एसपीवी के तहत परिकल्पित 20 अस्पतालों में से एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड (एचएलएल)/एचएलएल द्वारा गठित विशेष प्रयोजन वाहन द्वारा प्रबंधित किए जाने वाले 13 श्रेणी ए और 7 श्रेणी बी अस्पताल हैं। श्रेणी ए अस्पतालों में सामान्य प्रसव, जटिल प्रसव और नवजात परिचर्या की सुविधा सहित मातृ और बाल स्वास्थ्य सेवाओं की पूरी श्रृंखला प्रदान करनी होगी। श्रेणी बी अस्पतालों को केवल जटिल प्रसव से संबंधित सेवाएं प्रदान करनी होगी। श्रेणी बी केंद्रों में डीएच द्वारा बेसिक/सामन्य प्रसव के मामलों में भाग लेगा। करार पर हस्ताक्षर करने के बाद से परियोजना निष्पादन के लिए निर्धारित समय–रेखा 270 दिनों की है।

तदनुसार, एचएलएल मदर एंड चाइल्ड केयर हॉस्पिटल लिमिटेड को 1 अगस्त, 2017 को एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में शामिल किया गया था। वित्तीय वर्ष 2017–18 एचएलएल मदर एंड चाइल्ड केयर हॉस्पिटल्स लिमिटेड (एचएमसीसीएचएल) के लिए पहला वित्तीय वर्ष है।

च) लाइफस्प्रिंग अस्पताल (पी) लिमिटेड (एलएसएच)

लाइफस्प्रिंग लगभग 10 वर्षों से अस्तित्व में है। इन अवधि के दौरान लाइफस्प्रिंग ने निम्न–आय जनसंख्या समूह के लिए सस्ती दरों पर उच्च गुणवत्ता वाले मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य परिचर्या प्रदान करने के लिए एक अनूठा मॉडल विकसित किया है, जो उपयुक्त होने के नाते एक सामाजिक उद्देश्य को पूरा करता है।

एलएसएच द्वारा की गई पहल इस प्रकार है:

- आउटरीच को मजबूत करना और सामुदायिक विस्तार केंद्र (सीईसी) को समेकित करना। अब, दस (10) सीईसी है।
- एएनसी जांच में मात्रा केपचर करने पर फोकस। "प्रसवपूर्व महिला प्रतिशत को प्रसव में बढ़ना" के मेट्रिक को बाहर करना और "माह में आयोजित कुल विशिष्ट महिला के संख्या" को अपनाना।
- महिलाओं को नॉन–डिलीवरी इन–पेशेंट सेवाओं पर फोकस बढ़ाना। इस उपाय में अस्पताल में धारिता बढ़ाने, प्रसूति से जुड़े जौखिम को कम करने वाले जनरल सर्जनों को व्यस्त करने की क्षमता है और राजस्व में समग्र बढ़ौतरी में भी योगदान बढ़ाने की संभावना है।
- नवजात पीलिया वाले शिशुओं के लिए दोहरी सतह फोटोथेरेपी सेवा प्रदान करके नवजात परिचर्या में सेवा प्रदानगी बढ़ाना।
- ग्राहकों के लिए एक वित्त योजना आंरभ करना, जो अपनी सेवाओं के लिए कंपनी की कीमतें वहन नहीं कर सकते हैं और किश्तों में भुगतान करने के लिए तैयार हैं। कंपनी ने बजाज फिनसर्व के साथ संधि की है ताकि ग्राहकों को वित्त सुविधा का लाभ मिल सके।
- इसके अलावा, बाद में अपनी सेवाओं का विस्तार करने और आर्थिक खंड के अगले स्तर की सेवा के लिए खुद को तैयार करने के लिए, एलएसएच ने निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करने के लिए अन्य एजेंसियों के साथ भागीदारी की है:
- आईयूआई तक बांझपन उपचार।
- स्टेम सेल बैंकिंग।
- एलएसएच ने गर्भधारण पूर्व व प्रसवपूर्व निदान तकनीकी अधिनियम 1994 के अनुपालन से जुड़ी कम लागत और जोखिम हेतु अस्पतालों में अल्ट्रासाउंड मशीन और रेडियोलॉजिस्ट सेवाएं प्रदान करने के लिए आकर्षक भागीदारों की रणनीति को भी जारी

रखा। नई मशीनों को अलवाल और कुकटपल्ली में स्थापित किया गया है। इससे न केवल ग्राहकों की संतुष्टि में सुधार हुआ है, बल्कि यूएसजी से राजस्व में भी वृद्धि हुई।

- उपर्युक्त पहलों से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं:
- प्रसव की संख्या में गिरावट के बावजूद कंपनी के मासिक राजस्व को बनाए रखना या बढ़ाना।
- प्रतिमाह गर्भवती महिलाओं की सेवाओं की कुल संख्या को स्थिर करना और बढ़ाना।
- इन पहलों की मदद से, एलएसएच ने 46.37 लाख रुपए के कर लाभ के साथ वित्तीय वर्ष पूरा किया।
- कुल मिलाकर, एलएसएच ने फरवरी, 2008 में परिकल्पना के बाद से 53,539 महिलाओं को शिशुओं के प्रसव कराने में मदद की।